4 mRrjnkrkvk dh lkekftd lajpuk

समाजशास्त्रीय अध्ययन की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता अध्ययन से सम्बन्धित उत्तरदाताओं की सामाजिक संरचना से सम्बन्धित विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करना है। समाजशास्त्रीय अध्ययन सामाजिक सांस्कृतिक प्रक्रियाओं, मनोवृत्तियों और व्यवहार के प्रतिमान के सन्दर्भ मे जो प्राथमिक तथ्य प्राप्त होते हैं, उसका विश्लेषण तभी भली भांति किया जा सकता है जब अध्ययन में उत्तरदाताओं की सामान्य विशेषताओं का भली भांति ज्ञान हो। व्यक्ति की सामाजिक पृष्ठिभूमि, उसके दृष्टिकोणों और मनोभावों पर प्रभाव डालता है। लिंग आयु सम्बन्धी विभिन्नता, वर्गीय स्थिति में अन्तर शैक्षणिक उपलब्धि मे पायी जाने वाली विभिन्नता व्यक्ति की मनोवृत्ति और दृष्टिकोणों को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करती है। अतः सामाजिक संरचना का अध्ययन एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। भारतीय समाजों में तीसरी महत्वपूर्ण लघु संरचना ग्रामीण समुदाय है। भारतीय ग्रामीण समुदायों पर आरम्भिक साहित्य जैसे–''मेने बैडेन, पॉवल कार्लमार्क्स, आल्टेकर, राधाकमल मुखर्जी आदि का भारत के गॉवो के लिए एक अर्द्धस्वायत्त या स्वतन्त्र संरचनात्मक महत्व ग्रहण कर लेना है। सी.टी. मेटकॉफ का यह कथन है कि ग्रामीण समुदाय लघु गणतन्त्र हैं। जिनमें लगभग वह सभी कुछ है जिसे वे अपने बीच चाहते हैं और लगभग किसी भी प्रकार के बाहरी सम्बन्धों से स्वतन्त्र हैं। राष्ट्रीय नेताओं विशेषतः महात्मागांधी ने भारतीय समाज की अधि–संरचना की आरम्भिक सावयवी इकाई के रूप में आत्मनिर्भर नैतिक और आर्थिक रूप से एकीकृत ग्रामीण समुदाय की विचार धारा सम्पुष्ट किया। इस प्रकार लघु संरचना के रूप में ग्रामीण क्षेत्रों को न केवल मान्यता मिली अपितु क्रमिक रूप से यह राष्ट्रीय विकास नियोजन तथा राजनैतिक सांस्कृतिक चेतना का एक आवश्यक पक्ष बन कर उभरा। वृहद संरचनात्मक आधुनिकीकरण परिवर्तन का आशय ग्रामीण व नगरीय समाजों की सामाजिक संरचना मे कुछ विशिष्ट स्वरूपों में परिवर्तन से है। सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्थाओ में ये परिवर्तन आधुनिकीकरण के सहवर्ती मापदण्डों पर आधारित नई भूमिकाओं तथा समूह संरचनाओं के विकास एवं संस्थायीकरण मे योगदान देती हैं। यह प्रक्रिया संचयी रूप से समाज के संरचनात्मक आधुनिकीकरण का कारण बनती है। तथापि सामाजिक संरचना मे परिवर्तन के अनेक स्वरूप इस प्रक्रिया से बाहर रहते हैं। उदाहरणार्थ – मृत्यु, जन्म, विवाह के कारण परिवार संरचना मे परिवर्तन युद्ध अथवा महामारी के कारण वृहद स्तरीय प्रवास राजनैतिक शक्ति तथा व्यापार मार्गों मे परिवर्तन के कारण ग्रामीण तथा नगरीय समाजों मे इस प्रकार के संरचनात्मक परिवर्तन अनन्त काल से चले आ रहे हैं। सामाजिक संरचना और सामाजिक गतिशीलता परिवर्तन और मानवीय व्यवहार मे अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं के आयु, शिक्षा, जाति व्यवसाय तथा आय से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

4-1 % mRrjnkrkvk dh vk;q

आयु सामाजिक स्थिति का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। व्यक्ति की आयु उसके शारीरिक और मानसिक परिपक्वता तथा सामाजिक अनुभव को ही नही सूचित करती अपितु इसके द्वारा उसकी विशिष्ट सामाजिक स्थिति, सम्मान, शक्ति सुविधा और प्रभाव का भी निर्धारण होता है। परम्परागत समाजों में आयु के आधार पर सामाजिक स्थिति का विभेदीकरण अत्याधिक कठोरता के साथ किया जाता रहा है। आदिम और परम्परागत समाजों में वृद्ध व्यक्ति को सर्वाधिक सम्मान दिया जाता रहा है। पारिवारिक सामाजिक और आर्थिक जीवन का प्रत्येक पक्ष इन्ही बृद्ध और अनुभवी व्यक्तियो के हाथ में रहा है। परम्परागत भारतीय ग्रामीण समाज में भी वृद्ध व्यक्ति का ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। संयुक्त परिवार व्यवस्था और ग्राम पंचायत, ग्रामीण सामाजिक संरचना के तीन महत्वपूर्ण आधार रहे हैं। उन तीनों ही संस्याओं में वृद्ध और अनुभवी व्यक्ति को श्रेष्ठ स्थान प्राप्त रहा है। यद्यपि आधुनिक भारतीय समाज में सामाजिक स्थिति के अन्य निर्धारकों ने अपेक्षाकृत अधिक महत्व प्राप्त कर लिया है। तथापि सामाजिक संरचना में आयु का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। व्यक्ति की आयु उसके सामाजिक अनुभव योग्यता, कुशलता, शक्ति और प्रभाव को प्रतिविम्बित करती है।

वर्तमान अध्ययन में आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण तीन वर्गों में किया गया है। प्रथम युवा आयु समूह, इसके अर्न्तगत ऐसे व्यक्तियों का संग्रह किया गया है जिनकी आयु 20 वर्ष से लेकर 35 वर्ष के अन्तर्गत है। ये उत्तरदाता युवा पीढ़ी के सदस्य हैं। आयु के अनुरूप इन उत्तरदाताओं में अपेक्षाकृत अधिक शक्ति, साहस और स्फूर्ति की आकांक्षा की जाती है। इस आयु समूह के सदस्य अपने पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों को वहन करने के प्रारम्भिक चरण में हैं। क्योंकि इन्होने जीवन की वास्तविकताओं के साथ अभी प्रारम्भिक परिचय ही प्राप्त किया है। द्वितीय– मध्यम आयु समूह, इस आयु समूह के अर्न्तगत 36 वर्ष से लेकर 50 वर्ष तक के उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है। ये उत्तरदाता शारीरिक और मानसिक परिपक्वता प्राप्त कर चुके है तथा युवा पीढ़ी की तुलना में इनका सामाजिक अनुभव तथा उत्तदायित्व की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक है। तृतीय– वृद्ध आयु समूह–इस आयु समूह के अर्न्तगत 51 वर्ष से अधिक के उत्तरदाता सम्मिलित किये गये हैं ये वृद्ध पीढ़ी के सदस्य हैं। शारीरिक दृष्टि से इनमें शक्ति और स्फूर्ति का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है। परन्तु सामाजिक अनुभव और मानसिक परिपक्वता की दृष्टि से इस पीढ़ी के सदस्यों का स्थान अत्यन्त उच्च है। जीवन का सुःखद और दुःखद परिस्थितियों को झेलकर तथा अपने विभिन्न व्यक्तिगत पारिवारिक और समुदायिक उत्तरदायित्वों को वहन करके इस पीढ़ी के सदस्यों ने जो अनुभव और ज्ञान प्राप्त किया है। वही इस पीढ़ी के सदस्यों की विशिष्ट पूंजी है।

आयु का उक्त विभाजन समाजशास्त्रीय अध्ययन के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। युवा, मध्यम और वृद्ध आयु समूह के सदस्य तीन पृथक मनोवृत्तियों दृष्टिकोणों और व्यवहार प्रतिमानों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः इन तीन आयु समूहों के दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन कालक्रम के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तनशील मनोवृत्तियों के अध्ययन के लिए अत्यन्त उपयोगी है। समाजशास्त्रीय अध्ययन की एक प्रमुख त्रुटि घटनाओं का ऐतिहासिक क्रम में अध्ययन न किया जाना है। आयु के आधार पर किया जाने वाला अध्ययन कुछ सीमा तक इस त्रुटि का निराकरण करता है। युवा और वृद्ध पीढ़ी के तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा समय क्रम में होने वाले परिवर्तनों का पता लगाया जा सकता है। वर्तमान अध्ययन में अधिकांशतः उत्तरदाता युवा आयु समूह के सदस्य हैं। अध्ययन में सम्मिलित 53.5 प्रतिशत उत्तरदाता 20–35 वर्ष आयु समूह 22.6 प्रतिशत उत्तरदाता 36–50 वर्ष आयु समूह तथा 23.9 प्रतिशत उत्तरदाता 51 वर्ष आयु से अधिक आयु के हैं। ये तथ्य ध्यान देने योग्य है कि अध्ययन में सम्मिलित सभी उत्तरदाता परिवार के मुखिया हैं जिनकी आयु 35 वर्ष से कम भी है। दूसरे शब्दों में ग्रामीण संरचना में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न हो रहा है। परिवार के मुखिया में वृद्ध आयु समूह के स्थान पर जीविकोपार्जन करने वाले युवा पीढ़ी के सदस्य की महत्ता बढ़ती जा रही है। इस तथ्य पर यहॉ बल दिया जा सकता है। कि वर्तमान अध्ययन में युवा पीढ़ी के सदस्यों की अधिकता ग्रामीण जीवन में होने वाली परम्परा और आधुनिकता के संघर्ष और परिवर्तन की नवीन दिशाओ को अधिक स्पष्ट रूप से प्रतिविम्बित करेगी, क्योकि गाँवों में वृद्ध पीढ़ी की तुलना में युवा पीढ़ी के लोगों का परिवर्तन की नवीन शक्तियो के प्रति लालसा की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-1 % vk;q d vk/kkj ij mRrjnkrkvksa dk foHkktu

vk;q leg	*vkofRr*	*izfr'kr*
20–35	123	53.5
36–50	52	22.6
51 से अधिक	55	23.9
योग	230	100.0

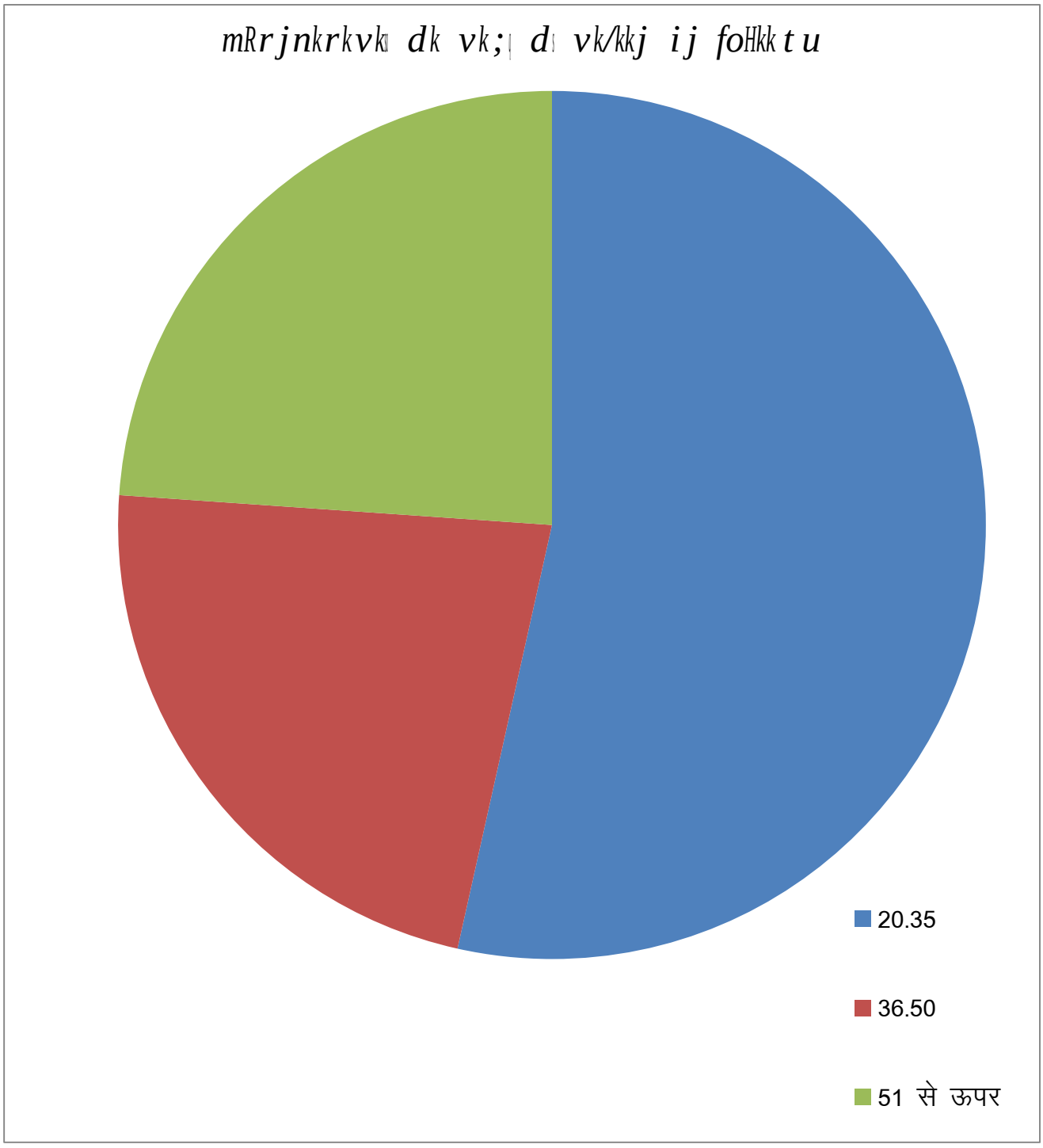

fp= l[;k & 1-3

4-2 % mRrjnkrkvk dh tkfr ¼Tkfrxr lLrj.k½

जाति और जाति प्रथा भारत के सभी क्षेत्रों में पायी जाती है। भारतीय ग्रामीण समाज का अध्ययन करने हेतु इनका ज्ञान अति आवश्यक है। इसके अध्ययन के आभाव में ग्रामीण समाज की जानकारी अधूरी रह जाएगी। आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक विशेषताओं और गतिविधियों की पृष्ठभूमि में जाति व्यवस्था का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए इसकी महत्ता और भूमिका को नकारा नही जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों और नगरीय क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों का कार्य, स्थिति और भूमिका में अनेक परिवर्तन हो जाने के बावजूद भी भारत आज भी जाति व्यवस्था पर आधारित है। जातीय विभिन्नताएं यहां तक की घरेलू और सामाजिक जीवन के तरीकों में विभिन्नताओं को निश्चित करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के गृह निवास और सांस्कृतिक प्रतिमानों को भी निश्चित करती है। भूस्वामित्व भी जाति पर आधारित है। अनेक कारणवश प्रशासकीय कार्यों को बहुधा जाति के अनुसार बांटा गया है। आगे चलकर जटिल धार्मिक और लौकिकीय सांस्कृतिक प्रतिमान को भी निश्चित किया है। इसने विभिन्न समूहों के मनोविज्ञान को स्थापित किया है और सामाजिक दूरी के और निम्न और उच्च सम्बन्धो ने इसके सूक्ष्म वर्गीकृत स्तरों को विकसित किया है कि सम्पूर्ण सामाजिक ढ़ांचा शंकुकार स्तम्भ (पिरामिड) के समान दिखाई पड़ता है। जिसका आधार असंख्य अधूत और शिखर कुछ ब्राह्मणों द्वारा निर्मित हैं (डा0ए0आर0 देसाई)।

जातिगत संस्तरण भारतीय ग्रामीण संरचना का एक महत्वपूर्ण आधार है। प्रत्येक गाँव के अन्तर्गत उच्च और निम्न जातियों का एक संस्तरण पाया जाता है एक ओर उच्चजातियां होती है जिनका भूमि पर स्वामित्व होता है तथा दूसरी ओर निम्न जातियां होती है जो सामान्यतः भूमिहीन कृषक के रूप में परम्परागत जातिगत आर्थिक संरचना के अर्न्तगत उच्चजाति के साथ आबद्ध रहती है। सामान्यतः प्रत्येक गाँव में कुछ प्राकार्यात्मक या व्यवसायिक जाति के सदस्य भी होते रहे हैं। जो अपने विशिष्ट आर्थिक और व्यवसायिक कार्यों के सम्पादन द्वारा ग्रामीण आर्थिक संरचना के अंग होते हैं। ग्रामीण आर्थिक संरचना में इस प्रकार की जाति व्यवस्था एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। जाति एक अखण्डात्मक और प्रतिबन्धित व्यवस्था है। (वेली 1963:107–24) जातिगत संस्तरण उच्चता और निम्नता, पवित्रता और शुद्धता के धार्मिक सांस्कृतिक मूल्यों पर आधाारित है (पोकाकः1961:34)। परन्तु ग्रामीण सामाजिक संरचना में उच्चता और निम्नता का संस्तरण ही संस्थागत सामाजिक दूरी का निर्धारण करती है। अपितु यह आर्थिक सम्पादन, वितरण भूमि स्वामित्व और उपभोग की आर्थिक प्रक्रियाओ का निर्धारण भी है। (मुकर्जी:1980:5.7)

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करते हुए उनकी जातिगत पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में से 18.3 प्रतिशत उच्चजाति के, 35.7 प्रतिशत पिछड़ीजाति के और 46.0

प्रतिशत अनुसूचितजाति के उत्तरदाता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.2 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkj.kh 4-2 mRrjnkrkvksa dh tkfr

जाति	आवृत्ति	प्रतिशत
उच्चजाति	42	18.3
पिछड़ीजाति	82	35.7
अनुसूचितजाति	106	46.0
योग	230	100.0

4-2-1 % vk;q vkj mRrjnkrkvksa dh tkfr

आयु के आधार पर उत्तरदाताओं की जातिगत पृष्ठभूमि का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डालता है। युवा आयु समूह (20–35) में 17.1 प्रतिशत उत्तरदाता उच्चजाति के 34.1 प्रतिशत उत्तरदाता पिछड़ीजाति के और 48.8 प्रतिशत अनुसूचितजाति के सदस्य हैं। मध्यम आयु समूह (36–50) में 17.3 प्रतिशत उत्तरदाता उच्चजाति के, 36.5 प्रतिशत उत्तरदाता पिछड़ीजाति के और 46.2 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचितजाति के सदस्य हैं। वृद्ध आयु समूह (51 से अधिक) में 21.8 प्रतिशत उच्चजाति के उत्तरदाता 38.2 प्रतिशत पिछड़ीजाति के उत्तरदाता और 40.0 प्रतिशत अनुसूचितजाति के उत्तरदाता सदस्य हैं।

तथ्यों का तुलनात्मक वर्णन यह स्पष्ट करता है कि मध्यम और वृद्ध आयु समूह के अधिकांश सदस्य अनुसूचितजाति के है। जबकि युवा आयु समूह के अधिकांश सदस्य भी अनुसूचितजाति के हैं। उच्चजाति के उत्तरदाताओं की मात्रा वृद्ध आयु समूह में तुलनात्मक रूप से अधिक है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.2.1 में किया गया है।

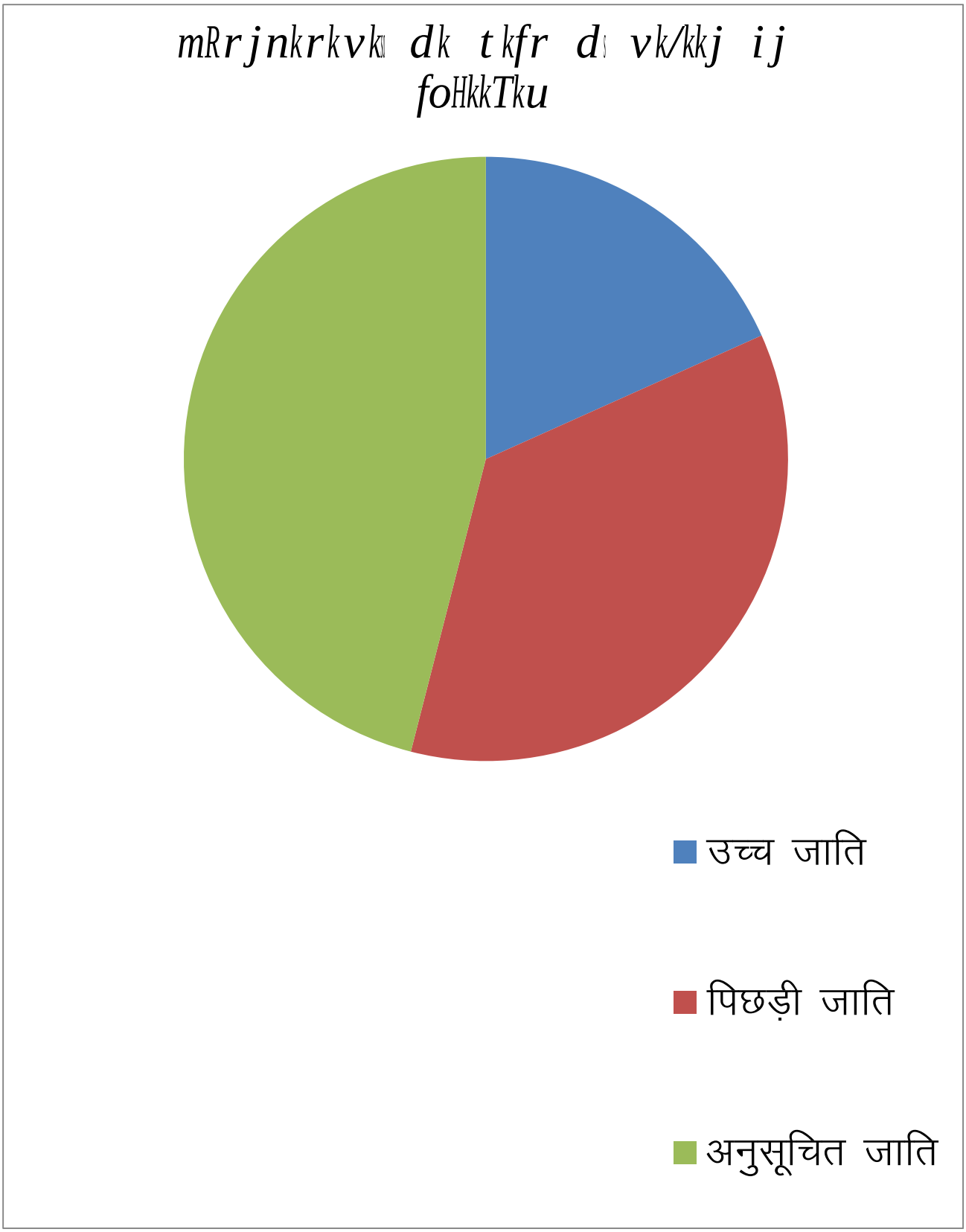
mRrjnkrkvk dk tkfr ds vk/kkj ij
foHkkTku
उच्च जाति
पिछड़ी जाति
अनुसूचित जाति

fp= l[;k & 1-4

lkfj.kh 4-2-1 vk;q vkj mRrjnkrkvksa dh tkfr

vk;q	*mPp tkfr*	*fiNMh tkfr*	*vuqlfpr tkfr*	*;kx*
20–35	21 17.1	42 34.1	60 48.8	123 100.00
36–50	9 17.3	19 36.5	24 46.2	52 100.00
51 से अधिक	12 21.8	21 38.2	22 40.0	55 100.00
योग	42 18.3	82 35.7	106 46.0	230 100.0

4-3 % mRrjnkrkvksa dk 0;olk;

व्यवसाय व्यक्ति के सामाजिक और आर्थिक स्थिति तथा गतिशीलता का प्रमुख आधार है। परम्परागत भारतीय समाज में जाति और व्यवसाय का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। लगभग सभी जातियों का व्यवसाय परम्परागत रूप से निश्चित रहता है। पीढ़ियों के अन्तर के बाद भी उस जाति के सदस्य उन व्यवसायों को करते हैं। अतः परम्परागत भारतीय संरचना में व्यवसायिक गतिशीलता का कोई स्थान नही रहा है। इसके अतिरिक्त व्यवसायों की उच्चता और निम्नता का निर्धारण भी जातिगत संस्तरण के अनुरूप होता रहा है। उच्चजाति के सदस्य सामान्यतः ऐसे व्यवसायों से सम्बद्ध रहते हैं जो पवित्रता और प्रतिष्ठा की दृष्टि से उच्च हैं तथा निम्न जाति के सदस्य अपवित्र और निम्न स्तर के आर्थिक नियमों से सम्बद्ध रहते हैं। कृषि पर आधरित ग्रामीण संरचना में भी आर्थिक क्रियाओं का विभाजन जातिगत संस्तरण के अनुरूप रहा है। साधारणतः उच्चजाति के सदस्यों का भूमि स्वामित्व और कृषि उत्पादन पर अधिकार रहा, जबकि निम्न जाति के सदस्यों की भूमिका कृषि पर आधारित संरचना में अत्यन्त नगण्य रहा है। उन्होने परम्परागत रूप से भूमिहीन कृषक, मजदूर, पशुपालक या कृषि पर आधारित द्वितीयक और तृतीयक प्रकृति की आर्थिक क्रियाओं का सम्पादन किया है। परन्तु आधुनिक काल (वर्तमान काल) में परिवर्तन की नवीन शक्तियों का उदय हुआ है। परम्परागत जातिगत व्यवसाय के नियमों में मूलभूत परिवर्तन हुए उच्च जातीय व निम्न जातीय व्यवसाय की जातिगत की सीमाएं टूट गयी उच्चजाति के व्यवसाय निम्न जाति के व्यवसाय में निम्न जातियों के व्यवसाय उच्चजातियों के प्रचलन में आये। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने रोजगार के नवीन अवसरों को प्रदान किया। पश्चिमीकरण की हवा ने ग्रामीण व नगरीय व्यक्ति की मनोवृत्तियों में परिवर्तन की नींव रखी इसी के तहत जातीय संस्तरण व व्यवसाय के नियमों में शिथिलता का आगमन हुआ। शिक्षा के प्रसार, आर्थिक मूल्यों में परिवर्तन विशेषकर मनोवृत्तियों में परिवर्तन आदि के कारण परम्परागत आर्थिक संरचना चलायमान हो गयी है। परम्परागत

जाति व्यवस्था का समीकरण शिथिल होता जा रहा है और व्यवसायिक तथा आर्थिक गतिशीलता के नवीन आयाम स्पष्ट होते जा रहे है।

वर्तमान अध्ययन के उत्तरदाता जो कि परिवार के मुखिया है उनके मुख्य व्यवसाय के सम्बन्ध में तथ्यों का संकलन परम्परागत आर्थिक ग्रामीण संरचना की निरन्तरता और उनमे होने वाली गतिशीलता के अध्ययन के लिए किया जा रहा है। प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 32.2 प्रतिशत उत्तरदाता कृषक 15.2 प्रतिशत उत्तरदाता कृषक मजदूर 12.1 प्रतिशत उत्तरदाता दैनिक मजदूर, 7.4 प्रतिशत उत्तरदाता कुटीर उद्योग, 4.4 प्रतिशत उत्तरदाता परम्परागत व्यवसाय, 6.1 प्रतिशत उत्तरदाता दैनिक व्यापार, 3.5 प्रतिशत उत्तरदाता दुकानदारी के कार्य मे, 2.1 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षण कार्य मे, 1.7 प्रतिशत उत्तरदाता सरकारी नौकरी, 4.4 प्रतिशत उत्तरदाता परिवहन चालक व 10.9 प्रतिशत उत्तरदाता प्राइवेट नौकरी के रूप में कार्य कर रहे हैं। वर्तमान अध्ययन में तथ्यों का विवरण काईमऊ (दो ग्रामसभा) और करीमनगर (दो ग्रामसभा) न्याय पंचायत के चार ग्रामसभाओं की आर्थिक संरचना के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करना है। अध्ययन में सम्मिलित एक तिहाई के लगभग उत्तरदाताओं के परिवार की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि है। चयनित उत्तरदाताओं में से तिहाई उत्तरदाता स्वयं कृषक है और उत्तरदाताओं का छटा भाग कृषक मजदूर के रूप में कार्य करते हैं। कुछ उत्तरदाता ऐसे भी हैं जो जातिगत परम्परागत व्यवसाय करते हैं। इसके अतिरिक्त मौसम के अनुसार दैनिक व्यापार भी कर लेते हैं। जैसे–सब्जी बेचना, मौसमी फल बेचना इत्यादि। कुछ परिवार के मुखिया उत्तरदाता दैनिक मजदूरी के लिए शहर मुख्यालय को प्रतिदिन जाते हैं और सांय वापस गाँव लौट आते है। कुछ उत्तरदाता शिक्षण कार्य में लगे हुए हैं। इसके अलावा कुछ परिवहन चालक के रूप में कार्य करके (गाँव में ही ट्रैक्टर चलाकर मुख्यालय में बड़े–बड़े सेठ साहूकार की कार गाड़ियां चलाकर) परिवार का भरण पोषण करते है। कुछ उत्तरदाता प्राइवेट नौकरी जैसे–किराने की दुकान पर, कपड़े की दुकान पर, किसी अर्द्धसरकारी फर्म में या फैक्ट्री में या फिर चौकीदारी व अन्य तमाम कार्यों के लिए प्रतिदिन नगरों या दूसरे राज्य के नगरों में जहां औद्योगिक इकाईयां प्रचुर मात्रा में है। जैसे–दिल्ली, लुधियाना, पंजाब, हरियाणा, कानपुर, बैंगलूर, हैदराबाद आदि बड़े–बड़े नगरों में नौकरी करके अपने परिवार का भरण–पोषण करते हैं। कुछ उत्तरदाता दुकानदारी के कार्य कपड़ा, किराना, जनरल मर्चेन्ट, बीज की दुकान, कार्यकुशलता के अनुसार मिठाई की दुकान, फास्टफूड की दुकान वर्तमान में तो सूचना प्रौद्योगिकी के पूर्ण विकसित होने पर हर ग्रामीण क्षेत्र व गाँव में मोबाइल शाप का प्रचलन सर्वाधिक बढ़ गया है। कुटीर उद्योग में संलग्न उत्तरदाता मुख्यतः मुर्गीपालन, बकरीपालन, चक्की कारखाना, पशुपालन करके दुग्ध उत्पादन कुर्ता व साड़ियों की कढ़ाई करके मुर्गीपालन कर अण्डा की बिक्री के लिए यह लखनऊ, कानपुर, शाहजहांपुर तथा बरेली तक अण्डों की आपूर्ति करते हैं। बकरी पालन कर बकरों की बिक्री हर सप्ताह में ग्रामीण पशु बाजारों में बिक्री की व्यवस्था हैं परिवार के मुखिया के

व्यवसाय की प्रकृति का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि अध्ययन में प्रयुक्त चार ग्रामसभाओं की आर्थिक संरचना में निश्चित रूप से परिवर्तन उत्पन्न हो रहा है। यद्यपि अधिकांश परिवारों की निर्भरता कृषि पर बनी हुई है। तथापि व्यवसायों का विकेन्द्रीकरण स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रहा है। समयानुसार उत्तरदाताओं के द्वारा कि गयी प्राइवेट फैक्ट्री व दुकानों में नौकरी, स्वयं का व्यापार, दुकानदारी, दैनिक मजदूरी, कृषक मजदूरी, कुटीर उद्योग व इनमे संलग्न श्रमिकों की मनोवृत्तियों के परिवर्तन से परम्परागत ग्रामीण आर्थिक क्रियाओं में मूलभूत परिवर्तन देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त संचार क्रान्ति द्वारा व केन्द्र सरकार की नवीन योजनाओं के फलस्वरूप नवीन व्यवसाय उत्पन्न हुए हैं। इन व्यवसायों में आय के स्त्रोतों और कार्यों के स्थान में भी महत्वपूर्ण अन्तर उत्पन्न कर दिया है। नवीन व्यवसायों और नौकरियों के कारण गांवो के लोग गांव से बाहर जाकर कार्य कर रहे हैं। इस प्रकार अन्य स्थानों से अर्जित किया गया धन इन व्यक्तियों के द्वारा गांव की ओर आ रहा है। कृषि की प्रकृति अब परम्परागत नही रह गयी है। सूचना प्रौद्योगिकी व श्रव्य दृश्य सामग्रियों द्वारा प्रसारित कृषि विषयक कार्यक्रमों से लाभान्वित होकर कृषकों ने कृषि के परम्परागत तरीके को छोड़कर तकनीकी कृषि की ओर उन्मुख हुए हैं। अब कृषक स्वयं खाने के लिए सब्जी व अन्य भोज्य पदार्थों को नही उगाते बल्कि हाईब्रीड व उन्नतशील बीज व रासायनिक खादों व कीटनाशक दवाओं का सही प्रयोग कर उपज बढ़ाकर बाजार में विक्रय करने के लिए अधिक से अधिक फल, फूल, सब्जी, अनाज, दलहन, तिलहन कपास व अन्य फसलो का उत्पादन कर बाजार में ऊँचे भाव में विक्रय किया जाता है। अतः परम्परागत रूप से विनिमय और जजमानी व्यवस्था पर आधारित कृषि व्यवस्था, निरन्तर मुद्रा पर आधारित आर्थिक व्यवस्था की ओर अग्रसर हो रही है। इस प्रकार से चारों ग्रामसभा में व्यवसायिक और आर्थिक गतिशीलता में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न हो रहा है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.3 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

4-3-1 % Lkkekftd ifjoR;l ,o mRrjnkrkvk dk 0;olk;

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के व्यवसाय पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 4:3.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में समिलित उतरदातओं की आयु के आधार पर तथ्यों का विवरण यह स्पष्ट करता है कि कृषि में संलग्न उत्तरदाताओं की मात्रा वृद्ध आयु समूह 30.9 प्रतिशत की तुलना में मध्यम आयु समूह 34.7 प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक पायी गयी है। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि नवीन पीढ़ी के सदस्य मशीनीकरण व आधुनिकीकरण के आत्मसातीकरण के द्वारा तकनीकी कृषि व्यवसाय को अपना रहे हैं। युवा पीढ़ी के सदस्य 31.7 प्रतिशत तकनीकी कृषि की ओर उन्मुख हो रहे हैं।

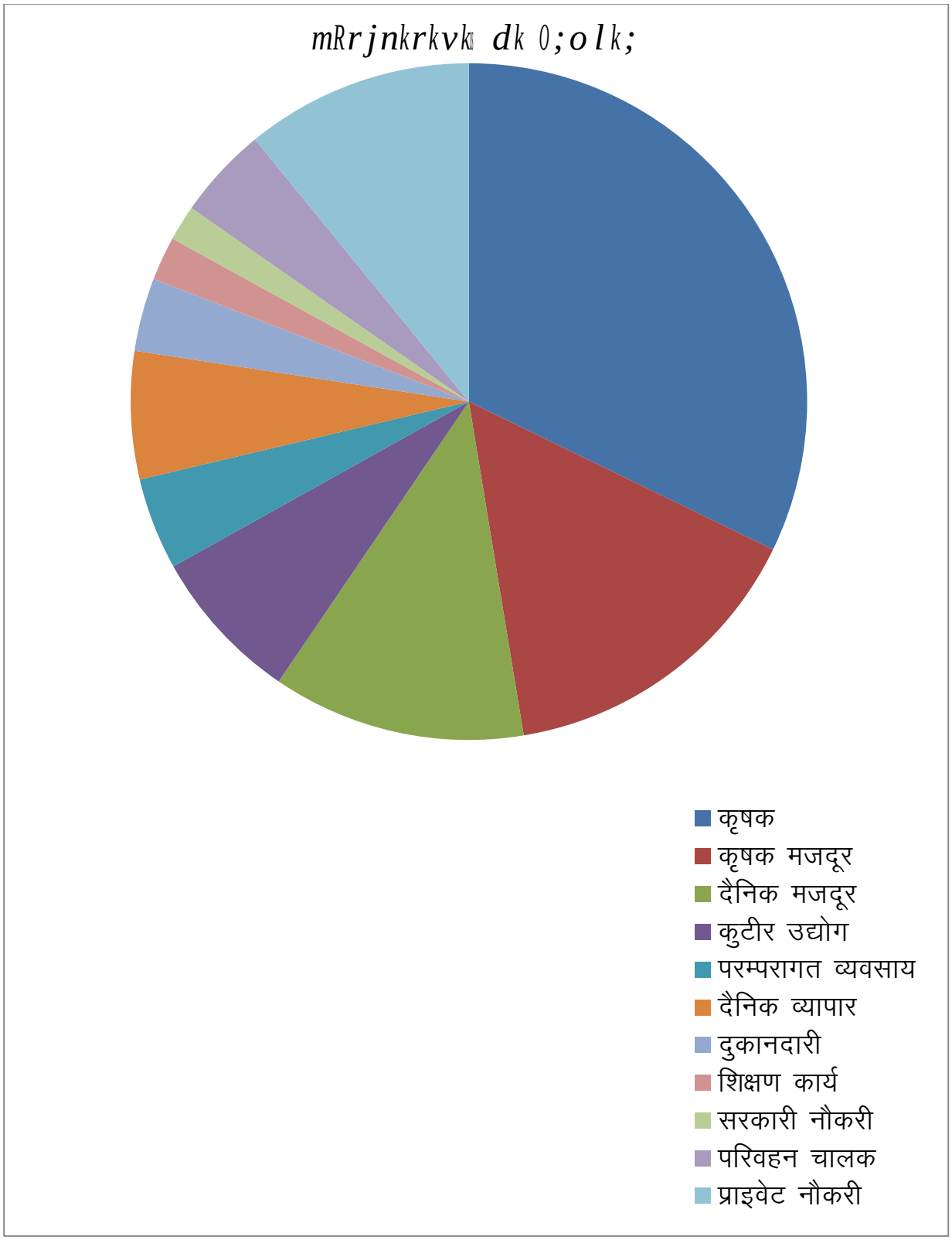
mRrjnkrkvk dk 0;olk;
कृषक
कृषक मजदूर
दैनिक मजदूर
कुटीर उद्योग
परम्परागत व्यवसाय
दैनिक व्यापार
दुकानदारी
शिक्षण कार्य
सरकारी नौकरी
परिवहन चालक
प्राइवेट नौकरी

lkfj.kh 4-3 mRrjnkrkvk dk 0;olk;

0;olk;	vkofRr	ifr'kr
कृषक	74	32.2
कृषक मजदूर	35	15.2
दैनिक मजदूर	28	12.1
कुटीर उद्योग	17	7.4
परम्परागत व्यवसाय	10	4.4
दैनिक व्यापार	14	6.1
दुकानदारी	8	3.5
शिक्षण कार्य	5	2.1
सरकारी नौकरी	4	1.7
परिवहन चालक	10	4.4
प्राइवेट नौकरी	25	10.9
योग	230	100.0

युवा पीढ़ी के 15.5 प्रतिशत कृषि मजदूरी करते हैं। 13.8 प्रतिशत दैनिक मजदूरी, 6.5 प्रतिशत कुटीर उद्योग, 1.6 प्रतिशत परम्परागत व्यवसाय, 4.1 प्रतिशत दैनिक व्यवसाय, 4.9 प्रतिशत दुकानदारी, 1.6 प्रतिशत शिक्षण कार्य, 6.5 प्रतिशत परिवहन चालक तथा 13.8 प्रतिशत प्राइवेट नौकरी करते हैं।

मध्यम आयु समूह के 34.7 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्य करते है। 7.7 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि मजदूरी करते हैं, 9.6 प्रतिशत उत्तरदाता दैनिक मजदूरी करते हैं, 7.7 प्रतिशत उत्तरदाता कुटीर उद्योग में लगे हैं, 9.6 प्रतिशत उत्तरदाता परम्परागत व्यवसाय, 5.8 प्रतिशत उत्तरदाता दैनिक व्यापार, 1.9 प्रतिशत उत्तरदाता दुकानदारी, 5.8 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षण कार्य, 3.8 प्रतिशत उत्तरदाता सरकारी नौकरी, 3.8 प्रतिशत उत्तरदाता परिवहन चालक हैं, 9.6 प्रतिशत प्राइवेट नौकरी करते हैं। प्रस्तुत तथ्यों से विदित होता है कि मशीनीकरण व

आधुनिकीकरण के फलस्वरूप मनोवृत्तियों में परिवर्तन के द्वारा नवीन व्यवसायों की ओर उन्मुखता के साथ–साथ तकनीकी कृषि की ओर इस पीढ़ी के सदस्य अग्रसारित हो रहे हैं। उपर्युक्त तथ्यों में ध्यान देने योग्य है कि मध्यम आयु समूह की पीढ़ी में अनेक उत्तरदाता तकनीकी कृषि व प्राइवेट नौकरी में अधिक संलग्न हो रहे हैं। व्यवसाय के नवीन स्वरूप में तकनीकी कृषि एक नई पद्धति है। पुरानी पद्धति परम्परागत तरीके से की गयी कृषि है। सूचना प्रौद्योगिकी ने नवीन कृषि पद्वति के अग्रसारण में महती भूमिका निभायी है। वृद्ध आयु समूह के एक तिहाई के लगभग उत्तरदाता कृषि कार्य में संलग्न हैं। ग्रामीण आर्थिक संरचना की दो प्रमुख विशेषताओं की ओर यह तथ्य संकेत करता है कि *iFke* दीर्घकाल से संलग्न वृद्ध आयु समूह के सदस्यों के लिए (जबकि मशीनीकरण, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण व आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के द्वारा नवीन व्यवसायों, तकनीकियों, मनोवृत्तियों जीवन जीने के तरीकों से उत्पन्न नवीन व्यवस्था के फलस्वरूप) भी कृषि व्यवसाय छोड़ना सरल नही है। परिवार के मुखिया के रूप में ये कृषि व्यवसाय कर रहे हैं। जबकि परिवार के अन्य सदस्य शिक्षा और रोजगार के लिए परिवार से बाहर जाकर या निवास करके कार्य कर रहे हैं। *f}rh;* वृद्ध आयु समूह में व्यवसायों का विभेदीकरण सामान्यतः निम्न रहा है। नवीन नगरीय व्यवसायों का ग्रामीण आर्थिक संरचना पर अधिक प्रभाव पड़ रहा है। नवीन व्यवसायों की प्रकृति तकनीकी कृषि, सूचना, संचार व आधुनिक व्यवस्थित कार्य व्यवस्था का संचालन व विदेशी प्रभावों से प्रेरित व्यवसायों का अस्तित्व में आना अतः नवीन तकनीकी पर आधारित नवीन व्यवसायों से सम्बन्धित है। इन दोनो ही प्रवृत्तियों का वृद्ध पीढ़ी के व्यवसायिक विभाजन से भली भाति स्पष्ट है। अतः यह भिन्नतः अत्याधिक महत्वपूर्ण है।

tkfr

सामाजिक परिवर्त्य एवं उत्तरदाताओं के व्यवसाय के संकलित तथ्यों के अवलोकन से यह विदित होता है। कि उच्चजाति के 23.8 प्रतिशत उत्तरदाता कृषक के रूप में कार्यरत हैं। 19.0 प्रतिशत उत्तरदाता कुटीर उद्योग, 7.1 प्रतिशत दैनिक व्यापार, 9.5 प्रतिशत उत्तरदाता दुकानदारी, 4.7 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षण कार्य, 2.3 प्रतिशत उत्तरदाता सरकारी नौकरी, 4.8 प्रतिशत उत्तरदाता परिवहन चालक, 16.6 प्रतिशत उत्तरदाता प्राइवेट नौकरी 7.1 प्रतिशत उत्तरदाता दैनिक मजदूरी व 4.7 प्रतिशत उत्तरदाता कृषक मजदूर के रूप में संलग्न है। पिछड़ीजाति के उत्तरदाताओं में से 34.1 प्रतिशत उत्तरदाता कृषक के रूप में कार्यरत रहे है। 14.7 प्रतिशत उत्तरदाता कृषक मजदूर, 14.7 प्रतिशत उत्तरदाता दैनिक मजदूर 6.1 प्रतिशत उत्तरदाता कुटीर उद्योग, 7.4 प्रतिशत उत्तरदाता परम्परागत व्यवसाय , 3.7 प्रतिशत दैनिक व्यापार, 2.4 प्रतिशत उत्तरदाता दुकानदारी, 1.2 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षण कार्य, 2.4 प्रतिशत उत्तरदाता परिवहन चालक, 13.5 प्रतिशत उत्तरदाता प्राइवेट नौकरी कर रहे है।

अनुसूचितजाति के उत्तरदाता में से 34.0 प्रतिशत उत्तरदाता कृषक, 19.8 प्रतिशत उत्तरदाता कृषक मजदूरी, 12.3 प्रतिशत उत्तरदाता दैनिक मजदूर, 3.8 प्रतिशत उत्तरदाता कुटीर उद्योग, 3.8 प्रतिशत उत्तरदाता परम्परागत व्यवसाय, 7.6 प्रतिशत दैनिक व्यापार, 1.9 प्रतिशत उत्तरदाता दुकानदारी, 1.9 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षण कार्य, 2.8 प्रतिशत उत्तरदाता सरकारी नौकरी, 5.6 प्रतिशत उत्तरदाता परिवहन चालक व 6.6 प्रतिशत उत्तरदाता प्राइवेट नौकरी कर रहे हैं। सर्वे के अनुसार जातियों की व्यवसायिक संरचना में यह अन्तर महत्वपूर्ण है।

तथ्यों का विवरण यह स्पष्ट करता है कि कृषक या भूमि स्वामित्व का अधिकार निश्चित रूप से जातिगत संस्तरण का अनुगमन करता है। उच्चजाति की तुलना में पिछड़ी व अनुसूचितजाति के सदस्य तुलनात्मक रूप से अधिक मात्रा में कृषक के रूप में कार्यरत है। अनुसूचितजाति के ही सदस्य आरक्षण के द्वारा उच्च शैक्षणिक और आर्थिक स्थिति के कारण नवीन व्यवसायों और नवीन नगरीय व्यवसायों की ओर अग्रसर हुए हैं। शिक्षण कार्य में संलग्न लगभग उत्तरदाता पिछड़ी व अनुसूचितजाति के सदस्य हैं। सरकारी नौकरी में अनुसूचितजाति समूह के ही अधिक सदस्य पाये गये हैं। यह भी तथ्य ध्यान देने योग्य है कि पिछड़ीजाति और अनुसूचितजाति के सदस्य जो कि कृषक मजदूर, दैनिक मजदूर व निम्न व्यवसायों में भी संलग्न रहे है उनकी व्यवसायिक गतिशीलता में तीव्रगति से वृद्धि हो रही है। वर्तमान अध्ययन में इन दोनो ही जाति समूह के एक चौथाई सदस्य कृषक मजदूर व दैनिक मजदूरी करके अपने व्यवसायिक जीवन व्यतीत कर रहे है। साथ ही साथ नवीन व्यवसायों की ओर इन जाति समूह की उन्मुखता की मात्रा में वृद्धि हो रही है। पिछड़ीजाति के उत्तरदाता दैनिक व्यापार, दुकानदारी प्राइवेट नौकरी, कुटीर उद्योग, शिक्षण कार्य व समयानुसार अन्य कार्यों में भी संलग्न रहते हैं। इसी प्रकार अनुसूचितजाति के सदस्यों ने भी अपनी सामाजिक आर्थिक स्थिति को उन्नत करने व परम्परागत मनोवृत्तियों के उन्मूलन व नवीन विचारधाराओं के आत्मसातीकरण के द्वारा (संस्कृतिकरण के द्वारा) अपनी जीवन पद्धति को बदला व बदलने के लिए भरसक प्रयासरत हैं। नवीन मनोवृत्तियों के फलस्वरूप, दैनिक व्यापार, दुकानदारी सरकारी नौकरी, प्राइवेट नौकरी व समयानुसार अन्य कार्यों व नवीन व्यवसायों की ओर अग्रसरित हो रहे हैं। उपर्युक्त तथ्यों व अध्ययन ने यह स्पष्ट किया है कि ग्रामीण जातिगत और आर्थिक संरचना का परम्परागत सम्बन्ध शिथिल होता जा रहा है। जातिगत उच्चता यद्यपि भूमि स्वमित्व और स्वतन्त्र कृषि कार्य में अब कुछ कम महत्वपूर्ण नजर आ रही है। तथापि पिछड़ीजाति और अनुसूचितजाति की व्यवसायिक आर्थिक गतिशीलता निश्चित रूप से दृष्टिगोचर हो रही है। भूमि स्वामित्व और नवीन व्यवसायों के आत्मसातीकरण में अनुसूचितजाति का स्थान अपेक्षाकृत उच्च होता नजर आ रहा है।

नवीन आकांक्षाओं व मनोवृत्तियों ने समाज के स्वरूप में परिवर्तन कर दिया है। हर व्यक्ति चाहें वह किसी भी जाति समूह का हो तुलनात्मक रूप से अपेक्षाकृत अनुसूचितजाति

समूह का सदस्य आधुनिकता की बयार में बहत जा रहा है तथा उसकी प्रकृति व हर गति विधि जीवन पद्धति पर आधुनिकता का प्रभाव देखने को मिलता हैं व्यवसायिक संरचना में नवीन व्यवसायों की ओर अग्रसारित होना परम्परागत व्यवसायों का आधुनिकीकरण कर नवीन तकनीकी का आत्मसातीकरण कर उन्नत के मार्ग प्रशस्त करना है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.3.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 4-3-1 %lkekftd ifjoR;l ,o mRrjnkrkvk dk 0;olk;

Lkekftd ifjoR;l	d"kd	d"kd etnj	nSfud etnj	dVhj m|kx	ijEijkxr 0;olk;	nSfud 0;kikj	nqdkunkjh	f'k{k.k dk;l	Lkjdkjh ukdjh	ifjogu pkyd	ikboV ukdjh	;kx
vk;q												
20–35	39 31.7	19 15.5	17 13.8	8 6.5	2 1.6	5 4.1	6 4.9	2 1.6	– –	8 6.5	17 13.8	123 100.00
36–50	18 34.7	4 7.7	5 9.6	4 7.7	5 9.6	3 5.8	1 1.9	3 5.8	2 3.8	2 3.8	5 9.6	52 100.00
51 से ऊपर	17 30.9	12 21.8	6 10.9	5 9.1	3 5.5	6 10.9	1 1.8	– –	2 3.6	– –	3 5.5	55 100.00
Tkkfr												
उच्च जाति	10 23.8	2 4.7	3 7.1	8 19.0	– –	3 7.1	4 9.5	2 4.7	1 2.3	2 4.8	7 16.6	42 100.00
पिछड़ी जाति	28 34.1	12 14.7	12 14.7	5 6.1	6 7.4	3 3.7	2 2.4	1 1.2	– –	2 2.4	11 13.5	82 100.00
अनुसूचित जाति	36 34.0	21 19.8	13 12.3	4 3.8	4 3.8	8 7.6	2 1.9	2 1.9	3 2.8	6 5.6	7 6.6	106 100.00
योग	74 32.2	35 15.2	28 12.2	17 7.4	10 4.4	14 6.8	8 3.5	5 2.2	4 1.7	10 4.4	25 10.8	230 100.00

4-4 % mRrjnkrkvk dh vkfFkd lajpuk

व्यक्ति की वर्ग के अनुसार स्थिति का निर्धारण उसके व्यवसाय, सम्पत्ति और आयु के आधार पर आधुनिक समाज में किया जाता है। इसमे से 'आय' स्थिति के निर्धारण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली आधार है। जहां आय एक ओर व्यक्ति की आर्थिक सम्पन्नता और विपन्नता का प्रतीक है। वहीं दूसरी ओर उसकी शक्ति, सुविधा, प्रभाव उपभोगशीलता और अधिकारों को भी सूचित करती है। परम्परागत ग्रामीण संरचना में व्यक्ति के वर्ग के अनुसार सामाजिक निर्धारण में उसके व्यवसाय का विशेष महत्व नही रहा है।

परम्परागत ग्रामीण संरचना ने भूमि स्वामित्व और जातिगत उच्चता में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारण किया है। उसकी आयगत स्थिति ने ग्रामीण संरचना की कृषि पर निर्भरता, वस्तु विनिमय की आर्थिक व्यवस्था और जजमानी प्रणाली ने परम्परागत ग्रामीण संरचना में मुद्रा को नगण्य स्थान प्रदान किया था। परन्तु आधुनिक युग में ग्रामीण आर्थिक संरचना निरन्तर मुद्रा पर आधारित होती जा रही हैं कृषि का यन्त्रीकरण ग्रामीण समुदाय में उदीयमान नवीन व्यवसायों की उत्पत्ति नगर में रोजगार और व्यापार की नवीन सुविधाओं इत्यादि के कारण ग्रामीण समुदाय निरन्तर मुद्रा पर आधारित आर्थिक संरचना की परिधि में समाविष्ट होता जा रहा है। अतः व्यक्ति की आय उसके आर्थिक और सामाजिक स्थिति के निर्धारण का महत्वपूर्ण आधार ग्रामीण समुदाय में ही बनता जा रहा है।

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि बहुसंख्यक उत्तरदाता 39.6 प्रतिशत की मासिक आय 4000 या कम है, 23.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4001–6000 के मध्य है, 31.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 6001 से 10,000 के मध्य है, केवल 5.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 10,001 से अधिक है। अतः आय के दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश परिवारों के मुखिया की आय 4000 या कम है। यह स्थिति इन परिवारों के निम्न आर्थिक स्थिति का द्योतक है। आर्थिक स्थिति का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.4 में किया गया है।

lkfj.kh 4-4 mRrjnkrkkvksa dh ekfld vk; ¼:0½ esa

ekfld vk;	*vkofRr*	*ifr'kr*
4000 या कम	91	39.6
4001 से 6000	54	23.4
6001–10,000	73	31.7
10,001 से ऊपर	12	5.3
योग	230	100.0

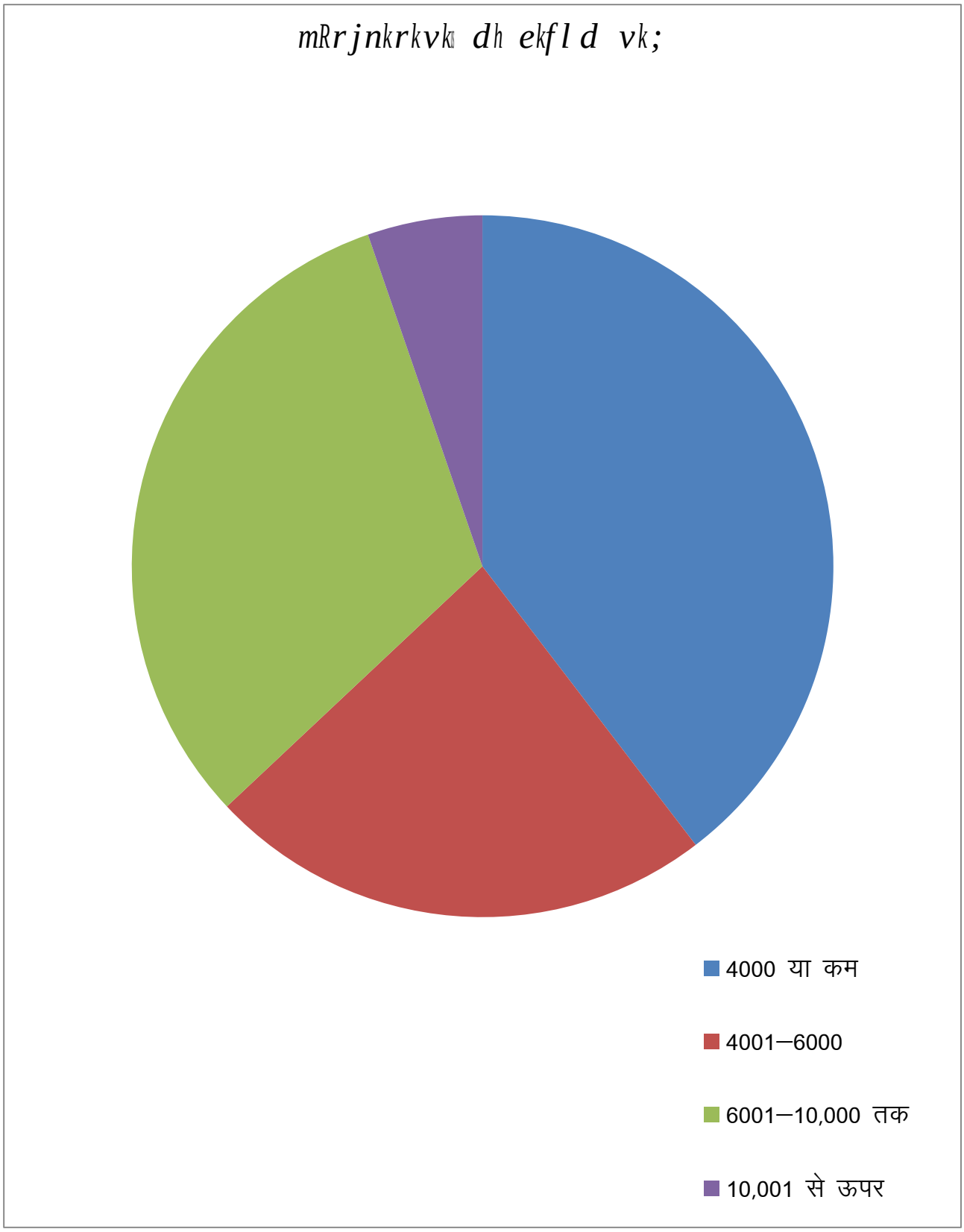
mRrjnkrkvk dh ekfld vk;
4000 या कम
4001–6000
6001–10,000 तक
10,001 से ऊपर

चित्र संख्या – 1.6

4-4-1 % Lkkekftd ifjoR;u ,oa mRrjnkrkvksa dh ekfld vk;

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की मासिक आय के आधार पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर आगे सारिणी 4.4.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;u

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 44.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4000 या उससे कम है, 24.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4001 से 6000 के मध्य तथा 27.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 6001 से 10,000 के मध्य है। केवल 3.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 10001 से अधिक है। मध्यम आयु समूह के 28.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4000 या कम है, 21.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4001 से 6000 के मध्य तथा 44.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 6001 से 10,000 के मध्य है केवल 5.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 10001 से अधिक है। वृद्ध आयु समूह के 38.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4000 या कम है, 23.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4001 से 6000 के मध्य तथा 29.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 6001 से 10,000 के मध्य है, केवल 9.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 10001 से अधिक है।

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि युवा मध्यम और वृद्ध तीनों ही पीढ़ी के सदस्यों की मासिक आय 4000 या कम है। निम्न आय का यह प्रतिशत तुलनात्मक दृष्टि से युवा आयु समूह में अधिक पाया गया है। ऐसा प्रतीत हुआ है कि युवा आयु समूह के सदस्य जिन्होंने अपने व्यवसायिक जीवन का सूत्रपात कुछ ही वर्ष पूर्व किया है उनके आय के स्त्रोत तो प्रचुर मात्रा में है। लेकिन व्यवसायिक संरचना में प्रतिस्पर्धा के होने के कारण व कार्य अकुशलता के फलस्वरूप आय निम्न है जबकि मध्यम और वृद्ध पीढ़ी के सदस्य उच्च आय वर्ग की ओर अग्रसारित हो रहे हैं। यहां पर यह कहना उचित होगा कि जो युवा पीढ़ी के सदस्य तकनीकी कृषि की ओर उन्मुख हो रहे हैं वे मध्यम व वृद्ध आयु समूह की तुलना में उनकी मासिक आय लगभग बराबर प्रतीत होती है। यह तथ्य कृषि व्यवसाय की पृष्ठभूमि में रखकर और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि मध्यम व वृद्ध पीढ़ी के कार्यों में अनुभवी सदस्य उच्च आय वर्ग में पाये गये हैं। यह तथ्य ग्रामीण समुदाय के साक्षात्कार के अनुसार महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति के आधार पर तथ्यों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित उत्तरदाताओं में 65.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4000 या कम है। 21.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रू0 4001 से 6000 के बीच है और 12.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रू 6001 से 10,000 के बीच है। प्राइमरी व जूनियर स्तर के शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं में 38.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4000 या कम है। 31.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रू 4001 से 6000 के बीच है, 30.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 6001 से 10,000 के मध्य है। हाईस्कूल व इन्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं में 39.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4000 या कम है, 16.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रू0 4001 से 6000 के मध्य है, 37.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रू. 6001 से 10,000 के बीच है तथा 6.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रू 10001 से अधिक है। स्नातक तथा स्नाकोत्तर स्तर के शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं में 3.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4000 या कम है, 11.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रू 4001 से 6000 के बीच है, 55.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रू 6001 से 10,000 के बीच तथा 29.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रू0 10001 से अधिक है।

उपर्युक्त तथ्यों का विवरण यह स्पष्ट करता है कि उच्च शिक्षा व अल्प हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं को छोड़कर शेष सभी शैक्षणिक वर्ग के उत्तरदाताओं की अधिकांशतः मासिक आय 4000 या कम है। निम्न आर्थिक स्थिति रखने वाले उत्तरदाताओं की संख्या प्राइमरी/जूनियर शिक्षा प्राप्त वर्ग में तुलनात्मक रूप से अधिक पायी गयी है। उच्च आय वर्ग के उत्तरदाताओं की मात्रा अल्प हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं में तुलनात्मक रूप से प्राइमरी/जूनियर की अपेक्षा अधिक पायी गयी है। मध्यम आय वर्ग में प्राइमरी जूनियर शिक्षा प्राप्त निम्न आय वर्ग में तथा हाईस्कूल व इन्टरमीडिएट की शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं की आयगत स्थिति अधिक मजबूत है। सभी स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं की आयगत स्थिति सभी स्तर वर्गों में सर्वाधिक पायी गयी। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वर्तमान अध्ययन में शैक्षणिक स्तर व आयगत स्तर में सार्थक सम्बन्ध है। अध्ययन में यह पाया गया कि जो उत्तरदाता उच्च शिक्षा प्राप्त है उनका बौद्धिक स्तर सामाजिक स्तर व अन्य सभी क्रियाकलाप भिन्न है। अपेक्षाकृत प्राइमरी/जूनियर शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं के आयगत स्थिति में सर्वाधिक आय उच्च शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं की है।

t kfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जतिगत पृष्ठभूमि के आधार पर उत्तरदाताओं की आयगत स्थिति का अध्ययन करने से यह विदित होता है कि उच्चजाति के 19.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4000 या कम 30.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4001 से 6000 के मध्य 42.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 6001 से 10,000 के मध्य केवल 7.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 10001 से अधिक है। पिछड़ीजाति के उत्तरदाताओं में 34.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4000 या कम 26.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4001 से 6000 के मध्य 31.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 6001 से 10,000 के मध्य केवल 7.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 10001 से अधिक है। अनुसूचितजाति के उत्तरदाताओं में 51.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4000 या कम है, 17.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4001 से 6000 के मध्य, 27.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 6001 से 10,000 के मध्य, केवल 2.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 10001 से अधिक है।

उत्तरदाताओं की आयगत स्थिति का अध्ययन यह स्पष्ट करता है। कि उनकी जातिगत स्थिति और आय में निकट सम्बन्ध है सर्वेक्षण के अनुसार या सम्बन्ध महत्वपूर्ण है। जिन उत्तरदाताओं की आयगत स्थिति सर्वाधिक असन्तोषजनक है, वे अनुसूचितजाति के सदस्य है जिन उत्तरदाताओं की आयगत स्थिति तुलनात्मक रूप से सन्तोषजनक है। साधारणतः उच्चजाति के सदस्य हैं। यद्यपि उच्चजाति के सदस्यों में भी निम्न आय वर्ग के अधिकांश सदस्य पाये गये हैं। तथापि इसी जातिगत पृष्ठभूमि के उत्तरदाताओं में ही ऐसे उत्तरदाताओं की अधिकता है। जो निम्न, मध्यमवर्ग और उच्च आय वर्ग से सम्बन्धित है। ऐसा प्रतीत होता है कि परिवर्तन की नवीन परिस्थितियों में विशेषकर आर्थिक विकास, शिक्षा का प्रसार, नगरीय प्रभाव इत्यादि ने जिस मात्रा में उच्चजाति के सदस्यों की मनोवृत्तियों में परिवर्तन कर विकास मार्ग की ओर उन्मुख किया अपेक्षाकृत पिछड़ी और अनुसूचितजाति को कम प्रभावित किया है, यही कारण है कि उच्चजाति के सदस्यों की आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील परिस्थितियों के कारण उन्नतशील हुई है, पिछड़ीजाति व अनुसूचितजाति के सदस्यों को परिवर्तन की नवीन परिस्थितियों व केन्द्र व राज्य सरकारों के प्रयासों द्वारा चलायी जा रही सैकड़ों कल्याणकारी योजनाओं द्वारा लाभान्वित कर उच्चता की ओर अग्रसरित किया जा रहा है व हो रहे हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.4.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh%4-4-1%lkekftd ifjoR;l ,o mRrjnkrkvk dh ekfld vk; ¼:0½ eA

Lkkekftd ifjoR;l	4000 ;k de	4001 ls 6000	6001 ls 10]000	10001 ls vf/kd	;kx
vk;q					
20–35	55 44.7	30 24.4	34 27.6	4 3.3	123 100.0
36–50	15 28.8	11 21.2	23 44.2	3 5.8	52 100.0
51 से अधिक	21 38.2	13 23.6	16 29.1	5 9.1	55 100.0
f'k{kk					
अशिक्षित	27 65.9	9 21.9	5 12.2	– –	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	40 38.8	32 31.1	31 30.1	– –	103 100.0
हाईस्कूल / इन्टरमीडिएट	23 39.0	10 16.9	22 37.3	4 6.8	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	1 3.7	3 11.1	15 55.6	8 29.6	27 100.0
Tkkfr					
उच्चजाति	8 19.1	13 30.9	18 42.9	3 7.1	42 100.0
पिछड़ीजाति	28 34.1	22 26.9	26 31.8	6 7.3	82 100.0
अनुसूचितजाति	55 51.9	19 17.9	29 27.3	3 2.9	106 100.0
योग	91 39.5	54 23.4	73 31.8	12 5.3	230 100.0

4-5 % mRrjnkrkvk dh oSokfgd fLFkfr

परम्परागत समाजों में विवाह व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का एक महत्वपूर्ण निर्धारक रहा है। विवाह द्वारा न केवल व्यक्ति दाम्पत्य सम्बन्धों की स्थापना करता है बल्कि इसके द्वारा उसके पारिवारिक उत्तरदायित्व और सामाजिक भूमिकाओं के क्षेत्र का विस्तार भी होता है। विवाह द्वारा व्यक्ति को जिन नवीन भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है उसमें परिवार के सदस्यों के भरण पोषण का उत्तरदायित्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। विवाह के पूर्व एक व्यक्ति परिवार के ऊपर निर्भर रहता है, परिवार के अन्य सदस्य उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते है तथा उसके व्यवहारों और क्रियाओं पर नियन्त्रण रखते हैं। परन्तु विवाह के बाद व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने और परिवार के अन्य सदस्यों के भरण पोषण का भार स्वयं वहन करे इसके अतिरिक्त उसके व्यक्तिगत व्यवहार और भूमिकाएं स्वतन्त्र और व्यक्तिगत प्रकृति की न रहकर वैवाहिक और पारिवारिक मान्यताओं के अनुरूप हो जाती है। अतः विवाह का व्यक्ति के उत्तरदायित्व पूर्ण सामाजिक जीवन और भूमिका निर्धारण में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। विवाह व्यक्ति को सामाजिक परिवेश में समायोजन विकास और समाजीकरण की नवीन परिस्थितियां प्रदान करता है। (ग्रीनः1957:127–30, सिंहः1985)

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित 13.0 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित, 80.4 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित और 6.6 प्रतिशत उत्तरदाता विधुर या विधवा है। अतः अध्ययन में सम्मिलित केवल थोड़े से उत्तरदाताओं को छोड़कर सभी सदस्य विवाहित हैं। अविवाहित सदस्य साधारणतः वे व्यक्ति हैं जिनकी आयु अपेक्षाकृत कम है। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित विवाहित उत्तरदाताओं की अधिकता परम्परागत भारतीय ग्रामीण मान्यताओ के अनुरूप है। जहां विवाह को एक अनिवार्यता माना जाता है तथा एक निश्चित अवधि के अन्दर विवाह सम्बन्ध स्थापित न करना सामाजिक और नैतिक दृष्टि से अशोभनीय माना जाता है। ग्रामीण समाज में विवाह की अनिवार्यता एक अन्य दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण रही है। कृषि पर आधारित आर्थिक संरचना की एक मूलभूत आवश्यकता परिवार के सदस्यों की एक निश्चित मात्रा और पारस्परिक सहयेाग है। कृषि कार्य के सम्पादन व आर्थिक रूप से अर्थव्यवस्था में आये बदलाव के कारण अधिक व्यक्तियों के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विवाह और सन्तानोत्पति आवश्यक है।

अतः कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था व अन्य कुटीर व लघु उद्योगों पर आधारित अर्थव्यवस्था के संचालन के लिए न केवल वैवाहिक सम्बन्धों की आवश्यकता और दृढ़ता को बल दिया, बल्कि इस व्यवस्था में संयुक्त परिवार की व्यवस्था में स्थिरता पर बल व निरन्तरता प्रदान की। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.5 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-5 mRrjnkrkvksa dh oSokfgd fLFkfr

oSokfgd fLFkfr	*vkofRr*	*izfr'kr*
अविवाहित	30	13.0
विवाहित	185	80.4
विधुर/विधवा	15	6.6
योग	230	100.0

4-5-1 % Lkkekftd ifjoR;u ,oa mRrjnkrkvksa dh oSokfgd fLFkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 4.5.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;u

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 24.4 प्रतिशत अविवाहित, 75.6 प्रतिशत विवाहित उत्तरदाता हैं, मध्यम आयु समूह के 94.2 प्रतिशत विवाहित तथा 5.8 प्रतिशत विधुर/विधवा उत्तरदाता हैं। वृद्ध आयु समूह के 78.2 प्रतिशत विवाहित तथा 21.8 प्रतिशत विधुर/विधवा उत्तरदाता हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि अविवाहित सदस्य युवा आयु समूह के ही सदस्य हैं। इस सदस्यों का अविवाहित होना इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि धीरे–धीरे ग्रामीण समुदाय में विवाह की आयु उच्च होती जा रही है। एक अन्य तथ्य पर भी प्रकाश डालना आवश्यक है कि वे अविवाहित सदस्य भी परिवार के मुखिया हैं। यह स्थिति इनके परिवार के विशिष्ट परिस्थितियों का परिणाम है। परिवार के प्रौढ़ सदस्यों की मृत्यु, सम्पत्ति विभाजन आदि परिस्थितियों के कारण यह अविवाहित युवक सदस्यों के ऊपर परिवार के उत्तरदायित्व का पूरा बोझ आ गया है। अतः इन्हें परिवार के मुखिया के रूप में सम्मिलित किया गया है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित उत्तरदाताओं में से 73.2 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित 14.7 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित तथा 12.1 प्रतिशत उत्तरदाता विधुर/विधवा

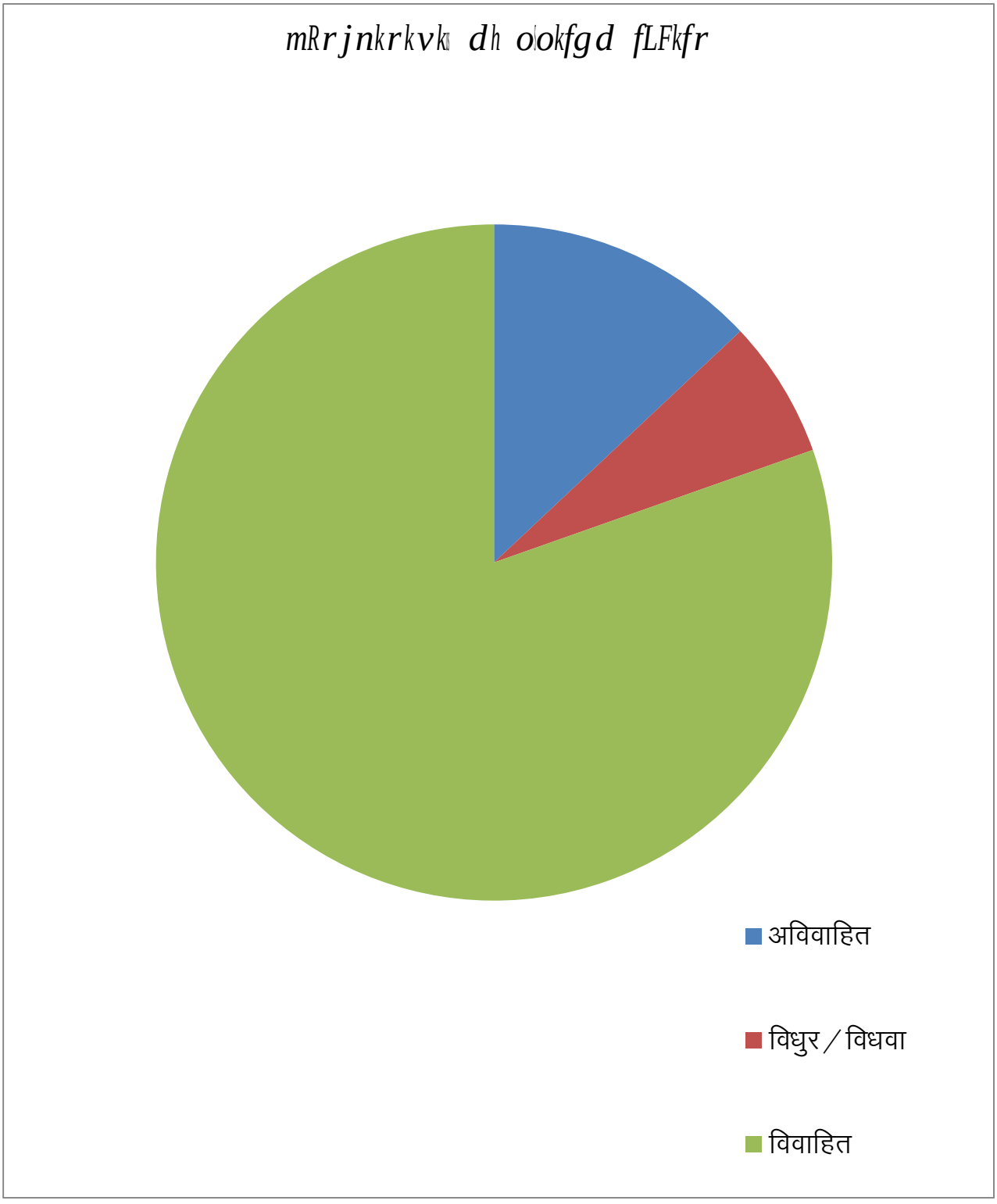

fp= la[;k & 1-7

प्राप्ति उत्तरदाता हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के उत्तरदाताओं में से 82.6 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित, 13.6 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित हैं, केवल 3.8 प्रतिशत उत्तरदाता विधुर/विधवा प्राप्ति उत्तरदाता हैं। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त में 10.1 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित 84.9 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित केवल 5.0 प्रतिशत उत्तरदाता विधुर/विधवा स्थिति प्राप्त उत्तरदाता हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त 14.9 प्रतिशत अविवाहित उत्तरदाता 74.0 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित केवल 11.1 प्रतिशत उत्तरदाता विधुर/विधवा प्राप्त उत्तरदाता सम्मिलित हैं। अतः स्पष्ट है कि अविवाहित उत्तरदाता केवल युवा आयु समूह के सदस्य अपितु शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी हैं। इनमें से अधिकांश हाईस्कूल एवं इण्टर तक की शिक्षा प्राप्त हैं।

Tkkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जातिगत पृष्ठिभूमि के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 21.4 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित 71.4 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित और 7.2 प्रतिशत उत्तरदाता विधुर/विधवा स्थिति प्राप्त उत्तरदाता है पिछड़ीजाति के 17.1 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित, 78.0 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित तथा 4.9 प्रतिशत उत्तरदाता विधुर/विधवा प्राप्ति उत्तरदाता हैं। अनुसूचितजाति में 6.6 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित 85.8 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित केवल 7.6 प्रतिशत उत्तरदाता विधुर/विधवा उत्तरदाता हैं। अतः उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि तीनों ही जाति समूह के बहुसख्यंक उत्तरदाता विवाहित हैं।

अध्ययन से यह स्पष्ट है कि अविवाहित उत्तरदाताओं की मात्रा उच्चजाति समूह के सदस्यों में तुलनात्मक रूप से अधिक पायी गयी है। यह तथ्य प्रदर्शित करता है कि उच्चजाति के सदस्यो में वैवाहिक दृष्टिकोण के सम्बन्ध में कुछ परिवर्तन उत्पन्न हो रहा है और विवाह की आयु निरन्तर उच्च होती जा रही है। सभी अविवाहित सदस्य 20–25 वर्ष की आयु के मध्य है। ग्रामीण समुदाय के सदस्यों में विवाह की आयु की वृद्धि अत्याधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि परम्परागत रूप से विवाह कम आयु में ही किये जाते रहे हैं। अनुसूचित और पिछड़ीजाति के सदस्यों में परम्परागत मान्यताओं का अभी भी काफी प्रभाव दिखायी पड़ता है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.5.1 में किया गया है।

lkfj.kh 4-5-1 lkekftd ifjoR;l ,o mRrjnkrkvk dh oSokfgd fLFkfr

Lkkekftd ifjoR;l	vfookfgr	fookfgr	fo/kqj@fo/kok	;ksx
vk;q				
20–35	30 24.4	93 75.6	– –	123 100.0
36–50	‘– –	49 94.2	3 5.8	52 100.0
51 से अधिक	– –	43 78.2	12 21.8	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	6 14.7	30 73.2	5 12.1	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	14 13.6	85 82.6	4 3.8	103 100.0
हाईस्कूल / इन्टरमीडिएट	6 10.1	50 84.9	3 5.0	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	4 14.9	20 74.0	3 11.1	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	9 21.4	30 71.4	3 7.2	42 100.0
पिछड़ीजाति	14 17.1	64 78.0	4 4.9	82 100.0
अनुसूचितजाति	7 6.6	91 85.8	8 7.6	106 100.0
योग	30 13.0	185 80.5	15 6.5	230 100.0

4-6 % 'kS{kf.kd fLFkfr

भारतीय ग्रामीण संरचना के सन्दर्भ में शिक्षा का अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान है। परम्परागत रूप से ग्रामीण समुदाय में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारण उसकी जातिगत और वंशानुगत पारिवारिक स्थिति के आधार पर होता रहा है। इस व्यवस्था में व्यक्ति

की व्यक्तिगत योग्यता और कुशलता का कोई स्थान नही रहा। साथ ही साथ परम्परागत ग्रामीण समुदाय में अनौपचारिक शिक्षा द्वारा ग्रामीण सांस्कृतिक मान्यताओं का स्थानान्तरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक होता रहा है। परन्तु अब अनौपचारिक शिक्षा का ग्रामीण समुदाय में कोई विशेष महत्व नही है। परन्तु आधुनिक समय में परिवर्तन की नवीन सामाजिक संरचनाओं ने समाज में परिवर्तन उत्पन्न किया है। ग्रामसभा के लोग नगरों में जाकर उच्चशिक्षा प्राप्त कर रहे हैं तथा नवीन रोजगार और नौकरियों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। अनेक गांव या निकटवर्ती कस्बों में उच्चतर माध्यमिक स्तर के और कहीं–कहीं उच्च स्तर के शैक्षणिक संस्थानो के निर्माण के कारण समुदाय में सदस्यों की शिक्षा की सुविधा निवास के निकट ही सुलभ हो रही है। इन परिस्थितियों में शैक्षणिक और सामाजिक आर्थिक गतिशीलता की सम्भावना बढ़ गयी है। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति का प्रस्तुतिकरण निम्न प्रकार से किया गया है। यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि इसमे परिवार के अन्य सदस्यों की शैक्षणिक स्थिति का नही बल्कि उत्तरदाता के रूप में चुने गये परिवार के मुखिया की शैक्षणिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। तथ्यों के अवलोकन से यह विदित होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 17.9 प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षित हैं, 44.8 प्रतिशत उत्तरदाता प्राइमरी / जूनियर 25.6 प्रतिशत उत्तरदाता हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा तथा 11.7 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक / स्नातकोत्तर स्तर तक की शिक्षा प्राप्त की है। अतः परिवार के मुखियाओं की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि सामान्यतः इनका शैक्षणिक स्तर निम्न है। केवल थोड़े से उत्तरदाताओं को छोड़कर अधिकाश उत्तरदाता या तो अशिक्षित है या उनकी शैक्षणिक स्थिति अत्याधिक निम्न है। जिन उत्तरदाताओं ने शिक्षा ग्रहण की है उन्होंने छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर की उच्च शैक्षणिक संस्थाओ से सामान्यतः शिक्षा प्राप्त की है। अतः शैक्षणिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इन उत्तरदाताओं का नगरीय सम्पक्र अत्यन्त घनिष्ठ रहा है। उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.6 में किया गया है।

lkfj.kh 4-6 mRrjnkrkvksa dh 'kS{kf.kd fLFkfr

'kS{kf.kd fLFkfr	*vkofRr*	*izfr'kr*
अशिक्षित	41	17.9
प्राइमरी / जूनियर	103	44.8
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	59	25.6
स्नातक / स्नातकोत्तर	27	11.7
योग	230	100.0

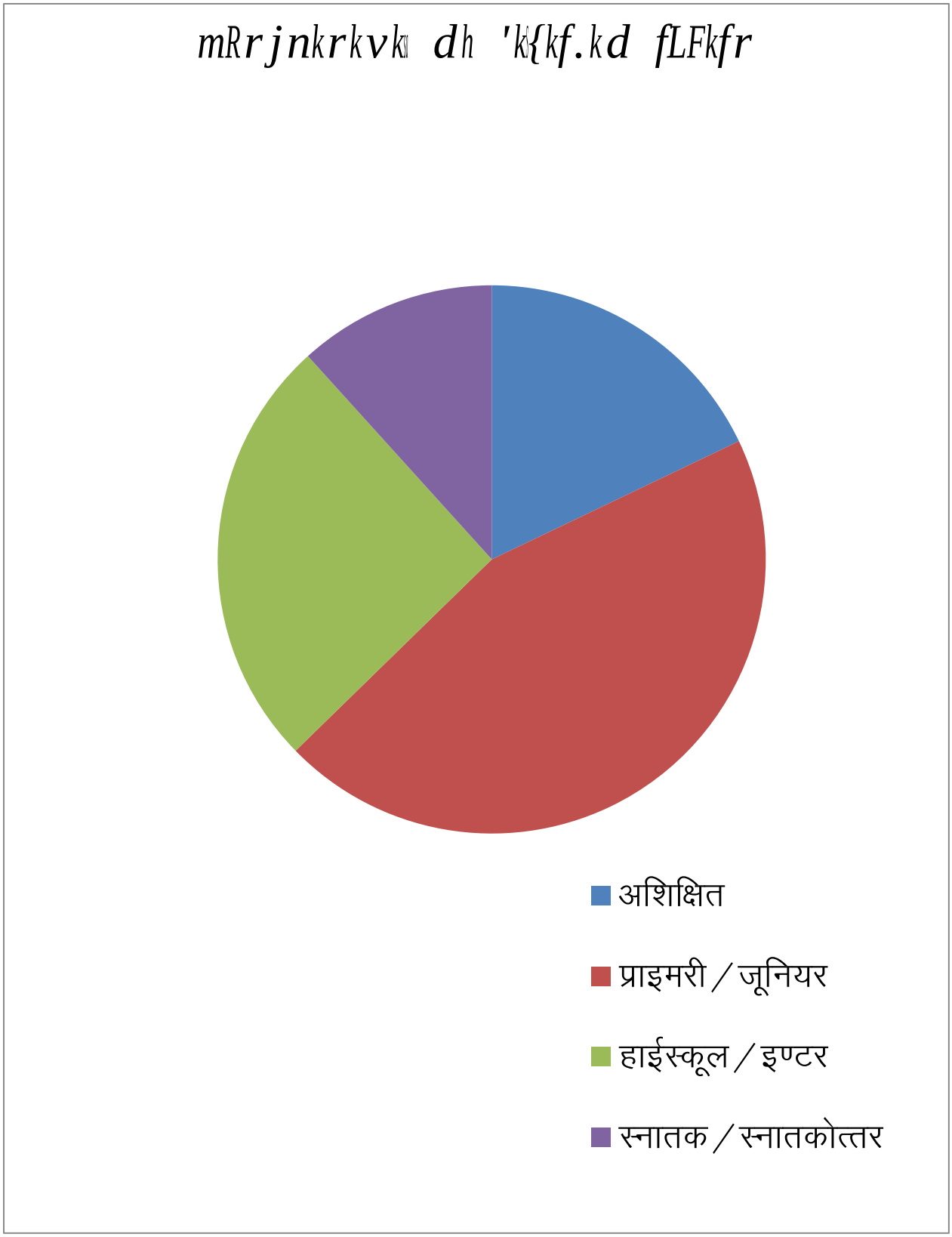
mRrjnkrkvk dh 'k{kf.kd fLFkfr
अशिक्षित
प्राइमरी / जूनियर
हाईस्कूल / इण्टर
स्नातक / स्नातकोत्तर

fp= l[;k & 1-8

4-6-1 % Lkkekftd ifjoR;u ,oa mRrjnkrkvksa dh 'k{kf.kd fLFkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को सारिणी 4.6.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 7.3 प्रतिशत उत्तरदाता मध्यम आयु समूह के 21.2 प्रतिशत उत्तरदाता और वृद्ध आयु समूह के 38.3 उत्तरदाता अशिक्षित हैं। अतः पीढ़ियों के अन्तर के साथ अशिक्षा की मात्रा निरन्तर कम होती जा रही है वृद्ध पीढ़ी के अधिकांश सदस्य अशिक्षित हैं जबकि युवा पीढ़ी में अशिक्षा की यह मात्रा घटकर चौथाई से भी कम रह गयी हैं। प्राइमरी/जूनियर तक की शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा युवा आयु समूह में 43.9 प्रतिशत मध्यम आयु समूह में 44.2 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह में 47.3 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा युवा आयु समूह में 36.6 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 19.2 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह में 7.2 प्रतिशत उत्तरदाता है। स्नातक/स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा युवा आयु समूह में 12.2 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 15.4 प्रतिशत वृद्ध आयु समूह में 7.2 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। शिक्षित उत्तरदाताओं के शैक्षणिक स्तर से सम्बन्धित तथ्यों के विवरण से स्पष्ट है कि जिस मात्रा में युवा आयु समूह के उत्तरदाता निम्न, मध्यम और उच्च शैक्षणिक स्तर में पाये जाते हैं उस मात्रा में मध्यम आयु समूह और वृद्ध आयु समूह के सदस्य नही हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि युवा पीढ़ी शिक्षा के प्रसार से अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित हुई है तुलनात्मक अध्ययन पद्वति के अनुसार यह निष्कर्ष सत्य है। अध्ययन में प्रस्तुत चारो ग्रामसभा के ऐसे परिवार जहॉ परिवार के मुखिया शिक्षित है। वह सामान्यतः युवा पीढ़ी के सदस्य हैं।

Tkfr

वर्तमान अध्ययन में जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित उत्तरदाताओं की मात्रा उच्चजाति में 11.9 प्रतिशत पिछड़ीजाति में 13.4 प्रतिशत अनुसूचितजाति में 23.6 प्रतिशत है। अतः अशिक्षा की मात्रा अनुसूचितजाति के सदस्यो में जितनी देखने को मिलती है उतनी अधिक उच्चजाति के सदस्यो में नही है। प्राइमरी/जूनियर तक की शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा उच्चजाति में 33.3 प्रतिशत पिछड़ीजाति में 58.5 प्रतिशत तथा अनुसूचितजाति में 38.7 प्रतिशत पायी गयी। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा उच्चजाति में 40.5 प्रतिशत पिछड़ीजाति में 28.1 प्रतिशत अनुसूचितजाति में 17.9 प्रतिशत है,

स्नातक/स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा उच्चजाति में 14.3 प्रतिशत तथा अनुसूचितजाति में 19.8 प्रतिशत पायी गयी है।

उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति और उनकी जातिगत पृष्ठभूमि में अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध देखने को मिलता है तुलनात्मक अध्ययन पद्धति के अनुसार यह निष्कर्ष सत्य है। पिछड़ीजाति के उत्तरदाताओं में न केवल अशिक्षा की मात्रा अधिक है अपितु शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं का स्तर उच्च हो रहा है। उच्चजाति के उत्तरदाताओं में न केवल अशिक्षा की मात्रा कम है तथा शिक्षा ग्रहण करने वाले उत्तरदाताओं का शैक्षणिक स्तर उच्च है। तथ्यों के विश्लेषण से यह प्रतीत होता है कि उच्च व पिछड़ीजाति पृष्ठभूमि के उत्तरदाता जीवन के नवीन अवसरो और नवीन परिस्थितियों को प्राप्त करने के लिए जिस मात्रा में अग्रसर हो रहे हैं उस मात्रा में जातिगत पृष्ठभूमि की निम्नता सम्भवतः एक प्रमुख बाधा है और इसी कारण अनुसूचितजाति के सदस्य शिक्षा प्राप्त करने की ओर अधिक मात्रा में अग्रसर नही हो पा रहे हैं। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.6.1 में किया गया है।

lkfj.kh 4-6-1 lkekftd ifjoR;l ,o mRrjnkrkvksa dh 'kS{kf.kd fLFkfr

Lkekftd ifjoR;l	*vf'kf{kr*	*ikbejh@ tqfu;j*	*gkbLdwy@ b.VjehfM,V*	*Lukrd@ LukrdksRrj*	*;ksx*
vk;q					
20–35	9 7.3	54 43.9	45 36.6	15 12.2	123 100.0
36–50	11 21.2	23 44.2	10 19.2	8 15.4	52 100.0
51 से ऊपर	21 38.3	26 47.3	4 7.2	4 7.2	55 100.0
tkfr					
उच्चजाति	5 11.9	14 33.3	17 40.5	6 14.3	42 100.0
पिछड़ीजाति	11 13.4	48 58.5	23 28.1	– –	82 100.0
अनुसूचितजाति	25 23.6	41 38.7	19 17.9	21 19.8	106 100.0
योग	41 17.9	103 44.8	59 25.6	27 11.7	230 100.0

4-7 % vkokl h; fLFkfr

अध्ययन में चयनित चार ग्रामसभाओं में जैसा कि पहले विश्लेषित किया जा चुका है कि चार प्रकार के मकान उपलब्ध हैं। झोपड़ी, कच्चा, अर्द्धकच्चा और पक्का मिलाकर इन चारो ग्रामसभा में 1945 मकान हैं जिसमें 14171 परिवार निवास करते हैं। (स्त्रोत जनपदीय सांख्यिकीय पत्रिका हरदोई – 2013–14) कुछ मकानो में एक से अधिक परिवार निवास करते हैं। ऐसे मकानों में सम्पत्ति विभाजन, आपसी झगड़े अथवा अन्य किसी कारण से एक ही परिवार के सदस्यों में बंटवारा हो गया है और एक ही मकान में रहते हुए भी पारिवारिक आय–व्यय आदि की व्यवस्था अलग हो गयी है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित 54.8 प्रतिशत उत्तरदाता कच्चे मकान में निवास करते हैं, 25.3 प्रतिशत उत्तरदाता अर्द्धकच्चे मकान में निवास करते हैं, 17.4 प्रतिशत उत्तरदाता पक्के मकान में निवास करते हैं तथा 2.6 प्रतिशत उत्तरदाता झोपड़ी में ही गुजारा करते हैं। यह कच्चे मकान कच्ची ईंट की बनी दीवारो पर बल्ली–बांस डालकर कच्ची छत द्वारा बनी कोठरी मुक्त कच्चे मकान है। साधारणतः मकान के अगले भाग पर छांव के लिए छप्पर रखा हुआ है। मकान के अन्दर खुल हुआ आंगन है, मकान के एक तरफ कच्चा स्नानागार व पेयजल के लिए हैण्डपम्प व गन्देपानी निकास की व्यवस्था है, अर्द्धकच्चे मकानों में कुछ भाग पर अर्द्धपक्के कमरे बने हुए हैं जिनमें फर्श कच्ची है, दीवारों पर प्लास्टर नही है, मकान के अन्दर आंगन व कुछ कच्ची कोठरी हैं। अर्द्धकच्चे मकानों में शौचालय व स्नानागार अर्द्धकच्चा बना हुआ है। पानी निकास के लिए नालियां पक्की हैं तथा भोजन पकाने के लिए वैकल्पिक रसोई की भी व्यवस्था है। पक्के मकान उच्चजाति (अल्प) एंव अन्य जातियों के परिवारों के मकान है। यह पक्के मकान पूर्ण पक्के मकान हैं। जहां फर्श से लेकर आंगन, बरामदा, स्नानागार, रसोई व शौचालय व यातायात के साधन खड़ा करने, पशुओं का निवास स्थान तथा साज–सज्जा से परिपूर्ण मकान हैं। मकान के बगीचे का हिस्सा छोड़कर कोई हिस्सा कच्चा नही है। यह मकान एक मंजिल व दो मंजिल भी हैं। झोपड़ी में निवास करने वाले साधारणतः निम्न जातियों के सदस्य हैं जो गांव के छोर पर सम्भवतः निवास करते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.7 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 4-7 % mRrjnkrkvksa dh vkokl h; fLFkfr

vkokl h; fLFkfr	vkofRr	ifr 'kr
कच्चा	126	54.8
अर्द्धकच्चा	58	25.3
पक्का	40	17.4
झोपड़ी	6	2.6
योग	230	100.0

4-7-1 % Lkkekftd ifjoR;l ,o mRrjnkrkvk dh vkoklh; fLFkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आवासीय स्थिति पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 4.7.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता हैं कि युवा आयु समूह के 65.0 प्रतिशत उत्तरदाता कच्चे मकान में, 20.4 प्रतिशत उत्तरदाता अर्द्धकच्चे मकान में, 14.6 प्रतिशत उत्तरदाता पक्के मकान में निवास करते है। मध्यम आयु समूह के 34.6 प्रतिशत उत्तरदाता कच्चे मकान में, 38.5 प्रतिशत उत्तरदाता अर्द्धकच्चे मकान में, 23.0 प्रतिशत उत्तरदाता पक्के मकान में तथा 3.9 प्रतिशत उत्तरदाता झोपड़ी में निवास करते हैं। वृद्ध आयु समूह के 51.0 प्रतिशत उत्तरदाता कच्चे मकान में, 23.7 प्रतिशत उत्तरदाता अर्द्धकच्चे मकान में 18.1 प्रतिशत उत्तरदाता पक्के मकान में तथा 7.2 प्रतिशत उत्तरदाता झोपड़ी में निवास करते हैं। तथ्यों का विवरण यह स्पष्ट करता है कि आयु समूह और आवासीय दशा में कोई विशेष सम्बन्ध नही है। तीनो ही आयु समूह में अधिकांश उत्तरदाता कच्चे मकान में निवास करते हैं।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि झोपड़ी में निवास करने वाले उत्तरदाता 7.3 प्रतिशत अशिक्षित, 1.9 प्रतिशत उत्तरदाता प्राइमरी/जूनियर शिक्षा तक, 1.6 प्रतिशत उत्तरदाता हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त हैं। पक्के मकानों में रहने वाले 2.5 प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षित, 15.6 प्रतिशत उत्तरदाता प्राइमरी/जूनियर शिक्षा प्राप्त, 22.0 प्रतिशत उत्तरदाता हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त, 37.0 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं के परिवार निवास करते है। कच्चे मकान में रहने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा अशिक्षित उत्तरदाताओं में 85.4 प्रतिशत उत्तरदाता प्राइमरी/जूनियर शिक्षा प्राप्त उत्तरदाता 63.1 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त उत्तरदाता 35.6 प्रतिशत उत्तरदाता तथा स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त उत्तरदाता 18.5 प्रतिशत है। अर्द्ध कच्चे मकान में रहने वाले परिवारों में 4.8 प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षित वर्ग के, 19.4 प्रतिशत उत्तरदाता प्राइमरी/जूनियर शिक्षा प्राप्त, 40.8 प्रतिशत उत्तरदाता हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त, 44.5 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं के परिवार हैं।

उपर्युक्त अध्ययन से प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि पक्के मकान में छोड़कर झोपड़ी, कच्चा और अर्द्धकच्चा तीनों प्रकार के मकानों में उत्तरदाता के परिवार निवास करते हैं जबकि पक्के मकानों में उच्च शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं के परिवार निवास करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आवासीय दशा और शैक्षणिक स्थिति में निकट सम्बन्ध है। उत्तम आवासीय दशा, उत्तम आर्थिक व्यवस्था को सूचित करती है। शिक्षा की उच्चता भी उन्हीं परिवारों में देखने का मिलती है जिनकी आर्थिक और आवासीय स्थिति उच्च है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 4.8 प्रतिशत उत्तरदाता कच्चे मकान में, 45.2 प्रतिशत उत्तरदाता अर्द्धकच्चे मकान में और 50.0 प्रतिशत उत्तरदाता पक्के मकान में निवास करते हैं। पिछड़ीजाति के 89.0 प्रतिशत उत्तरदाता कच्चे मकान में, 6.1 प्रतिशत उत्तरदाता अर्द्धपक्के मकान में, 4.9 प्रतिशत उत्तरदाता पक्के मकान में निवास करते हैं। अनुसूचितजाति के 48.1 प्रतिशत उत्तरदाता कच्चे मकान में, 32.1 प्रतिशत अर्द्धपक्के मकान में, 14.2 प्रतिशत उत्तरदाता पक्के मकान में 5.6 प्रतिशत उत्तरदाता झोपड़ी में निवास करते हैं।

उपर्युक्त तथ्यों से यह विदित होता है झोपड़ी में निवास करने वाले सभी परिवार अनुसूचितजाति के हैं। पक्के मकान में अनुसूचितजाति के कुछ परिवार निवास करते हैं। कच्चे मकान में निवास करने वालों की संख्या पिछड़ीजाति व अनुसूचितजाति के अधिक तथा उच्चजाति के कुछ परिवार ही कच्चे मकान में निवास करते हैं। तथ्यों के अनुसार विशेषतः पिछड़ी व अनुसूचितजाति के परिवार ही कच्चे मकानों में निवास करते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि जातिगत पृष्ठभूमि और आवासीय स्थिति में घनिष्ठ सम्बन्ध है। साधारणतः निम्न जाति के परिवारों की आवासीय स्थिति भी निम्न है। उच्चजाति के शत्प्रतिशत परिवार उत्तम आवासीय सुविधाओं का उपभोग भी करते हैं और संसाधन जुटाने व आवासीय, सामाजिक आर्थिक शैक्षिक स्तर को उच्च रखने के लिए सजग भी रहते हैं। उच्चजाति में शैक्षिक व आर्थिक स्थिति उच्च होने के परिणामस्वरूप आवास की दशा उन्नत पायी जाती है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.7.1 में किया गया है।

lkfj.kh 4-7-1 lkekftd ifjoR;l ,oa mRrjnkrkvksa dh vkoklh; fLFkfr

Lkkekftd ifjoR;l	dPpk	v)ldPpk	iDdk	>kiMh	;kx
vk;q					
20–35	80 65.0	25 20.4	18 14.6	– –	123 100.0
36–50	18 34.6	20 38.5	12 23.0	2 3.9	52 100.0
51 से ऊपर	28 51.0	13 23.7	10 18.1	4 7.2	55 100.0
f'k{kk					
अशिक्षित	35 85.4	2 4.8	1 2.5	3 7.3	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	65 63.1	20 19.4	16 15.6	2 1.9	103 100.0
हाईस्कूल / इन्टरमीडिएट	21 35.6	24 40.8	13 22.0	1 1.6	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	5 18.5	12 44.5	10 37.0	– –	27 100.0
tkfr					
उच्चजाति	2 4.8	19 45.2	21 50.0	– –	42 100.0
पिछड़ीजाति	73 89.0	5 6.1	4 4.9	– –	82 100.0
अनुसूचितजाति	51 48.1	34 32.1	15 14.2	6 5.6	106 100.0
योग	126 54.8	58 25.2	40 17.4	6 2.6	230 100.0

l kjk'k

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया गया है। यह विश्लेषण चारों ग्रामसभा गदनपुर (78) कसमण्डी (70) महीनकुण्ड (34)करीमनगर (48) के पूरे 2304 परिवार में से 230 परिवारों के मुखिया या कर्ता को अध्ययन की इकाई मानकर किया गया है। अतः चारो ग्रामसभा के कुछ परिवारो का सामाजिक आर्थिक स्थिति का चित्र भी इस विश्लेषण द्वारा सामने उपस्थित होता है। अध्ययन के प्रमुख बिन्दू, आयु, जाति व्यवसायिक स्थिति, आयगत स्थिति, शैक्षणिक स्थिति, वैवाहिक, आवासीय स्थिति का विश्लेषण किया गया है।

उत्तरदाताओं की आयु सम्बन्धी तथ्यों का विश्लेषण करने से यह ज्ञात होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 53.5 प्रतिशत उत्तरदाता युवा आयु समूह के, 22.6 प्रतिशत उत्तरदाता मध्यम आयु समूह के और 23.9 प्रतिशत उत्तरदाता वृद्ध आयु समूह के है। अतः अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत अधिक है। यह तथ्य ग्रामीण पारिवारिक संरचना और वर्तमान अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। युवा पीढ़ी का ग्रामीण परिवार के मुखिया के रूप में आना निश्चित रूप से ग्रामीण परिवार के संरचनात्मक विशेषताओं में होने वाले परिवर्तनों का द्योतक है। वर्तमान अध्ययन के सन्दर्भ में युवा पीढ़ी के उत्तरदाताओं की अधिकता ग्रामीण समुदाय में परम्परा और आधुनिकता के नवीन संघर्ष और परिवर्तन की नवीन दशाओं को स्पष्ट करने में सहायक होगा।

उत्तरदाताओं की जातिगत स्थिति का विश्लेषण ग्रामीण सामाजिक संरचना की विशेषतओ को स्पष्ट करती है। वर्तमान अध्ययन के उत्तरदाता ब्राह्मण, क्षत्रीय, गड़रिया, बनिया, नाई, अहिर, कहार, तेली, मुस्लिम चमार, पासी, बेहना, कलवार, आरख, सिक्ख, धोबी, धानुक है। अकेली जाति के रूप में चमार जाति की अधिकता है। उच्चजाति के उत्तरदाता 18.3 प्रतिशत पिछड़ीजाति के 35.7 प्रतिशत अनुसूचितजाति के 46.0 प्रतिशत उत्तरदाता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, मुराऊ, पासी आदि लगभग साधन सम्पन्न है और ग्रामीण राजनीतिक तथा आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उत्तरदाताओं की व्यवसायिक स्थिति का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि 32.2 प्रतिशत उत्तरदाता कृषक 15.2 प्रतिशत उत्तरदाता कृषक मजदूर, 12.1 प्रतिशत उत्तरदात दैनिक मजदूर, 7.4 प्रतिशत उत्तरदाता कुटीर उद्योग, 4.4 प्रतिशत उत्तरदाता परम्परागत व्यवसाय, 6.1 प्रतिशत उत्तरदाता दैनिक व्यापार 3.5 प्रतिशत उत्तरदाता दुकानदारी, 2.1 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षण कार्य, 1.7 प्रतिशत उत्तरदाता सरकारी नौकरी, 4.4 प्रतिशत उत्तरदाता परिवहन चालक, 10.9 प्रतिशत उत्तरदाता प्राइवेट नौकरी के कार्य में संलग्न हैं।

यद्यपि अधिकांश उत्तरदाताओं के जीविकोपार्जन का मुख्य साधन कृषि या कृषि पर आधारित व्यवसाय हैं। परन्तु उत्तरदाताओं का महत्वपूर्ण एक भाग ऐसा भी है जो गैर कृषि कार्यों में संलग्न है यह स्थिति जैसा कि आगे स्पष्ट किया गया है कि उत्तरदाताओं के परिवार के अन्य सदस्यों की व्यवसायिक स्थिति के अध्ययन से और अधिक स्पष्ट होती है तथा यह ज्ञात होता है कि उत्तरदाताओं के परिवार में व्यवसायिक गतिशीलता की दिशा कृषि कार्य से गैर कृषि की ओर है। ग्रामीण आर्थिक जीवन निरन्तर नगरीय आर्थिक जीवन से सम्बन्धित होता जा रहा है।

उत्तरदाताओं की आयगत स्थिति का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि 39.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रू 4000 या कम है। 23.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 4001 से 6000, 31.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रू 6001 से 10,000 तथा 5.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रू 10001 से अधिक पायी गयी है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं की मासिक आय उन्हे निम्न, मध्यम व उच्च स्थिति प्रदान करती है। यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि निम्न आय वर्ग के उत्तरदाता मुख्यतः अनुसूचितजाति के सदस्य है जबकि उच्च आय वर्ग में उच्चजाति के उत्तरदाताओं की तुलनात्मक रूप से अधिकता पायी गयी है। अतः ग्रामीण आर्थिक संरचना की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उच्चजाति समूह के परिवार उच्च आर्थिक वर्ग की ओर अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में अग्रसर हो रहे है। तथा निम्न जाति समूह के परिवारो में भी उच्च आर्थिक वर्ग की ओर उन्मुखता दिखाई पड़ रही है तथा नवीन आकांक्षाओं का निम्न जाति समूहों में उद्‌भव हुआ तथा परम्परागत तथा रूढ़िवादी मानसिकता का उन्मूलन तथा नवीन आकांक्षाओं व प्रवृत्तियों का आत्मसातीकरण दिखाई पड़ने लगा है।

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि बहुसंख्यक उत्तरदाता विवाहित 80.4 प्रतिशत हैं, 6.6 प्रतिशत उत्तरदाता विधुर/विधवा प्राप्त हैं, केवल 13.0 प्रतिशत उत्तरदाता ही अविवाहित है इस प्रकार वर्तमान अध्ययन में अधिकांश उत्तरदाता आयु और अनुभव की दृष्टि से परिपक्व हैं तथा वे अपने परिवार के उत्तरदायी सदस्य हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति निम्न पायी गयी। 17.9 प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षित, शिक्षित उत्तरदाताओं में से निम्न शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं की अधिकता 44.8 प्रतिशत पायी गयी है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त वर्ग में 25.6 प्रतिशत उत्तरदाता तथा स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त वर्ग में केवल 11.7 प्रतिशत उत्तरदाता पाये गये है। इस प्रकार अधिकांशतः परिवारों के मुखिया का शैक्षणिक स्तर या तो निम्न है या वे पूर्णतया शिक्षित हैं। यह स्थिति उत्तरदाताओं की पीढ़ी में शिक्षा के सीमित प्रकार को प्रतिबिम्बित करती है जैसा की आगे स्पष्ट किया गया है कि उत्तरदाताओं के परिवार के युवा पीढ़ी में शैक्षणिक गतिशीलता तीव्रता के साथ बढ़ रही है।

उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति उनकी आवासीय स्थिति के द्वारा महत्वपूर्ण तथ्य प्रकट करती है। 54.8 प्रतिशत उत्तरदाता कच्चे मकान में 25.3 प्रतिशत उत्तरदाता अर्द्ध कच्चे मकान में 17.4 प्रतिशत उत्तरदाता पक्के मकान में और 2.6 प्रतिशत उत्तरदाता झोपड़ी में निवास करते हैं। कच्चे मकानों में रहने वाले उत्तरदाता अधिकतर पिछड़ीजाति के 89.0 प्रतिशत उत्तरदाता निवास करते हैं। पक्के मकानों में 50.0 प्रतिशत और अर्द्धकच्चे मकानों में 45.2 प्रतिशत उत्तरदाता एवं उच्चजाति के 4.8 प्रतिशत उत्तरदाता निवास करते हैं। अनुसूचितजाति के 48.1 प्रतिशत उत्तरदाता कच्चे मकानों में निवास करते है तथा अर्द्धपक्के मकानों में 32.1 प्रतिशत उत्तरदाता, पक्के मकानों में 14.2 प्रतिशत उत्तरदाता तथा 5.6 प्रतिशत उत्तरदाता झोपड़ी में निवास करते हैं तथ्यों के अनुसार पिछड़ी व अनुसूचितजाति के उत्तरदाता कच्चे मकान व झोपड़ी में निवास करते हैं। इन जातियों की तुलना में अधिकतर उच्चजाति के लोग पक्के मकान में निवास करते हैं। उच्चजाति के उत्तरदाताओं की आवासीय स्थिति को ध्यान में रखते हुए यह कहना उचित होगा कि उच्चजाति के उत्तरदाता आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में निरन्तर प्रयासरत थे व हैं। इस तथ्य के अतैव निम्न जातियों में भी परिवर्तन की प्रक्रिया प्रतिबिम्बित होती है जो ग्रामीण विकास के मार्ग में गतिशीलता का सूचक है।

Ikkfjokfjd lajpuk

परिवार मानव समाज की आधारभूत एवं सार्वभौमिक सामाजिक संरचना है। यह मानव की मूलभूत आवश्यकताएं पूरी करता है तथा उन प्रकार्यों को निभाता है जोकि व्यवस्था की निरन्तरता, एकता एवं परिवर्तन हेतु अपरिहार्य है। समाज के प्रौद्योगिकीय तथा आर्थिक अधिसंरचना में परिवर्तनों के साथ परिवर्तन के स्वरूप एवं प्रकार्यों में अनुकूलनात्मक परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन की विशेषता बताने का एक तरीका यह है कि परिवार के वैवाहिक स्वरूपों को सापेक्ष रूप से आधुनिकीकृत अथवा औद्योगिक समाज के साथ साथ संयुक्त अथवा विस्तृत प्रकार के परिवारों को पारम्परिक कृषक और पूर्व औद्योगिक समाजों के साथ जोड़ा जाए। अतः सार रूप से विस्तृत परिवार अथवा संयुक्त परिवार आधारित समाज से नाभिक परिवार आधारित समाज में संक्रमण, संरचानात्मक परिवार का एक उदाहरण है। क्योंकि इसमे विभेदीकरण की प्रक्रियाओं के माध्यम से भूमिका सरचनाओं में व्यवस्थात्मक परिवर्तन होते हैं। विस्तृत अथवा संयुक्त परिवार की तुलना में नाभिक परिवार में भूमिका संरचनाओं के संयोग कम होते हैं। सत्ता व्यवस्था तथा नातेदारी सम्बन्धों के जाल भी भिन्न होते हैं। एक नाभिक परिवार स्वयं विस्तृत अथवा संयुक्त परिवार की गढ़ी हुई सामाजिक संरचना से सरंचनात्मक विभेदीकरण का एक उदाहरण है।

विश्व में सर्वत्र पारम्परिक कृषक समाजों में विस्तृत संयुक्त परिवारों की प्रधानता रही है। प्रायः ऐसे परिवार पितृ स्थानीय तथा पितृ सत्तात्मक थे। इस प्रकार के परिवारों में महिलाओं की सापेक्षतया अधीनस्थ स्थिति थी। सभी सदस्य अपनी गतिविधियों में एक बुजुर्ग परिवार मुखिया द्वारा निर्देशित होते थे। सभी सदस्यों में अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध सत्तात्मक थे। इस प्रकार के परिवारों में विवाह प्रणय निवेदन के बजाय नातेदारी के नियमों से निर्धारित होते थे और विवाह के व्यक्तियों के मध्य सम्बन्ध के बजाय परिवारों के मध्य सम्बन्ध का मामला समझा जाता था। इस प्रकार के समाजों में परिवार आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा राजनैतिक गतिविधियों की इकाई भी होता था। इस प्रकार के पारिवारिक संगठन में व्यक्तिवाद एवं निजी स्वतन्त्रता की भावना अन्जानी व परदेशी थी। क्योंकि इस प्रकार के समाजों की आर्थिक संरचना बन्द थी तथा प्रौद्योगिकी नवाचार बहुत कम थे। लोक कथाओं, मिथक शास्त्रों, पहेलियों तथा लोकगीतों आदि के स्वरूप में विद्यमान ज्ञान के सम्पूर्ण भण्डार को बुर्जुगों द्वारा युवा पीढ़ी को मौखिक परम्परा के माध्यम से हस्तान्तरित किया जाता था। इस कारण से विस्तृत अथवा संयुक्त परिवारों में सामाजिक प्रस्थिति तथा सुविधाओं के निर्धारण में सामान्यतः आयु एक महत्वपूर्ण तथ्य थी।

इस प्रकार खेतिहर कृषक समाजों, (Agrarian – Peasant Societies) विस्तृत अथवा संयुक्त प्रकार के परिवार में एक सहजीवी सम्बन्ध विकसित हो गया था। कृषकों को

गांव से उखाड़कर शहरों में ढ़केलने वाले अनुलग्नक कानूनों ने औद्योगिक, प्रौद्योगिक नवाचारों के साथ मिलकर परिवार संरचना में एक मूलभूत परिवर्तन किया। जैसे–जैसे औद्योगिक क्रान्ति में प्रगति हुई, विवाह के विस्तृत स्वरूपों से वैवाहिक स्वरूपों में संक्रमण त्वरित हो गया तथा नाभिक स्वरूप का परिवार समाज का एक प्रधान लक्षण बन गया। जैसे–जैसे विस्तृत अथवा संयुक्त परिवार नाभिक परिवार में परिवर्तित होता है, परिवार में बच्चों का सामाजीकरण एक नयी दिशा ले लेता है। परिवर्तनशील प्रतिमानों तथा परिवर्तित दृष्टिकोण में भिन्नता दूर से नजर आती है।

''के0एम0 कपाड़िया'' का अध्ययन 'मैरिज एण्ड फैमिली इन इण्डिया' हिन्दू संयुक्त परिवार की प्रकृति के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण दृष्टि प्रदान करता है। कपाड़िया ने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हिन्दू परिवार के परिवर्तित स्वरूप, ऐतिहासिक ग्रन्थों में उपलब्ध सामग्रियों, सामाजिक विधानों में होने वाले परिवर्तनों और अनुभवात्मक अध्ययनों का प्रयोग करते हुए संयुक्त परिवार की विशेषताओं की व्यवस्था की है। कपाड़िया का यह मत है कि परिवार सम्बन्धों की एक व्याख्या तथा एक प्रकार्यात्मक इकाई है यद्यपि निवास के दृष्टिकोण से पृथक परिवारों में परिवार का संग्रह हो सकता है, इस प्रकार उनका यह मत है कि परिवार के स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है किन्तु उनके प्रकार्यों में नही। ''रास'' (1973) ने 'दी हिन्दू फैमिली इन इट्स अर्बन सेटिंग में' बगलौर के हिन्दू परिवारों का अध्ययन किया है। इस अध्ययन में औद्योगिकीकरण और प्रौद्योगिकी परिवर्तन का हिन्दू परिवार पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है। रास का यह मत है कि परम्परागत हिन्दू समाज एक स्थिर समाज था जिसमें प्रभावों का आधिपत्य था और संयुक्त परिवार एक मूलभूत संस्था थी परन्तु भूमि पर अत्याधिक दबाव और नगरों में रोजगार के नवीन अवसर के कारण ग्रामीण जनसंख्या का नगर की ओर स्थानान्तरण होने लगा। नगरों में उत्पन्न होने वाले इस तनावपूर्ण परिस्थितियों का अध्ययन रास ने परिवार के पारिस्थितिकीय उपसंरचना, अधिकार और कर्तव्यों की उपसरंचना, शक्ति और सत्ता की उपसंरचना एवं भावनाओं की उपसरंचना के सन्दर्भ में अध्ययन किया है। इनके अतिरिक्त उन्होने शिक्षा एवं नवीन व्यवसायिक अवसरों का सदस्यों की आकांक्षाओ पर पड़ने वाले प्रभावों परिवार एवं वृहद नातेदारी समूह में भूमिका सम्बन्धों पर पड़ने वाले प्रभावों का भी अध्ययन किया है।

jkl का यह मत है कि सीमित परिवारों को प्रोत्साहित करने के नवीन कारक हैं, उच्च शिक्षा के अवसर, महत्वाकांक्षाओं का उन्नत आधार व्यवसायिक, गतिशीलता में वृद्धि, जीवन में उच्च स्तर की आकांक्षा, घटती हुई रूढ़िवादिता और स्वतन्त्रता की भावना तथा परिवार पुरातन प्रतिमान बनाये रखने में सहायक है। वे इस प्रकार है। स्नेह और उत्तरदायित्व की परम्परागत अभिकृति आर्थिक असुरक्षा और जीवन स्तर के उच्च मूल अध्ययन ने यह प्रदर्शित किया है कि आधुनिक युवतियां पुरूषों की तुलना में प्रथक परिवार बनाना पसन्द करती हैं। परिवार के क्रम

विभाजन के प्रतिमान में परिवर्तन हुआ है तथा उत्तरदायित्वों के प्रतिमान और सम्बन्धों के स्वरूप भी परिवर्तित हुए हैं। सीमित और भौतिक दूरी के कारण यह परिवर्तन सम्भव हुए हैं।

''आई0 पी0 देसाई'' (1964) की पुस्तक 'सन् आसपेक्ट ऑफ फेमिलिंग महुआ' हिन्दू परिवार की संयुक्तता का निर्धारण कई आधारों पर किया है। उनके अनुसार संयुक्तता निर्धारण का महत्वपूर्ण आधार परिवार में पीढ़ियों की संख्या है। एकाकी परिवार के अर्न्तगत उन्होने एक सदस्यीय परिवार से लेकर ऐसे सभी परिवारों को सम्मिलित किया है। जो दो पीढ़ियो के रक्त सम्बन्धी हैं। 'देसाई' किसी भी दशा में परिवार को संयुक्त परिवार की संज्ञा प्रदान करना नही चाहते है। जब तक कि वह परिवार तीन पीढ़ियों का न हो, पीढ़ी के अतिरिक्त पारिवारिक संयुक्तता के अन्य महत्वपूर्ण आधार (क)–नातेदारी सम्बन्ध (ख)–सम्पत्ति की संयुक्त प्रकृति (ग)–सम्बन्धों की पारस्परिकता उत्तरदायित्व और सम्बन्धों का जोड़ा है। इन आधारों का प्रयोग करते हुए 'देसाई' ने परिवार के पांच प्रकार बताये है। जिनमें संयुक्तता की मात्रा भिन्न भिन्न है। 'देसाई' ने सौराष्ट्र के महुआ नगर के अध्ययन द्वारा यह दिखलाया है। कि सम्बन्धों की पारस्परिकता के दृष्टिकोण से अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश परिवार संयुक्त है। जाति और धर्म, परिवार की संयुक्त प्रकृति से कोई विशेष घनिष्ठ सम्बन्ध नही रखता परन्तु व्यवसाय की संयुक्तता से निश्चित रूप से घनिष्ट सम्बन्ध है। कृषक और व्यवसायी जातियों में नवीन व्यवसायों में संलग्न व्यक्तियों की तुलना में संयुक्तता की मात्रा अधिक पायी गयी है। अध्ययन से यह विदित होता है कि परिवार की संयुक्तता की निरन्तरता का प्रमुख कारण सम्पत्ति है महुआ में काफी लम्बे समय से निवास करने वाले परिवारों में संयुक्तता की मात्रा अधिक पायी गयी है। देसाई का मत है कि महुआ की ग्रामीण विशेषताएं इनका प्रमुख कारण है।

'गोरे' (1968) ने भारतीय संयुक्त परिवार के आदर्श प्रारूप का चित्र प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार संयुक्त और एकाकी परिवार में आधारभूत अन्तर, भूमिका सम्बन्ध का अन्तर है। संयुक्त परिवार वैवाहिक सम्बन्धों को क्रम प्रदान करता है, सामाजीकरण प्रभाव वाली व्यवस्था की स्थापना करता है तथा विवाह द्वारा परिवार में सम्मिलित होने वाली स्त्रियों के पारिवारिक एकरूपता को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है संयुक्त परिवार का स्थायित्व रक्त सम्बन्धियों के मध्य पाये जाने वाला सम्बन्ध घनिष्ठ है। परिवार के पूर्व सदस्यों की रूचियों और स्वार्थों की एकता वयोवृद्ध पुरूष सदस्य को सत्ता के महत्व को व्यवस्था के रूप में संयुक्त परिवार की अन्य दो महत्वपूर्ण आवश्यकतायें हैं। 'गोरे' ने एकाकी परिवार को संयुक्त परिवार के अर्न्तगत पारिवारिक गत्यात्मकता की एक प्रक्रिया माना है। 'गोरे' ने बृहद सामाजिक व्यवस्था के सम्बन्ध में विश्लेषित करते हुए यह माना है कि संयुक्त परिवार भारतीय समाज की निम्नलिखित सामान्य संरचनात्मक विशेषताओं से अत्यन्त निकट रूप से सम्बन्धित रहा है।

1. कृषि पर आधारित मुद्रा विहीन आर्थिक व्यवस्था,
2. प्रौद्योगिकी का निम्न स्तर–जिसमें परिवार आर्थिक इकाईयों के रूप में प्रभावशाली उत्पादन और विनिमय का साधन।
3. परिवार में व्यवसायिक विभेदीकरण,
4. पुत्रो में सम्पत्ति का समान विभाजन और पुत्रियों को चल सम्पत्ति में समान अधिकार दिया जाना।
5. कम आयु में विवाह व्यक्ति पर आधारित अन्तर विवाह के नियम और परिवार या निकट सम्बन्धियों के द्वारा विवाह का तय किया जाना।
6. लिंगं भेद और सामाजिक जीवन में स्त्रियों की अधीनता की स्थिति।
7. मूल्यों की एक व्यवस्था जो निम्न प्रौधोगिकी विकास, वयोवृद्ध सदस्यों की सत्ता और परम्परा की महत्ता को स्थायित्व प्रदान करती है।

परम्परागत भारतीय सामाजिक संरचना में इन विशेषताओं के विपरीत, औद्योगिकी समाज की कुछ अन्य विशेषताएं है। जो संयुक्त परिवार को प्रभावित कर रही हैं। औद्योगिकी समाज की यह विशेषता निम्नलिखित है।

1. नातेदारी पर आधारित आर्थिक संगठन का विघटन।
2. अर्थव्यवस्था का मौद्रीकरण
3. एक नातेदारी समूहों के सदस्यों में व्यवसायिक विभेदीकरण और व्यवसायिक गतिशीलता।
4. शिक्षा की सुविधा और व्यवसायिक तैयारी की अवधि का विस्तार,
5. नगरीकरण, धर्म निरपेक्षीकरण और व्यक्तिवाद की वृद्वि।

'ए0एम0शाह' की पुस्तक 'हाउस होल्ड डाइमेशन ऑफ दी फेमिली इन इण्डिया' (1973) तथा उनके लेख बेसिक टर्न एण्ड कन्सेप्ट्स इन दी स्टडी ऑफ फेमिली इन इण्डिया (1964) में भारतीय परिवार की व्याख्या से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण सैधान्तिक और पद्धतिशास्त्रीय समाजशास्त्रीयों की विवेचना की गयी है। शाह का मत यह है कि परिवार का अध्ययन तभी भलीभांति किया जा सकता है जब इसका नातेदारी व्यवस्था के तहत अध्ययन किया जाए। उन्होने भारतीय परिवार को निकट रक्त सम्बन्धियों और उनकी स्त्रियों का एक निश्चित निवास स्थान संलग्न किया है। उनके अनुसार ''बेसिक ऑफ फेमिली इन आर्गनाइजेशन इन इण्डिया इज दी प्रिंसिपल ऑफ रेजिडेन्सियल यूनिटी ऑफ प्रेक्टिकल एण्ड देयर ब्राइटस''। शाह का यह मत है कि भारतीय परिवार के अध्ययन में तीन तत्वों पर विशेष रूप से बल दिया जाना चाहिए।

1. जनसंख्यात्मक कारक–जन्म, मृत्यु तथा सदस्यों का लिंग और आयु भेद सम्बन्धी अन्तर।
2. निवास सम्बन्धी मूल्य और आदर्श।
3. विभिन्न नातेदारी के अनुरूप अन्तः वैयक्तिक सम्बन्धों के प्रतिमान।

शाह ने परिवार की अवधारणात्मक स्पष्टता के लिए एकाकी परिवार, विस्तृत परिवार, बहु प्रकार्यात्मक संयुक्तता, सह निवासी और सह भोजन करने वाला संयुक्त परिवार सम्पत्ति समूह के रूप में संयुक्त परिवार की वैधानिक अवधारणा आदि की स्पष्ट धारणा पर बल दिया है। समाजशास्त्रीयो के दृष्टिकोण से शाह का महत्वपूर्ण योगदान परिवार व हाउस होल्ड में अन्तर स्थापित करना है। उक्त अध्ययनों के अतिरिक्त ''आर0डी0 लैमेट'' (1963) ''मिल्टन सिंगर'' (1968) ''माइकेल एमिस'' (1969) ''एम0एस0ए0 राव'' (1970) आदि के द्वारा किये गये अध्ययन भी महत्वपूर्ण हैं। इन अध्ययनों के द्वारा भारतीय संयुक्त परिवार और उनमें होने वाले परिवर्तनों पर प्रकाश पड़ता है।

उपर्युक्त अध्ययनों से सैद्धान्तिक मान्यताओं का प्रयोग करते हुए वर्तमान अध्ययन यह देखने का प्रयत्न करता है कि ग्रामीण परिवेश में संयुक्त परिवार अपनी संरचनात्मक और प्राकार्यात्मक विशेषताओं को बनाये रखे हुए है। तथा परिवर्तन की नवीन शाक्तियां विशेषकर नगरीकरण, शिक्षा और व्यवसाय ग्रामीण परिवार की आन्तरिक संरचना भूमि का सम्बन्ध और प्राकार्यात्मक विशेषताओं में परिवर्तन उत्पन्न कर रहे हैं। वर्तमान अध्ययन को निम्नलिखित खण्डों में विभाजित करके अध्ययन किया गया है।

खण्ड अ– परिवार की सरंचनात्मक विशेषताएं,
खण्ड ब– पारिवारिक निर्णय और सत्ता का महत्व
खण्ड स– पारिवारात्मक और सम्बन्धों की पारस्परिकता,
खण्ड द– पारिवारिक जीवन और मूल्यांकन अभिवृत्ति

[k.M v
ifjokj dh lajpkRed fo'k"krk,a

वर्तमान अध्ययन के प्रस्तुत खण्ड में उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप आकार पीढ़ियों की संख्या सम्बन्धों की प्रकृति आदि से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। आयु, शिक्षा के आधार पर परिवार का संरचनात्मक विशेषताओं में पाये जाने वाले अन्तर का विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण का उद्देश्य ग्रामीण परिवार को विकासशील संरचना की नवीन प्रवृत्तियों का ज्ञात कराना है।

4-8 % ifjokj dk Lo:i

साधारणतया परिवार को सदस्यों की संख्या के आधार पर दो वर्गों में बांटा जा सकता है विस्तृत संयुक्त परिवार और सीमित या एकाकी परिवार विस्तृत परिवार के अर्न्तगत तीन या चार पीढ़ी के निकट रक्त सम्बन्धियों को सम्मिलित किया जाना है। जो सामान्य सम्पत्ति, सामान्य निवास और रूचियों और स्वार्थों की समानता के प्रतीक होते हैं। सीमित या एकाकी परिवार के अर्न्तगत पति–पत्नी और उनके अविवाहित बच्चों का परिवार जो एक या दो पीढ़ी का होता है, उसे सम्मिलित किया जाता है। विस्तृत और सीमित परिवार की यह अवधारणा सामान्य रूप से अत्यन्त सरल और स्पष्ट दिखलायी पड़ती हैं। परन्तु अनुभवात्मक और सैद्धान्तिक दोनों ही स्तरों पर अवधारणाएं अत्याधिक विवादास्प्रद है। समाजशास्त्रीयों और मानवशास्त्रियों की सहमति इन दोनों ही प्रकार के परिवार के आधारभूत विशेषताओं और तत्वों के सम्बन्ध में देखने को नही मिलती। वस्तुतः परिवार का यह विभाजन परिवार की वाह्य विशेषताओं और भौतिक स्वरूप की ओर ही संकेत करता है परन्तु उसकी आन्तरिक विशेषताओं को स्पष्ट नही करता। भारतीय परिवारों के अध्ययन के द्वारा परिवार के विभाजन की उपर्युक्त विवादास्प्रद स्थिति और भी स्पष्ट हो जाती है। परम्परागत भारतीय समाज संयुक्त परिवार, पारिवारिक जीवन का सार्वभौमिक प्रतिमान रहा है। कार्वे (1953), कपाडिया (1956), रास (1973) देसाई(1964) संयुक्त परिवार निकट रक्त सम्बन्धियो का संकलन मात्र नही अपितु जीवन शैली का एक भाग है। वस्तुतः संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति की निरन्तरता और स्थायित्व का मूल स्तम्भ रहा है। यह व्यवस्था न केवल सदस्यों के अधिकार और कर्त्तव्यों को परिभाषित करती है, इसके द्वारा परिवार के सदस्यों की मनोवृत्ति, दृष्टिकोण, विचाराधारा और व्यवहार के तरीकों का नियमन भी होता है। परम्परागत भारतीय समाज में व्यक्ति के स्वतन्त्र व्यक्तित्व की कल्पना नही की जा सकती, उसका व्यक्तित्व परिवार के व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है।

धार्मिक लक्ष्यों और संस्कारों की पूर्ति परिवार के आभाव में सम्भव नही थी। आश्रम धर्म की पूर्ति यज्ञों का सम्पादन वंश परम्परा की निरन्तरता को बनाये रखना पारिवारिक जीवन के बिना सम्भव नही था। इस प्रकार भारतीय संयुक्त परिवार परम्परागत भारतीय संस्कृति का एक लघु संस्करण था। भारतीय ग्रामीण समुदाय के सन्दर्भ में संयुक्त परिवार का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रहा है इसकी महत्ता न केवल आर्थिक प्राकार्यों और सामाजीकरण और सामाजिक नियंत्रण के अधिकार के रूप में रही है बल्कि एक सामान्य हिन्दू के जीवन में इसका धार्मिक और संस्कारों का महत्व भी अत्याधिक प्रभाव पूर्ण रहा है। (दुबे : 167:131)

आधुनिक काल में संयुक्त परिवार की व्यवस्था अपने परम्परागत स्वरूप से विचलित होती जा रही है। औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का प्रसार, रोजगार और नौकरी के

नवीन अवसर व्यक्तिवादी मनोवृत्ति के विस्तार, स्त्रियों की शिक्षा के प्रसार और स्वतन्त्र मनोवृत्ति आदि कारकों के परिणामस्वरूप परम्परागत संयुक्त परिवार निरन्तर सीमित होते जा रहे हैं तथा पारिवारिक जीवन के नवीन स्वरूप जिसे एकाकी या सीमित परिवार के नाम से सम्बोधित किया जाता है, का विकास हो रहा है संयुक्त परिवार के परिवर्तन की यह प्रक्रिया यद्यपि नगरीय औद्योगिक केन्द्रों के परिवारों में अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। तथापि ग्रामीण परिवार परिवर्तन की व्यापक प्रक्रियाओं से अछूते नही है। ग्रामीण क्षेत्रों की भूमि पर पड़ता हुआ दबाव, नगरीय औद्योगिक केन्द्रों में रोजगार के नवीन अवसरों, जनसंख्या का स्थानान्तरण, शिक्षा और नगरीय सम्पर्क के परिणामस्वरूप नवीन जीवन की बढ़ती हुई महत्ता भूमि सम्पत्ति एवं उत्तराधिकार की नवीन व्यवस्था के कारण ग्रामीण संयुक्त परिवार के स्वरूपों में अनेक परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए हैं।

वर्तमान अध्ययन यह ज्ञात करने का प्रयत्न करता है कि ग्रामसभा में निवास करने वाले परिवारों की प्रकृति क्या है। यह देखने का प्रयत्न किया जा रहा है। सारिणी 4.8 के अवलोकन से यह विदित होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 38.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार संयुक्त परिवार के है। और 61.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार का स्वरूप एकाकी है। अतः अध्ययन में प्रयुक्त ग्रामसभाओं के अधिकांश परिवार सीमित आकार के एकाकी परिवार है। यह तथ्य ग्रामसभा की जनसंख्या के विशिष्ट सामाजिक, आर्थिक और जनंसख्यात्मक विशेषताओं से सम्बन्धित प्रतीत होता हैं। अतः परिवार के स्वरूप का विश्लेषण विभिन्न सामाजिक परिवर्त्यों के आधार पर किया जाना आवश्यक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.8 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4--8 mRrjnkrkvks ds ifjokj dk Lo:i

Ikfjokj	*vkofRr*	*izfr'kr*
संयुक्त	88	38.2
एकाकी	142	61.8
योग	230	100.0

4-8-1 ½ lkekftd ifjoR;ksa ,oa ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 4.8.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 31.7 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार और 68.3 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार से सम्बन्धित है। मध्यम आयु समूह के 34.7 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्ता परिवार और 65.3 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार से सम्बन्धित हैं। वृद्ध आयू समूह के 56.3 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार और 43.7 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार से सम्बन्धित हैं। अतः स्पष्ट है कि युवा आयु समूह और वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाता क्रमशः परिवार के आधुनिक और परम्परागत प्रतिमानों का प्रतिनिधित्व करते हैं, वृद्ध पीढ़ी के सदस्य परिवार के मुखिया के रूप में विस्तृत परिवारों की निरन्तरता को बनाए हुए है। जबकि युवा पीढ़ी के सदस्य सम्भवतः अपनी व्यक्तिवादी स्वतन्त्र मनोवृत्ति, आर्थिक स्वतन्त्रता आदि कारणों के परिणामस्वरूपा एकाकी परिवार की ओर अधिक आकृष्ट हैं।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित शैक्षणिक स्तरों के उत्तरदाताओं में से 36.6 प्रतिशत संयुक्त परिवार से 63.4 प्रतिशत एकाकी परिवार से सम्बद्ध है। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं में से 22.3 प्रतिशत संयुक्त परिवार, 77.7 प्रतिशत एकाकी परिवार के सदस्य हैं। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट के शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं में से 55.9 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार के, 44.1 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार के सदस्य हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं में से 63.0 प्रतिशत संयुक्त परिवार के तथा 37.0 प्रतिशत एकाकी परिवार के सदस्य हैं। उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि उच्च शैक्षणिक स्थिति के उत्तरदाताओं का सम्बन्ध संयुक्त परिवार से अधिक पाया गया है। जबकि अशिक्षित और निम्न स्तर के उत्तरदाताओं का सम्बन्ध एकाकी परिवार से अधिक है। यह तथ्य उत्तरदाताओं के जातिगत विवरण से सम्बन्धित प्रतीत होता है। पिछड़ीजाति और अनुसूचितजाति के परिवारों की अधिकता है जिनका झुकाव एकाकी परिवार की ओर अधिक है इन्ही जातियों के उत्तरदाता भी अशिक्षित या निम्न शिक्षा प्राप्त हैं। अतः उनकी अधिकता एकाकी परिवार में पायी गयी है। इसके विपरीत उच्चजाति के सदस्य जो अपेक्षाकृत उन्नत शैक्षणिक स्थिति के हैं। उनकी अधिकता संयुक्त परिवार में अधिक पायी गयी है।

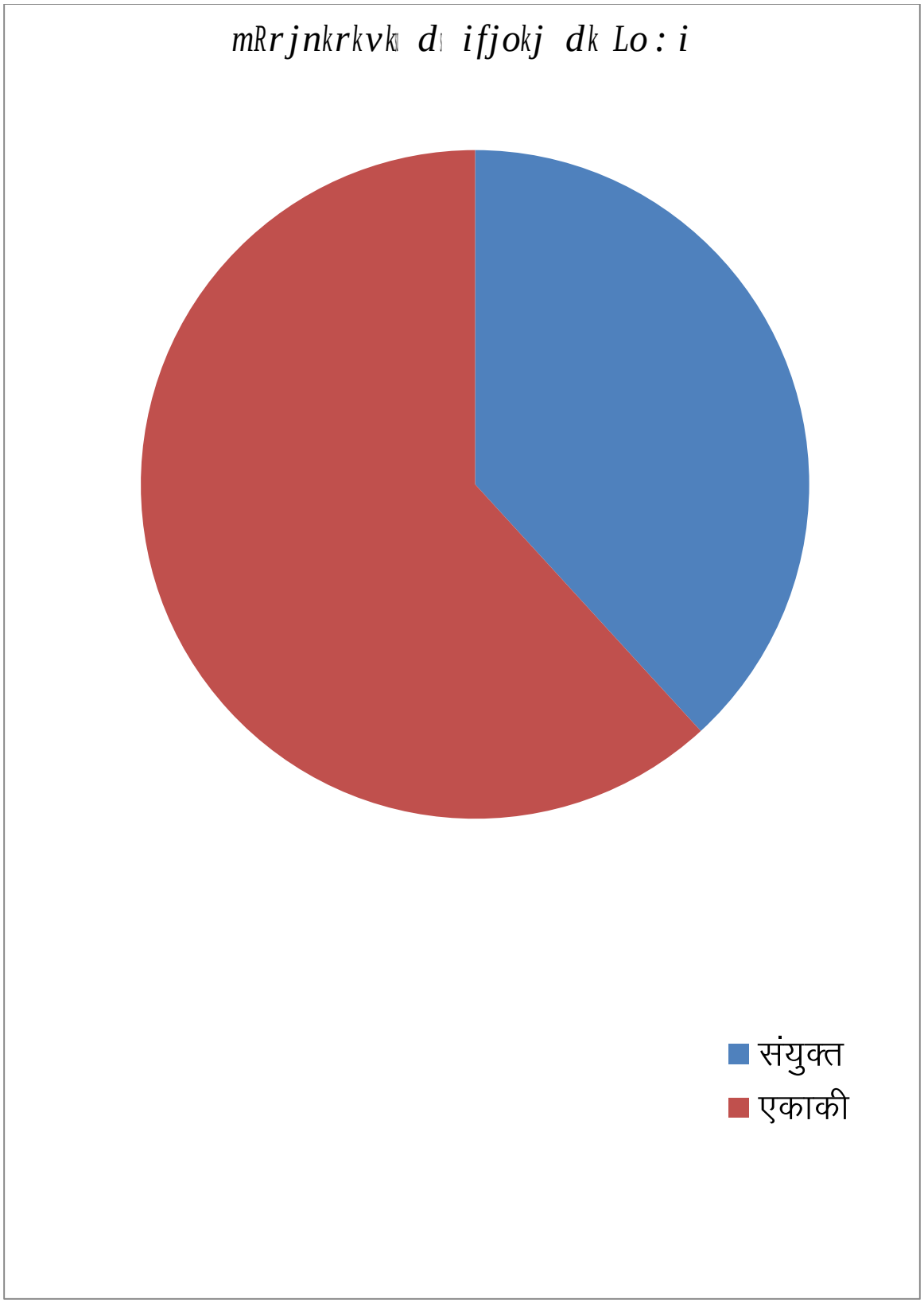

fp= l[;k & 1-9

Tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की जातिगत पृष्ठभूमि के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 59.6 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार के, 40.4 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार के सदस्य हैं। पिछड़ीजाति के 37.8 प्रतिशत संयुक्त परिवार के, 62.2 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार के सदस्य हैं। अनुसूचितजाति के 30.2 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार के, तथा 69.8 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी पविार के सदस्य हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि उच्चजाति के उत्तरदाता का संयुक्त परिवार की ओर अधिक झुकाव रहता है जबकि पिछड़ी और अनुसूचितजाति के सदस्यों में एकाकी परिवार की अधिकता पायी गयी है। यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि एकाकी परिवार वाले अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाता पिछड़ीजाति व अनुसूचितजाति के भी है। तथा अशिक्षित या निम्न शिक्षा प्राप्त ही नही बल्कि उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति भी निम्न है परिवर्तन के नवीन कारकों विशेषकर शिक्षा और नगरीय सम्पर्क की सम्पूर्णता के होते हुए भी इन जाति के उत्तरदाताओं की एकाकी परिवार से सम्बद्धता परिवर्तन की नवीन परिस्थितियों का द्योतक है। यद्यपि निम्न जातियों में सम्पत्ति का आभाव, परस्पर परिवार में कलह की अधिकता, धार्मिक संस्कारों और सामाजिक मूल्यों, आदर्शों तथा परम्पराओं की प्रभावशाली एकरूपता इत्यादि कारणों ने निम्न जातियों को एकाकी परिवारों की ओर प्रोत्साहित किया है। इसके विपरीत अध्ययन में उच्चजाति के उत्तरदाताओं में यद्यपि परम्परागत संयुक्त परिवार की अधिकता पायी गयी है। तथापि एकाकी परिवार की मात्रा में निरन्तर वृद्धि हो रही है। उच्चजाति के सदस्यों का एकाकी परिवार की ओर बढ़ता हुआ झुकाव वस्तुतः उनमें बढ़ती हुई शिक्षा, व्यवसायिक विभिन्नता, नगरीय सम्पर्क और नवीन मूल्यों में निश्चित रूप से सम्बन्धित प्रतीत होता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.8.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

4-8-2 % ifjokj dk Lo:Ik vkj ukrsnkjh lEcU/k

परिवार के स्वरूप का वर्गीकरण जिन आधारों पर किया जाता है। उनमें से नातेदारी सम्बन्ध एक महत्वपूर्ण आधार है। इस आधार पर एकाकी और संयुक्त परिवारों को पांच भागों में बांटा गया है।

1. mi ,dkdh ifjokj %&

   ऐसा एकाकी परिवार जिसमें केवल पति–पत्नी हों तथा निकट सम्बन्धी या पुत्र–पुत्री अलग हो चुके हैं।

2. ,dkdh ifjokj %&

   ऐसा परिवार जिसमें पति–पत्नी सन्तान या बिना सन्तान के सम्बन्धी या बिना सम्बन्धी साथ रहे हों।

lkfj.kh % 4-8-1 % lkekftd ifjoR;l ,o mRrjnkrkvk d ifjokj dk Lo:i

Lkkekftd ifjoR;l	l;Dr	,dkdh	;kx
vk;q			
20–35	39 31.7	84 68.3	123 100.0
36–50	18 34.7	34 65.3	52 100.0
51 से ऊपर	31 56.3	24 43.7	55 100.0
f'k{kk			
अशिक्षित	15 36.6	26 63.4	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	23 22.3	80 77.7	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	33 55.9	26 44.1	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	17 63.0	10 37.0	27 100.0
Tkkfr			
उच्चजाति	25 59.6	17 40.4	42 100.0
पिछड़ीजाति	31 37.8	51 62.2	82 100.0
अनुसूचितजाति	32 30.2	74 69.8	106 100.0
योग	88 38.3	142 61.7	230 100.0

3. <u>*dkyVy l;Dr*</u> %&

दो या दो से अधिक भाईयों का परिवार जो सम्बन्धी या बिना सम्बन्धी के साथ रहे हों।

4. <u>*yhfu;y l;Dr*</u> %&

दो या दो से अधिक वंशानुगत रूप से सम्बन्धित (पिता–पुत्र) के एकाकी परिवार जिसमें सम्बन्धी या सम्बन्धी न हो।

5. <u>*dkyVy yhfu;y l;Dr*</u> %&

ऐसे एकाकी परिवारों से मिलकर बनता है जो लीनियल और कोलेट्रली आपस में सम्बन्धित हों तथा जिनमें सम्बन्धी हों या न हों।

उपर्युक्त वर्गीकरण के आधार पर तथ्यों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि अध्ययन में सम्मिलित 2.6 प्रतिशत उपएकाकी प्रकृति के हैं जिनमें केवल पति पत्नी निवास करते हैं। ऐसे परिवारों में या तो सन्तान नही है। या पृथक निवास कर रही हैं। 59.1 प्रतिशत एकाकी प्रकृति के है इस प्रकार के परिवारों में पति–पत्नी के साथ उनके अविवाहित सन्तान या अन्य निकट सम्बन्धी निवास कर रहे है। 4.4 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं जहां दो सगे भाईयों का परिवार सम्मिलित रूप से निवास कर रहे हैं। 24.3 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं जिनमें पिता पुत्र और उनकी सन्तान या अन्य निकट सम्बन्धी निवास कर रहे हैं। 9.6 प्रतिशत संयुक्त परिवार की प्रकृति मिश्रित है ऐसे परिवार में एक ओर पिता पुत्र और दूसरी ओर सहोदर भाईयों के परिवार सम्मिलित रूप से निवास कर रहे हैं।

उपर्युक्त अध्ययन में तथ्यों का विवरण यह स्पष्ट करता है कि अध्ययन में सम्मिलित एकाकी परिवार सामान्यतः दो पीढ़ियो का परिवार है जिसमें पति–पत्नी और उनकी अविवाहित सन्तान निवास कर रही है। कुछ परिवारों में विवाहित सन्तान भी पिता के साथ निवास करती है। ऐसे परिवारों में विवाहित सन्तान पिता पर आश्रित हैं। पिता के व्यवसाय में महत्वपूर्ण रूप से सहयोग प्रदान कर रही हैं। जहां तक अध्ययन में सम्मिलित संयुक्त परिवार की प्रकृति का प्रश्न है ऐसे परिवारों में पिता पुत्र और उनके पुत्र वाले परिवारों की अधिकता है। इन परिवारों को लीनियल संयुक्त कहा गया है। ये साधारणतया तीन या चार पीढ़ी के परिवार है। तथा ऐसे परिवारों में एक से अधिक जीवकोपार्जन करने वाले सदस्य है। जो एक या एक से अधिक व्यवसायों में संलग्न है। यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि सहोहर भाईयों वाला एकाकी परिवार अत्यन्त सीमित मात्रा में पाया गया है। यह तथ्य यह दर्शाता है कि स्वतन्त्र रूप से जीविकोपार्जन करने वाले भाईयों के परिवार में विभाजन अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है और उनकी प्रकृति स्वतन्त्र रूप से एकाकी परिवार स्थापित करने की है। इसके विपरीत लीनियल संयुक्त परिवार की अधिकता यह दर्शाती है कि ऐसे परिवारों में न केवल वयोवृद्ध सदस्यों के

महत्ता और प्रभुता अपेक्षाकृत अधिक है बल्कि सम्पत्ति, आय के स्त्रोत, सम्बन्धों की पारस्परिकता में संयुक्तता की मात्रा अधिक पायी जाती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.8.2 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-8-2 % mRrjnkrkvksa dk ukrsnkjh ij vk/kkfjr ifjokj dk Lo:i

Ikfjokj dk izdkj	*vko`fRr*	*izfr'kr*
उपएकाकी	6	2.6
एकाकी	136	59.1
कोलेट्रल संयुक्त	10	4.4
लीनियल संयुक्त	56	24.3
लीनियल कोलेट्रल संयुक्त	22	9.6
योग	230	100.0

4-8-3 % lkekftd ifjoR;Z ,oa ukrsnkjh ij vk/kkfjr ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के नातेदारी पर आधारित परिवार के स्वरूप पर उनके सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए सम्बन्धित तथ्य सारिणी 4.8.3 में क्रमबद्ध वर्णित किये गये हैं।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 67.4 प्रतिशत परिवार एकाकी प्रकृति के, 20.3 प्रतिशत लीनियल संयुक्त प्रकृति के हैं। मध्यम आयु समूह के 67.3 प्रतिशत परिवार एकाकी प्रकृति के 15.4 प्रतिशत परिवार लीनियल संयुक्त प्रकृति के हैं। वृद्ध आयु समूह के 32.7 प्रतिशत एकाकी प्रकृति के 41.9 प्रतिशत लीनियल संयुक्त प्रकृति के, और 18.2 प्रतिशत परिवार लीनियल कोलेट्रल संयुक्त प्रकृति के हैं। तथ्यों का विवरण दो महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों की ओर संकेत करता है प्रथम युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं की प्रवृत्ति एकाकी परिवार की ओर अधिक है। व्यवसाय की पृथकता, स्वतन्त्रता और नवीन मनोवृत्ति इत्यादि कारक सम्भवतः युवा आयु समूह के सदस्यों के परिवारों का तुलनात्मक रूप से अधिक संख्या में लीनियल संयुक्त

और लीनियल कोलेट्रल संयुक्त होना यह दर्शाता है कि किन परिवारों में सम्पत्ति और हित की संयुक्तता के साथ–साथ परिवार में वृद्ध सदस्यों की महत्ता अत्याधिक है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 68.3 प्रतिशत परिवार एकाकी और 17.0 प्रतिशत लीनियल संयुक्त प्रकृति के हैं। प्राइमरी/जूनियर वर्ग के उत्तरदाताओं में से 75.8 प्रतिशत परिवार एकाकी और 15.6 प्रतिशत लीनियल संयुक्त प्रकृति के हैं। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त वर्ग में 23.8 प्रतिशत परिवार एकाकी और 50.9 प्रतिशत लीनियल संयुक्त प्रकृति के हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 59.3 प्रतिशत एकाकी 11.1 प्रतिशत लीनियल संयुक्त और 22.2 प्रतिशत लीनियल कोलेट्रल संयुक्त प्रकृति के हैं। तथ्यों का सह सम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि एकाकी परिवार की मात्रा निम्न शिक्षा प्राप्त और अशिक्षित वर्ग के उत्तरदाताओं में अपेक्षाकृत अधिक पायी गयी है। यह तथ्य इन उत्तरदाताओं की जातिगत स्थिति से सम्बन्धित है।

Tkfr

वर्तमान अध्ययन में जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के उत्तरदातओं में से 2.3 प्रतिशत परिवार उपएकाकी, 40.6 प्रतिशत एकाकी प्रकृति के, 7.1 प्रतिशत परिवार कोलेट्रल संयुक्त, 42.9 प्रतिशत लीनियल संयुक्त, 7.1 प्रतिशत लीनियल कोलेट्रल संयुक्त के है। इस प्रकार उच्चजाति के परिवारों में एकाकी परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार की अधिकता है और संयुक्त परिवार में लीनियल संयुक्त परिवार अधिक मात्रा में पाये गये हैं। पिछड़ीजाति के परिवारों में 6.0 प्रतिशत उपएकाकी 58.7 प्रतिशत एकाकी प्रकृति के 6.0 प्रतिशत परिवार कोलेट्रल संयुक्त प्रकृति के 17.1 प्रतिशत लीनियल संयुक्त और 12.2 प्रतिशत लीनियल कोलेट्रल संयुक्त प्रकृति के हैं। अनुसूचितजाति के परिवारों में 67.0 प्रतिशत परिवार एकाकी प्रकृति के, 1.9 प्रतिशत कोलेट्रल संयुक्त, 22.6 प्रतिशत लीनियल संयुक्त, 8.5 प्रतिशत लीनियल कोलेट्रल संयुक्त परिवार के हैं। अतः स्पष्ट है कि एकाकी परिवार की अधिकता पिछड़ीजाति व अनुसूचितजाति के उत्तरदाताओं में अधिक पायी गयी है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.8.3 में किया गया है।

lkfj.kh 4-8-3 % lkekftd ifjoR;l ,oa ukrsnkjh ij vk/kkfjr ifjokj dk Lo:iA

Lkkekftd ifjoR;l	*mi,dkdh*	*,dkdh*	*dkyVy ,dkdh*	*yhfu;y l;Dr*	*Ykhfu;y dkyVy l;Dr*	*;kx*
vk;						
20—35	2 1.6	83 67.4	4 3.2	25 20.3	9 7.4	123 100.0
36—50	— —	35 67.3	6 11.6	8 15.4	3 5.7	52 100.0
51 से ऊपर	4 7.2	18 32.7	—	23 41.9	10 18.2	55 100.0
f'k{kk						
अशिक्षित	1 2.4	28 68.3	2 4.9	7 17.0	3 7.4	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	2 1.9	78 75.8	2 1.9	16 15.6	5 4.8	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	3 5.0	14 23.8	4 6.8	30 50.9	8 13.5	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	— —	16 59.3	2 7.4	3 11.1	6 22.2	27 100.0
Tkkfr						
उच्चजाति	1 2.3	17 40.6	3 7.1	18 42.9	3 7.1	42 100.0
पिछड़ीजाति	5 6.0	48 58.7	5 6.0	14 17.1	10 12.2	82 100.0
अनुसूचितजाति	— —	71 67.0	2 1.9	24 22.6	9 8.5	106 100.0
योग	6 2.6	136 59.1	10 4.4	56 24.3	22 9.6	230 100.0

4-9 Ikfjokj esa ihf<+;ksa dh l[;k

वर्तमान अध्ययन में पारिवारिक संरचना के अध्ययन में पीढ़ियों की संख्या का अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान है। कुछ विचारकों ने पीढ़ियों को ही पारिवारिक संयुक्ता का महत्वपूर्ण निर्धारक माना है। (देसाईः1964) पीढ़ियों के आधार पर न केवल संयुक्त परिवार की संख्या, सदस्यों के अन्तः सम्बन्ध का भी निर्धारण होता है। परम्परागत ग्रामीण परिवार में पीढ़ियो की

संख्या तीन या चार तक रही है और वृद्ध पीढ़ी के सदस्य की सत्ता अधिकतर केन्द्र बिन्दु रही है। नवीन सामाजिक परिस्थितियों ने पारिवारिक संरचना में जो परिवर्तन उत्पन्न किया है उनका प्रभाव पीढ़ियों की संख्या पर पड़ता है। सीमित आकारों के परिवारों में सदस्यों के पारस्परिक भूमिका सम्बन्ध पीढ़ियों की संख्या का अध्ययन परिवार की आन्तरिक संरचना और भूमिका सम्बन्ध के अध्ययन के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 9.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में एक पीढ़ी के सदस्य निवास करते है।, 50.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में दो पीढ़ी के सदस्य निवास करते है।, 25.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में तीन पीढ़ी के सदस्य निवास करते है। और 15.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में चार पीढ़ी के सदस्य निवास करते है। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन दो पीढ़ी वाले परिवारों की अधिकता है जो सामान्यतः एकाकी प्रकृति के है। यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि अध्ययन में सम्मिलित संयुक्त परिवारों में तीन पीढ़ी के सदस्य निवास करते है कुछ ऐसे भी संयुक्त परिवार है जिनमे दो पीढ़ी के सदस्य निवास करते है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.9 में किया गया है।

lkfj.kh 4-9 mRrjnkrkvk d ifjokj e ihf<+;k dh l[;k

ihf<+;k dh l[;k	*vko`fRr*	*ifr'kr*
एक पीढ़ी	21	9.1
दो पीढ़ी	116	50.5
तीन पीढ़ी	58	25.2
चार पीढ़ी	35	15.2
योग	230	100.0

4-9-1 % Lkkekftd ifjoR;l ,o ifjokj e ihf<+;k dh l[;k

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार में पीढ़ियों की संख्या पर उनके सामाजिक परिवर्त्य का प्रभाव देखने के लिए सम्बन्धित तथ्यों को सारिणी 4.9.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 60.9 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह के 48.1 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह के 29.1 प्रतिशत परिवारों में दो पीढ़ी के सदस्य निवास करते है। इस प्रकार युवा आयु पीढ़ी के उत्तरदाताओं के परिवार तुलनात्मक रूप से अधिक मात्रा में दो पीढ़ी के है। तीन पीढ़ी वाले परिवारों की संख्या युवा (18.7 प्रतिशत) और मध्यम (25.0 प्रतिशत) की तुलना में वृद्ध आयु समूह (40.1 प्रतिशत) में पीढ़ी वाले सदस्य अधिक पाये गये हैं। यह तथ्य दर्शाता है कि युवा पीढ़ी के सदस्य व्यक्तिवादी और स्वतन्त्र मनोवृत्ति के होते चले जा रहे है। जो विस्तृत

परिवारों के स्थान पर सीमित आकार के परिवार को अधिक पसन्द करते है अर्थात परम्परागत मनोवृत्ति का उन्मूलन तथा नवीन आकांक्षाओं का आत्मसातीकरण आधुनिकीकरण के प्रभाव को दर्शाता है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि दो पीढ़ी वाले परिवारों की संख्या अशिक्षित उत्तरदाताओं के वर्ग में 61.0 प्रतिशत, प्राइमरी जूनियर शिक्षा वर्ग में 64.0 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग में 20.3 प्रतिशत और स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त वर्ग में 48.1 प्रतिशत पायी गयी है। इस प्रकार अशिक्षित व निम्न शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं के परिवारों में पीढ़ियो की संख्या लगभग कम पायी गयी है। यह अशिक्षित निम्न शिक्षा प्राप्त वर्ग के उत्तरदाताओं की निम्न जातिगत स्थिति से मुख्य रूप से सम्बन्धित है। तीन पीढ़ी वाले परिवारों की अधिकता स्नातक/स्नातकोत्तर वर्ग में 37.0 प्रतिशत और चार पीढ़ियों की अधिकता, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त वर्ग में 25.5 प्रतिशत पायी गयी है। अतः मध्यम और उच्च उत्तरदाताओं के परिवार में पीढ़ियों की संख्या निम्न शिक्षा प्राप्त और अशिक्षित उत्तरदाताओं की तुलना में अधिक पायी गयी है।

t kfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के जातिगत स्थिति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि दो पीढ़ी वाले परिवारों में उच्च जाति के 19.0 प्रतिशत, पिछड़ीजाति के 54.9 प्रतिशत और अनुसूचितजाति के 59.9 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। तीन पीढ़ी व चार पीढ़ी वाले परिवार उच्चजाति में क्रमशः 47.6 प्रतिशत तथा 21.5 प्रतिशत है।, इस प्रकार उच्चजाति में पीढ़ियों की संख्या अधिक पायी गयी है। तथ्यों के द्वारा पहले ही स्पष्ट हो चुका है कि निम्न जाति के उत्तरदाताओं के परिवार एकाकी परिवार से सम्बन्धित हैं। इसी के अनुरूप निम्न जातियों के उत्तरदाताओं के परिवार में पीढ़ियों की संख्या कम और उच्चजाति के उत्तरदाताओं के परिवारों में पीढ़ियो की संख्या अधिक पायी गयी है। इस प्रकार निम्न जातियों में एकाकी परिवारों की अधिकता यह दर्शाती है कि निम्न जातियों में परम्परागत मान्याताओं व जीवन पद्धति व मनोवृत्तियों में परिवर्तन हो रहा है। जो आधुनिकीकरण का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.9 में किया गया है।

lkfj.kh % 4-9-1 % lkekftd ifjoR;l ,o ifjokj e ihf<+;k dh l[;k

lkekftd ifjoR;l	,d ih<+h	nks ih<+h	rhu ih<+h	pkj ih<+h	;ksx
vk;q					
20–35	12 9.8	75 60.9	23 18.7	13 10.6	123 100.0
36–50	6 11.6	25 48.1	13 25.0	8 15.3	52 100.0
51 से ऊपर	3 5.4	16 29.1	22 40.1	14 25.4	55 100.0
f'k{kk					
अशिक्षित	3 7.3	25 61.0	8 19.6	5 12.1	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	11 10.7	66 64.0	15 14.6	11 10.7	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	7 11.9	12 20.3	25 42.3	15 25.5	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	–	13 48.1	10 37.0	4 14.9	27 100.0
Tkkfr					
उच्चजाति	5 11.9	8 19.0	20 47.6	9 21.5	42 100.0
पिछडी जाति	6 7.3	45 54.9	13 15.9	18 21.9	82 100.0
अनुसूचितजाति	10 9.5	63 59.5	25 23.5	8 7.5	106 100.0

[k.M&c

ikfjokfjd fu.k; vkj lRrk dk egRo

भारतीय संयुक्त परिवार की प्रमुख विशेषता पारिवारिक शक्ति का केन्द्रीकरण वयोवृद्ध पुरूष के हाथों में केन्द्रित होता है (रासः1973ः91) स्त्रियों और बालकों की तुलना में पुरूष और विभिन्न पुरूष सदस्यों के मध्य वयोवृद्ध पुरूष की महत्ता सर्वोपरि है। ,e0,l0 xkSj के अनुसार, परिवार में सत्ता का निर्धारण आयु की वरीयता के आधार पर किया जाता रहा है। कृषक समाजों में चूंकि वृद्ध व्यक्ति को जीवन के अधिक अनुभव प्राप्त होते हैं। अतः परिवार में

उनका स्थान सर्वोच्च होता है। संयुक्त परिवार में वयोवृद्ध सदस्य की सत्ता को संस्थागत स्वरूप प्राप्त है। (गोरेः1968:13–14)

पारिवारिक जीवन में आयुक्रम की वरीयता या निम्नता परिवार के सदस्यों के प्रस्थिति का निर्धारण करती है। संयुक्त परिवार में आयु की वरीयता की सवार्धिक महत्वपूर्ण भूमिका यह है कि इसके कारण पिता की सत्ता अपने पुत्र पर परिवार के वयोवृद्ध सदस्यों की तुलना में शिथिल हो जाती है। यह स्थिति संयुक्त परिवार को एकाकी परिवार की ओर बढ़ने से रोकती है। (गोरेः1968:14)

पारिवारिक सत्ता का प्रगतिकरण पारिवारिक निर्णय की प्रक्रिया में सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप से होता है। पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण प्रश्न और समस्याओं के सम्बन्ध में लिये गये निर्णय पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करते हैं। परम्परागत समाज में विवाह, पारिवारिक निर्णय का सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। नवीन परिस्थितियों में शिक्षा, व्यवसाय, सम्पत्तियों का संचयन, संसाधनो की उपलब्धता व अन्य सभी नवीन व्यवसाय पारिवारिक निर्णय के अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। संयुक्त परिवार की आधारभूत मान्यताओं के अनुरूप इन सभी क्षेत्रों में वयोव्रद्ध का प्रभाव सर्वाधिक महत्वपूर्ण होना चाहिए, परन्तु नवीन आर्थिक व उदीयमान नवीन मनोवृत्ति तथा परिस्थिति और परिवर्तित सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं के कारण सन्तान के पिता जीवकोपार्जन करने वाले सदस्य और कभी–कभी सम्बन्धित व्यक्ति का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। एकाकी परिवार में तो वयोवृद्ध सदस्य की मात्रा लगभग समाप्त हो गयी है। अतः वर्तमान अध्ययन शिक्षा, व्यवसाय, विवाह, भौतिक आधुनिक संसाधनों की उपलब्धता सम्पत्तियों का संचयन तथा नवीन मनोवृत्ति द्वारा निर्मित वे सभी क्रियान्वयन हेतु परिस्थितियों के सन्दर्भ में यह ज्ञात करने का प्रयत्न करता है। कि पारिवारिक सत्ता और निर्णय किस मात्रा में परम्परागत सातत्य बनाये हुए है तथा किस मात्रा में नवीन प्रवृत्तियों का विकास हो रहा है, वयोवृद्ध सदस्य की सत्ता व अधिकारों में किस मात्रा में शिथिलता उत्पन्न हुयी है और किस सीमा तक सम्बन्धित व्यक्ति या सन्तान के पिता को स्वतन्त्र निर्णय का अधिकार प्राप्त है।

4-10 % 'k{kf.kd fu.k;

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से साक्षात्कार कर यह पूंछा गया कि सन्तानो की शिक्षा सम्बन्धी निर्णय में परिवार का कौन सा सदस्य महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 13.0 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य, 47.9 प्रतिशत परिवारों में सम्बन्धित सन्तान के पिता, 18.7 प्रतिशत परिवारों में सम्बन्धित सन्तान की माता और 20.4 प्रतिशत परिवारों में परिवार का सबसे शिक्षित व्यक्ति सन्तानों की शिक्षा के सम्बन्ध में निर्णय लेने का कार्य करता है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य की

परम्परागत भूमिका सीमित हो गयी है और उनके स्थान पर सम्बन्धित सन्तान के पिता, माता व परिवार के सबसे शिक्षित व्यक्ति का महत्व बढ़ गया है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.10 में किया गया है।

lkfj.kh 4-10 % mRrjnkrkvk dk 'k{kf.kd fu.k;

'k{kf.kd fu.k;	vkofRr	ifr'kr
वयोवृद्ध द्वारा	30	13.0
सन्तान के पिता	110	47.9
सन्तान की माता	43	18.7
परिवार का सबसे शिक्षित व्यक्ति	47	20.4
योग	230	100.0

4-10-1 % Lkkekft d ifjoR;l ,o 'k{kf.kd fu.k;

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के शैक्षणिक निर्णय पर उनके सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए सम्बन्धित तथ्यों को सारिणी 4.10.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;l

आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 54.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सन्तान के पिता, 12.2 प्रतिशत उत्तरदाता के परिवार में वयोवृद्ध सदस्य 18.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में शिक्षित सदस्य और 14.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सन्तान की माता शैक्षणिक निर्णय लेने का कार्य करती हैं। मध्यम आयु समूह के 42.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सन्तान के पिता 13.5 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य 15.4 प्रतिशत परिवारों में शिक्षित सदस्य, 28.8 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता शैक्षणिक निर्णय लेने का कार्य करती हैं। वृद्ध आयु समूह में 38.2 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के, पिता 14.6 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य, 29.0 प्रतिशत परिवारों में शिक्षित सदस्य और 18.2 प्रतिशत परिवारों में सन्तान की माता शैक्षणिक भविष्य का निर्धारण करती हैं। अतः स्पष्ट है कि तीनों आयु समूह में सन्तान के पिता, व अंशतः माता व परिवार का सबसे शिक्षित व्यक्ति सन्तानों की शिक्षा के निर्णय लेने का कार्य करते हैं। यह प्रवृत्ति अपेक्षाकृत युवा आयु समूह में सबसे अधिक दृष्टिगोचर होती हैं। वयोवृद्ध सदस्यों की महत्ता जितनी वृद्ध आयु समूह के परिवारों में पायी गयी है। उतनी युवा व मध्यम आयु समूह के उत्तरदाताओं में नही।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 53.8 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 14.6 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य 17.0 प्रतिशत परिवारों में शिक्षित सदस्य और 14.6 प्रतिशत परिवारों में सन्तान की माता शैक्षणिक निर्णय लेने का कार्य करती हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा प्राप्त वर्ग में 49.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सन्तान के पिता, 13.6 प्रतिशत परिवार में शिक्षित सदस्य 19.4 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता शैक्षणिक कार्य के लिए निर्णय करती है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त वर्ग में से 42.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सन्तान के पिता, 11.9 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 25.5 प्रतिशत परिवार में शिक्षित सदस्य 20.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में शैक्षणिक निर्णय का कार्य सन्तान की माता करती है। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग में 44.5 प्रतिशत उत्तरदाता के परिवार में सन्तान के पिता, 11.1 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य 25.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार का शिक्षित सदस्य तथा 18.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सन्तान की माता शैक्षणिक निर्णय लेने का कार्य करती हैं। अतः स्पष्ट है कि सभी शैक्षणिक वर्ग के उत्तरदाताओं में सन्तान की शिक्षा सम्बन्धी निर्णय का कार्य सन्तान के पिता द्वारा मुख्य रूप से लिया जाता है। इस सम्बन्ध में शिक्षित सदस्य द्वारा शैक्षणिक निर्णय उत्तरदाताओं के परिवार में तुलनात्मक रूप से अधिक मात्रा में लिया जाता है।

t kfr

वर्तमान अध्ययन में जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के उत्तरदाताओं में 35.7 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 21.5 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 28.6 प्रतिशत परिवार में शिक्षित सदस्य, 14.3 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता शैक्षणिक निर्णय का कार्य करती हैं। पिछड़ीजाति के 42.6 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 14.7 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता, शैक्षणिक भविष्य का निर्धारण करती है। अनुसूचितजाति के 56.6 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता 8.5 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 11.3 प्रतिशत परिवार में शिक्षित सदस्य तथा 23.6 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता शैक्षणिक निर्णय लेने का कार्य करती हैं। तथ्यों का विवरण यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति और पिछड़ीजाति की तुलना में उच्चजाति के परिवार में वयोवृद्ध सदस्य शैक्षणिक निर्णय लेने का कार्य करते हैं। यह तथ्य उच्चजाति के संयुक्त परिवार में और पिछड़ी तथा अनुसूचितजाति एकाकी परिवार की अधिकता निकट रूप से सम्बन्धित दिखाई देती है। संयुक्त परिवार में सीमित मात्रा में वयोवृद्ध सदस्यों की मात्रा बनी हुई है। जबकि एकाकी परिवारों में सन्तान के पिता जो बहुधा परिवार के मुखिया भी है। युवा पीढ़ी के शैक्षणिक भविष्य के सम्बन्ध में निर्णय करता है।

ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि संयुक्त परिवार के 37.5 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 22.8 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 23.8 प्रतिशत परिवार में सबसे शिक्षित सदस्य तथा 15.9 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता शैक्षणिक निर्णय का कार्य करती हैं। एकाकी परिवार में 54.2 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 7.0 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 18.3 प्रतिशत परिवार में शिक्षित सदस्य, 20.0 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता के द्वारा शैक्षणिक निर्णय लिया जाता है। अतः स्पष्ट है कि एकाकी परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार में वयोवृद्ध सदस्यों की महत्ता अधिक है। यद्यपि न केवल एकाकी परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार में भी सन्तान के पिता व माता की महत्ता शैक्षणिक निर्णय के सम्बन्ध में बढ़ी है तथापि यह प्रवृत्ति संयुक्त परिवार की तुलना में एकाकी परिवार में अत्याधिक स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि संयुक्त व एकाकी दोनों ही प्रकार के परिवारों में परिवार के सबसे शिक्षित सदस्य की महत्ता में वृद्धि हुई है। ऐसे परिवारों में जहां शिक्षा का प्रसार अत्यन्त निम्न है उनमें यदि कोई थोड़ा बहुत शिक्षित सदस्य है तो शिक्षा सम्बन्धी विषयों में वयोवृद्ध सदस्य सन्तान के पिता का महत्व अपेक्षाकृत कम हो जाता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.10.1 में क्रमवृद्ध वर्णित किया गया है।

4-11 % oSokfgd fu.k;

ग्रामीण परिवारों में युवक और युवतियों को जीवन साथी चुनने का स्वतन्त्र अधिकार नही था। विवाह पूर्ण रूप से परिवार द्वारा आयोजित किया जाता रहा है। परिवार में वयोवृद्ध सदस्य सम्बन्धों की तलाश से लेकर वैवाहिक अनुष्ठान के सम्पादन तक सभी कार्यों में अन्तिम और निर्णायक भूमिका निभाते रहे हैं। (गोरेः1968ः147) ज्यादातर विवाह अल्प आयु में तय किये जाते थे। ऐसी अपरिपक्व आयु में बालक और बालिकाओं को स्वतन्त्र निर्णय का बोध भी नही (स्वतन्त्र निर्णय लेने की क्षमता) होता था। परन्तु वर्तमान (आधुनिक) काल में नवीन मानवीय मूल्यों, नवीन शैक्षणिक पद्धति के प्रसार तथा आधुनिक युग में आधुनिकीकरण प्रक्रिया के तहत व्यवसाय शिक्षा, अर्थव्यवस्था तथा जीवन यापन की नवीन पद्धति व आकांक्षाओं, विचारधाराओं तथा परम्परागत व्यवसायों के उन्मूलन तथा नवीन प्रक्रियाएं तथा नवीन व्यवस्थाओं के आत्मसातीकरण ने ग्रामीण व शहरी जीवन पद्धति को बदल कर रख दिया है तथा परम्परागत मान्यताएं लगभग समाप्त होती जा रही हैं। ग्रामीण समुदाय में परिवार और विवाह के नवीन मूल्यो के प्रसार विवाह की आयु वृद्धि सभी स्वतन्त्र अधिकारों के परिणामस्वरूप युवक और युवतियों को अपने वैवाहिक जीवन के सम्बन्ध में निर्णय लेने के अधिकार में बहुत बड़ा अन्तर पड़ा है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में तुलनात्मक ग्रामीण समुदाय की अपेक्षा नगरीय समुदाय में परिवर्तन अधिक दिखाई पड़ता है। परन्तु ग्रामीण परिवारों में भी परिवर्तन की गति तीव्र होने लगी है।

lkfj.kh % 4-10-1 % lkekftd ifjoR;l ,o 'k{kf.kd fu.k;

lkekftd ifjoR;l	o;ko') lnL;	lUrku d firk	lUrku dh ekrk	Ikfjokj dk lcls f'kf{kr 0;fDr	;kx
vk;q					
20–35	15 12.2	67 54.5	18 14.6	23 18.7	123 100.0
36–50	7 13.5	22 42.3	15 28.8	8 15.4	52 100.0
51 से ऊपर	8 14.6	21 38.2	10 18.2	16 29.0	55 100.0
f'k{kk					
अशिक्षित	6 14.6	22 53.8	6 14.6	7 17.0	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	14 13.6	51 49.5	20 19.4	18 17.5	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	7 11.9	25 42.3	12 20.3	15 25.5	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	3 11.1	12 44.5	5 18.5	7 25.9	27 100.0
Tkkfr					
उच्चजाति	9 21.5	15 35.7	6 14.3	12 28.6	42 100.0
पिछड़ीजाति	12 14.7	35 42.6	12 14.7	23 28.0	82 100.0
अनुसूचितजाति	9 8.5	60 56.6	25 23.6	12 11.3	106 100.0
परिवार का स्वरूप					
संयुक्त	20 22.8	33 37.5	14 15.9	21 23.8	88 100.0
एकाकी	10 7.0	77 54.2	29 20.5	26 18.3	142 100.0
योग	30 13.0	110 47.9	43 18.7	47 20.4	230 100.0

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के साक्षात्कार से यह विदित हुआ की उनके परिवार में युवा सदस्यों के विवाह के सम्बन्ध में परिवार के कौन सदस्य महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 17.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में वयोवृद्ध सदस्य के 40.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सन्तान के पिता, 30.4 प्रतिशत उत्तदाताओं के परिवार में सन्तान की माता और 11.8 प्रतिशत परिवार के निकट सम्बन्धी (चाचा,मामा, ताऊ) के द्वारा वैवाहिक निर्णय का कार्य किया जाता है। अतः स्पष्ट है कि वयोवृद्ध सदस्य की महत्ता में निश्चित रूप से कमी आ रही है और उनके स्थान पर सन्तान के पिता व माता कुछ परिवारों में स्वयं सन्तान का वैवाहिक निर्णय के सम्बन्ध में महत्व निश्चित रूप से बढ़ता जा रहा है। अतः वैवाहिक निर्णय के परम्परागत प्रतिमान निश्चित रूप से परिवर्तित होते जा रहे हैं। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.11 में किया जा रहा है।

lkfj.kh 4-11 mRrjnkrkvksa dk oSokfgd fu.kZ;

oSokfgd fu.kZ;	*vkofRr*	*izfr'kr*
वयोवृद्ध सदस्य द्वारा	40	17.4
सन्तान के पिता	93	40.4
सन्तान की माता	70	30.4
निकट सम्बन्धी के द्वारा	27	11.8
योग	230	100.0

4-11-1 % lkekftd ifjoR;ksZ ,oa oSokfgd fu.kZ;

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के वैवाहिक निर्णय पर सामाजिक परिवर्त्यों के प्रभाव देखने के लिए सम्बन्धित तथ्यों को सारिणी 4.11.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 44.7 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 16.3 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 12.1 प्रतिशत परिवार में निकट सम्बन्धी और 26.9 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता वैवाहिक निर्णय लेने का कार्य करती हैं। मध्यम आयु समूह में 32.7 प्रतिशत संतान के पिता, 15.4 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 15.4 प्रतिशत परिवार में निकट सम्बन्धी और 36.5 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता वैवाहिक निर्णय लेने का कार्य करती हैं। वृद्ध आयु समूह में 38.2 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 21.8 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 7.2 प्रतिशत परिवार के निकट सम्बन्धी और 32.8 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता वैवाहिक निर्णय का कार्य करती हैं।

f'kf{kk

वर्तमान अध्ययन में तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित उत्तरदाताओं में से 39.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सन्तान के पिता, 19.6 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 12.1 प्रतिशत परिवार में निकट सम्बन्धी तथा 29.3 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता विवाह के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय लेने का कार्य करती हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा प्राप्त वर्ग में 45.7 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 18.4 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 7.7 प्रतिशत परिवार में निकट सम्बन्धी और 28.2 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता द्वारा विवाह के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय लेने का कार्य किया जाता है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त वर्ग में 33.9 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 16.9 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 16.9 प्रतिशत परिवार में निकट सम्बन्धी, 32.3 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता विवाह के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय लेने का कार्य करती हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त वर्ग में 37.0 परिवार में सन्तान के पिता, 11.2 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य, 14.8 प्रतिशत परिवार में निकट सम्बन्धी, 37.0 प्रतिशत परिवार में माता विवाह सम्बन्धी निर्णय में अन्तिम निर्णय लेने का कार्य करती है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 23.8 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 14.5 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 26.2 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता और 9.5 प्रतिशत परिवार में निकट सम्बन्धी विवाह के सम्बन्ध में निर्णय लेने का कार्य करते हैं। पिछड़ीजाति के 19.5 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 42.7 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 30.5 प्रतिशत सन्तान की माता और 7.3 प्रतिशत परिवार में निकट सम्बन्धी वैवाहिक निर्णय लेने का कार्य करते है। अनुसूचित जाति के 13.2 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 38.7 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 32.1 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता तथा 16.0 प्रतिशत परिवार के निकट सम्बन्धी वैवाहिक निर्णय का कार्य करते हैं।

ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि संयुक्त परिवार के 21.6 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य 44.4 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 26.1 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता तथा 7.9 प्रतिशत परिवार में निकट सम्बन्धी वैवाहिक भविष्य निर्धारण करते हैं। एकाकी परिवार से सम्बन्धित 14.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में वयोवृद्ध सदस्य 38.0 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 33.1 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता तथा 14.1 प्रतिशत परिवार के निकट सम्बन्धी वैवाहिक निर्णय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उपर्युक्त तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि आयु, शिक्षा, जाति तथा परिवार के स्वरूप के आधार पर उत्तरदाताओं के वैवाहिक निर्णय पर

धनात्मक प्रभाव तथा वैवाहिक निर्णय का परम्परागत स्वरूप का उन्मूलन तथा समाज में उदीयमान नवीन मूल्यों द्वारा प्रभावित नवीन अकांक्षाओं व मनोवृत्तियों का प्रभाव सर्वत्र दर्शित है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.11.1 में किया गया है।

lkfj.kh 4-11-1 lkekftd ifjoR;l ,o oSokfgd fu.kl; ¼vk;q½

lkekftd ifjoR;l	o;kso`) lnL;	lUrku ds firk	lUrku dh ekrk	Ikfjokj dk fudV lEcU/kh	;ksx
vk;q					
20—35	20 16.3	55 44.7	33 26.9	15 12.1	123 100.0
36—50	8 15.4	17 32.7	19 36.5	8 15.4	52 100.0
50 से ऊपर	12 21.8	21 38.2	18 32.8	4 7.2	55 100.0
f'k{kk					
अशिक्षित	8 19.6	16 39.0	12 29.3	5 12.1	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	19 18.4	47 45.7	29 28.2	8 7.7	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	10 16.9	20 33.9	19 32.3	10 16.9	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	3 11.2	10 37.0	10 37.0	4 14.8	27 100.0
Tkkfr					
उच्चजाति	10 23.8	17 40.5	11 26.2	4 9.5	42 100.0
पिछड़ीजाति	16 19.5	35 42.7	25 30.5	6 7.3	82 100.0
अनुसूचितजाति	14 13.2	41 38.7	34 32.1	17 16.0	106 100.0
ifjokj dk Lo:i					
संयुक्त	19 21.6	39 44.4	23 26.1	7 7.9	88 100.0
एकाकी	21 14.8	54 38.0	47 33.1	20 14.1	142 100.0
योग	40 17.4	93 40.4	70 30.4	27 11.8	230 100.0

4-12 % mRrjnkrkvks d s 0;olk; lEcU/kh fu.k;

परम्परागत ग्रामीण समुदाय में जाति, व्यवसाय एवं भूमि स्वामित्व का अत्याधिक घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। सामान्यतः उच्चजाति के सदस्यों का भूमि पर स्वामित्व सम्बन्धी अधिकार अधिक रहा है और वे जमींदार या शीरदार के रूप में कृषि कार्य में संलग्न रहे हैं। निम्न और मध्यम जाति के सदस्यों का भूमि स्वामित्व का अधिकार अपेक्षाकृत सीमित रहा है तथा वे लघु कृषक या कृषक मजदूर के रूप में कृषि से सम्बन्धित तथा अन्य द्वितीयक (जातिगत या अन्य) पेशों में संलग्न रहे हैं। ये व्यवसाय न केवल जातिगत स्थिति के अनुरूप पूर्ण निश्चित व पूर्ण निर्धारित रहे हैं। बल्कि प्रचलित सामाजिक मान्यताओं और स्थापित आर्थिक संरचना के हस्तान्तरण में इन्होने योगदान दिया है। आधुनिक काल में ग्रामीण आर्थिक संरचना में गतिशीलता उत्पन्न हुई है तथा व्यवसाय के दृष्टिकोण में परिवर्तन उत्पन्न हुआ है।

ग्रामीण आर्थिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव ग्रामीण पारिवारिक जीवन पर पड़ना स्वाभाविक है। परम्परागत रूप से परिवार की नवीन पीढ़ी के सदस्य परिवार के व्यवसाय में इच्छा रूचि न रखते हुए भी दबाव में अल्प सहयोग प्रदान कर रहे हैं।परन्तु आधुनिक काल में रोजगार के नवीनीकरण व विस्तार के कारण परिवार में युवा पीढ़ी के सदस्यों को अपने व्यवसायिक भविष्य के निर्धारण का अधिक विस्तृत अवसर प्राप्त हुआ है। शिक्षा ग्रहण करने वाले युवा पीढ़ी के सदस्य परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर नवीन व्यवसायों की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। इस स्थिति में पारिवारिक निर्णय की प्रक्रिया के सन्दर्भ में नवीन अर्न्तद्वन्दात्मक परिस्थितियों का विकास किया है। परम्परागत रूप से वयोवृद्ध सदस्यों की सर्वोच्चता व्यवसायिक निर्णय के क्षेत्र में पूर्ववत प्रभावशाली नही रह गयी है। युवा पीढ़ी के सदस्यों के अधिकार क्षेत्र में वृद्धि परिवर्तन की नवीन परिस्थितियों का परिणाम है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया द्वारा उत्पन्न व्यवसाय के नवीन तकनीकी व प्ऱौधोगिकी अवसरों ने ग्रामीण व नगरीय समुदाय के युवा पीढ़ी के सदस्यों को रोजगार के क्षेत्र में बहुउद्देशीय अवसर प्रदान किये जिसके परिणामस्वरूप परम्परागत जातिगत गैर जातिगत व्यवसायों का उन्मूलन दृष्टिगोचर होता है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित परिवारों की सत्ता और निर्णय की प्रक्रिया का अध्ययन करते हुए उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि उनके परिवार में युवा पीढ़ी के व्यवसायिक निर्णय के कार्य में कौन सदस्य सर्वाधिक भूमिका निभाता है। साक्षात्कार द्वारा प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 7.4 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य, 21.8 प्रतिशत परिवारों में पिता 10.0 प्रतिशत परिवारों में सन्तान की माता और 60.8 प्रतिशत परिवारों में स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसायिक भविष्य का निर्णय करता है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.12 में किया गया है।

lkfj.kh 4-12 mRrjnkrkvksa d\ 0;olkf;d Hkfo"; dk fu/kkj.k

0;olk; lEcU/kh fu.k;	vkofRr	ifr'kr
वयोवृद्ध सदस्य	17	7.4
सन्तान के पिता	50	21.8
सन्तान की माता	23	10.0
स्वयं व्यक्ति	140	60.8
योग	230	100.0

4-12-1 % Lkkekftd ifjoR;\ ,oa mRrjnkrkvksa d\ 0;olkf;d Hkfo"; dk fu/kkj.k

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के व्यवसायिक भविष्य का निर्धारण पर उनके सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए सम्बन्धित तथ्यों को सारिणी 4.12.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 3.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 19.5 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 11.4 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता तथा 65.9 प्रतिशत परिवार में स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसायिक भविष्य का निर्धारण करता है। मध्यम आयु समूह के 9.6 प्रतिशत परिवार में वयोवृद्ध सदस्य, 21.1 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता, 7.7 प्रतिशत परिवार में सन्तान की माता तथा, 61.6 प्रतिशत परिवारों में स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसायिक भविष्य का निर्णय करता है। वृद्ध आयु समूह के 14.6 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य 27.3 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 9.1 प्रतिशत परिवारों में सन्तान की माता, 49.0 प्रतिशत परिवारों में स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसायिक भविष्य का निर्णय करता है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के उत्तरदाताओं में 19.5 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य, 29.3 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 9.8 प्रतिशत परिवारों में सन्तान की माता तथा 41.4 प्रतिशत परिवारों में स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसायिक भविष्य का निर्धारण करता है। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं में 2.9 प्रतिशत परिवारों में वयोवद्ध सदस्य, 21.4 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 5.8 प्रतिशत परिवारों में सन्तान की माता तथा 69.9 प्रतिशत परिवारों में स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसायिक भविष्य का निर्णय करता है। हाईस्कल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं में 10.2 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य

16.9 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 11.9 प्रतिशत परिवारों में सन्तान की माता तथा 61.0 प्रतिशत परिवारों में स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसायिक भविष्य का निर्णय करता है। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त वर्ग में 22.2 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 22.2 प्रतिशत परिवारों में सन्तान की माता तथा 55.6 प्रतिशत स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसायिक भविष्य का निर्धारण करता है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की जातिगत पृष्ठभूमि के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 16.7 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य, 23.8 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 11.9 प्रतिशत परिवारों में सन्तान की माता तथा 47.6 प्रतिशत परिवारों में स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसायिक भविष्य का निर्णय करता है। पिछड़ीजाति के 7.3 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य, 18.3 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 8.6 प्रतिशत परिवारों में सन्तान की माता तथा 65.8 प्रतिशत परिवारों में स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसायिक भविष्य का निर्णय करता है। अनुसूचितजाति में 3.8 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य, 23.6 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 10.4 प्रतिशत परिवारों में सन्तान की माता तथा 62.2 प्रतिशत परिवारों में स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसायिक भविष्य का निर्धारण करता है।

ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि संयुक्त परिवार से सम्बन्धित उत्तरदाताओं के 9.1 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य, 20.5 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 11.4 प्रतिशत परिवारों में सन्तान की माता तथा 59.0 प्रतिशत स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसायिक भविष्य का निर्णय करता है। एकाकी परिवार से सम्बन्धित उत्तरदाताओं में 6.3 प्रतिशत परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य 22.6 प्रतिशत परिवारों में सन्तान के पिता, 9.2 प्रतिशत परिवारों सन्तान की माता तथा 61.9 प्रतिशत स्वयं व्यक्ति अपने व्यवसाय से सम्बन्धित निर्णय लेने का कार्य करते हैं।

वर्तमान अध्ययन में आयु, शिक्षा, जाति और परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि संयुक्त परिवार, उच्च जाति, अशिक्षित और वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाताओं के परिवार में व्यवसायिक भविष्य के निर्धारण में वयोवृद्ध सदस्य की महत्ता अपेक्षाकृत सन्तान के पिता व माता से कम रह गयी है। इसके अतिरिक्त परिवारों में भी स्वयं व्यक्ति व्यवसायिक भविष्य के निर्धारण में अग्रणी प्रतीत होता है। जब कि युवा आयु समूह, शिक्षित निम्न जाति व एंकाकी परिवार से सम्बन्धित परिवारों में युवा सदस्यों की भूमिका

व्यवसाय भविष्य सम्बन्ध निर्धारण के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.12.1 में किया गया है।

lkfj.kh 4-12-1 lkekftd ifjoR;l ,o mRrjnkrkvk ds O;olkf;d Hkfo"; dk fu/kkj.k

Lkkekftd ifjoR;l	o;ko`) lnL;	lUrku ds firk	lUrku dh ekrk	Lo;; O;fDr	;kx
vk;q					
20—35	4 3.2	24 19.5	14 11.4	81 65.9	123 100.0
36—50	5 9.6	11 21.1	4 7.7	32 61.6	52 100.0
51 से ऊपर	8 14.6	15 27.3	5 9.1	27 49.0	55 100.0
f'k{kk					
अशिक्षित	8 19.5	12 29.3	4 9.8	17 41.4	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	3 2.9	22 21.4	6 5.8	72 69.9	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	6 10.2	10 16.9	7 11.9	36 61.0	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	— —	6 22.2	6 22.2	15 55.6	27 100.0
Tkkfr					
उच्चजाति	7 16.7	10 23.8	5 11.9	20 47.6	42 100.0
पिछड़ीजाति	6 7.3	15 18.3	7 8.6	54 65.8	82 100.0
अनुसूचितजाति	4 3.8	25 23.6	11 10.4	66 62.2	106 100.0
ifjokj dk Lo:i					
संयुक्त परिवार	8 9.1	18 20.5	10 11.4	52 59.0	88 100.0
एकाकी परिवार	9 6.3	32 22.6	13 9.2	88 61.9	142 100.0
योग	17 7.4	50 21.8	23 10.0	140 60.8	230 100.0

[k.M l & ifjokjkRedrk vkj lEcU/kksa dh ikjLifjdrk

अत्यन्त लघु समूह जैसे परिवार में सत्ता और शक्ति का विवरण एक निश्चित तरीके से होता है। परिवार के सफल संचालन और प्राकार्यात्मक उत्तरदायित्वों के निर्वाह के लिए यह आवश्यक है कि सदस्यों के मध्य अधिकारों और कर्तव्यों का निश्चित वितरण हो यद्यपि ''मैक्स वेवर'' ने सत्ता के विश्लेषण में पारिवारिक सत्ता की स्पष्ट रूप से विवेचना नही की है। तथापि उनकी परम्परागत सत्ता की अवधारणा और पारिवारिक सत्ता के विश्लेषण में उपयोगी है। पारिवारिक सत्ता इस अर्थ में परम्परागत है कि इसके विभिन्न नियम सदस्यों के व्यक्तित्व और मूल्यांकन दृष्टिकोण का सामाजिक शिक्षण और सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा अंग बन जाते है। तथा इस सत्ता का सफलतापूर्वक परिवर्तन नही किया जा सकता है। वेवर के अनुसार परम्परागत सत्ता की प्रमुख विशेषताओं स्थितियों या पदों का श्रेणीगत विभाजन है। परम्परागत परिवारों में साधारणतया दो प्रकार की सत्ता देखने को मिलती है। अप्रत्यक्ष सत्ता जिसके प्रति सदस्य जागरूक नही रहते। इस प्रकार की सत्ता सदस्यों के सामाजीकरण और पारिवारिक मूल्यों के अन्तःकरण को दर्शाती है। प्रत्यक्ष सत्ता जिसे परिवार का सदस्य सअंग होकर इच्छा के न रहते हुए भी पालन करते है। (रासः1973ः91–92)। परिवार का प्रत्येक सदस्य अपनी विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाहन करते समय प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सत्ता के द्वारा प्रभावित होता है तथा उसके कर्तव्यो और उत्तरदायित्वों का निर्धारण भी पारिवारिक सत्ता शाक्ति के इस प्रतिमान के द्वारा होता है।

पारिवारिक जीवन सम्बन्धों की एकता और भूमिका सम्बन्धों का एक निश्चित प्रतिमान है। परिवार के सदस्य अपने निश्चित परिस्थितियों और भूमिकाओं के द्वारा एक दूसरे से आबद्ध रहते हैं। रक्त सम्बन्धियों की निकटता और सदस्यों की भावनात्मक एकरूपता और रूचियों तथा हितों की एकता परिवार को एक नवीन व्यक्तित्व प्रदान करती है। परम्परागत संयुक्त परिवार में सदस्यों का स्थान और कार्य विभाजन जितना अधिक परिभाषित और स्पष्ट रहा है उतना आधुनिक परिवर्तनशील परिवार में नही। आधुनिक परिवारों में परिवार के सदस्यों की स्थिति और भूमिका के नवीन प्रतिमान, नवीन मान्यता व पारिवारिक सदस्यों के मूल्यों में व्यक्तिवादिता तीव्र गति से उत्पन्न हो रही है। व्यवसायिक विभेदीकरण, बढ़ती हुई शिक्षा, युवकों की स्वतन्त्रता, स्त्रियों की स्वतन्त्रता, परिवार के बाहर जीविका के नवीन स्त्रोतों आदि कारणों ने पारिवारिक सम्बन्धों की प्रकृति को महत्वपूर्ण ढ़ंग से प्रभावित किया है।

प्रस्तुत खण्ड में यह ज्ञात करने का प्रयत्न किया गया है कि ग्रामीण समुदाय के परिवार नवीन सामाजिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में किस मात्रा में परिवारात्मकता और सम्बन्धों की पारस्परिकता के क्षेत्र में परम्परागत प्रतिमान को बनाये हुए है या नवीन परिवर्तनों को उत्पन्न कर रहे हैं। इस दृष्टिकोण से वर्तमान खण्ड में परिवार के सम्बन्धों की प्रकृति पीढ़ियों में अन्तरद्वन्द पारिवारिक कलह की प्रकृति, नातेदारी सम्बन्ध में वरीयता की प्रकृति, धार्मिक

संस्कारों और सामाजिक उत्सवों में परिवार के सदस्य निकटवर्ती सम्बन्धियों की सहभागिता और सम्बन्धों की पारस्परिकता से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण किया जा रहा है।

4-13 lEcU/kksa dh izdfr

परिवार की आन्तरिक संरचना का विभाजन केवल सदस्यों के बीच भूमिका सम्बन्धों के द्वारा ही विभाजित नही होता है, बल्कि सदस्यों के बीच पारस्परिक सौहार्द, सहयोग, विरोध, अर्न्तद्वन्द आदि प्रक्रिया के द्वारा भी निर्धारित होता है। सदस्यों में सम्बन्धों की घनिष्ठता परिवार के संगठनात्मक जीवन को शान्तिपूर्ण अैर सामंजस्यपूर्ण बनाती है। जबकि सम्बन्धों की औपचारिकता, संघर्षमय, स्थिति पारिवारिक विधान की प्रक्रिया को तीव्र करती है। सम्बन्धों की घनिष्ठता, रूचियों, स्वार्थों और उद्देश्यों की एकता पर आधारित है। जिन परिवारों के सदस्यों के दृष्टिकोण, स्वार्थ और व्यवहार के तरीकों के आधार पर एक समान होते है। उन परिवारों में सम्बन्धों की पारस्परिकता अत्याधिक घनिष्ठ होती है। इसके विपरीत रूचि, उद्देश्यो और व्यक्तित्व में अत्याधिक विभिन्नता होने पर पारिवारिक जीवन बहुधा तनावपूर्ण और कलह पूर्ण हो जाता है। आधुनिक परिवर्तनशील समाज सम्बन्धों में निकटता या दूरस्थ होना केवल व्यक्तित्व सम्बन्धी कारकों के द्वारा ही प्रभावित नही होता बल्कि परिवार का आर्थिक स्तर, शैक्षणिक वातावरण, आयुगत सरंचना आकार सम्बन्धी तथ्य भी सम्बन्धों की प्रकृति को प्रभावित करते है।

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवारों में सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करते हुए यह पूंछा गया है कि आप अपने परिवार में सदस्यों के सम्बन्ध को किस मात्रा में बहुधा अच्छा या तनाव पूर्ण पाते है। प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 30.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह विचार है कि उनके परिवार के सदस्यों का पारस्परिक सम्बन्ध बहुत अच्छा तथा घनिष्ठतापूर्वक है 33.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार सदस्यों के मध्य सामंजस्यपूर्ण सामान्य सम्बन्धों की प्रकृति के सम्बन्ध है। 25.2 प्रतिशत उत्तरदाता यह अनुभव करते है। कि उनके परिवार के सदस्यों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध तनावपूर्ण है, 10.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में कोई स्पष्ट मत नही व्यक्त किया है। अतः यह कहा जा सकता है कि अध्ययन में सम्मिलित एक चौथाई परिवारों को छोड़कर शेष परिवारों में सदस्यों के सम्बन्ध सामान्य या बहुत घनिष्ठतापूर्ण हैं। सदस्यों के दृष्टिकोण से उत्तरदाताओं की यह संतुष्टता उनके सामजंस्यपूर्ण पारिवारिक जीवन का प्रतीक है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.13 में किया गया है।

lkfj.kh 4-13 mRrjnkrkvk d lEcU/kk dh idfr

lEcU/k	vkofRr	ifr'kr
घनिष्ठता	70	30.5
सामान्य	78	33.9
तनावपूर्ण	58	25.2
कह नही सकते	24	10.4
योग	230	100.0

4-13-1 % Lkkekftd ifjoR;l ,o mRrjnkrkvk d lEcU/kk dh idfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तदाताओ के सम्बन्धों की प्रकृति पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए सम्बन्धित तथ्यों को विश्लेषित कर आगे सारिणी 4.13.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि सदस्यों के मध्य बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध का अनुभव युवा आयु समूह के 26.9 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह के 38.4 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह के 30.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने किया है। सामान्य पारस्परिक सम्बन्धों का युवा आयु समूह के 36.8 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह के 28.9 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह के 32.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अनुभव किया है। तनावपूर्ण पारस्परिक सम्बन्धों की प्रकृति का युवा आयु समूह के 24.4 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह के 21.1 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह के 30.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अनुभव किया है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि सदस्यों में घनिष्ठ या बहुत अच्छे पारस्परिक सम्बन्ध अशिक्षित वर्ग के उत्तरदाताओं में 29.2 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के उत्तरदाताओं में 34.9 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के उत्तरदाताओं में 30.5 प्रतिशत स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के उत्तरदाताओं में 14.8 प्रतिशत पाये गये हैं। सामान्य पारस्परिक सम्बन्धों की प्रकृति अशिक्षित वर्ग में 34.2 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग में 36.9 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग में 35.6 प्रतिशत, स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग में 18.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवारों में साामान्य सम्बन्धों की पारस्परिकता है। तनावपूर्ण

पारस्परिक सम्बन्धों का अनुभव अशिक्षित वर्ग के 24.4 प्रतिशत प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 22.4 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 20.3 प्रतिशत और स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 48.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने परिवारों में तनावपूर्ण पारस्परिक सम्बन्धों का अनुभव किया है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्च जाति के 28.6 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों में पारस्परिक घनिष्ठ व अच्छे सम्बन्ध है।, 40.5 प्रतिशत परिवारों में पारस्परिक सामान्य सम्बन्ध, 26.2 प्रतिशत परिवारों में तनावपूर्ण सम्बन्ध की प्रकृति का उत्तरदाताओं ने अनुभव किया है। पिछड़ीजाति के 36.6 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों में पारस्परिक घनिष्ट व अच्छे सम्बन्धों का अनुभव किया है, 37.8 प्रतिशत परिवारों के मध्य पारस्परिक सामान्य सम्बन्ध, 24.4 प्रतिशत परिवारों के उत्तरदाताओं ने तनावपूर्ण सम्बन्धों की प्रकृति का अनुभव किया। अनुसूचितजाति के 26.4 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों के मध्य पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध, 28.3 प्रतिशत परिवार के सदस्यों के मध्य पारस्परिक सामान्य सम्बन्ध, 25.5 प्रतिशत परिवार के सदस्यों के मध्य तनावपूर्ण सम्बन्धों का अनुभव उत्तरदाताओं ने किया।

ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि संयुक्त परिवार से सम्बन्धित उत्तरदाताओं में से 26.1 प्रतिशत परिवारों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। 38.7 प्रतिशत परिवारों में पारस्परिक साामन्य सम्बन्धों की प्रकृति है और 28.4 प्रतिशत परिवारों में तनावपूर्ण सम्बन्धों का अनुभव किया गया । एकाकी परिवारों से सम्बन्धित परिवारों में 33.1 प्रतिशत परिवारों में घनिष्ठ सम्बन्ध, 30.9 प्रतिशत परिवारों में पारस्परिक सामान्य सम्बन्ध और 23.3 प्रतिशत तनावपूर्ण सम्बन्ध हैं।

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि शोध अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु, शिक्षा, जाति व परिवार के स्वरूप का उत्तरदाताओं के सम्बन्धों पर विशेष अन्तर प्रतीत होता है। उच्चजाति में पारस्परिक घनिष्ट सम्बन्धों व आंशिक तनाव पूर्ण सम्बन्धों की प्रकृति प्रतीत होती है जबकि संयुक्त परिवार के उत्तरदाताओं में तनावपूर्ण सम्बन्धों की प्रकृति प्रतीत होती है। जबकि एकाकी परिवार में उच्च, पिछड़ी व अनुसूचितजाति में सामान्यतः घनिष्ठ सम्बन्धों की बहुलता व सामान्य सम्बन्धों की प्रधानता प्रतीत होती है तथा आंशिक तनावपूर्ण सम्बन्ध दर्शित होते हैं। तथ्यों से दर्शित मनोवृत्तियों के परिवर्तन से परिवारिक सम्बन्धों के स्वरूप में परिवर्तन से यह विदित होता है कि ग्रामीण परिवारों में परिवर्तन की प्रक्रिया का प्रभाव पड़ रहा है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.13.1 में किया गया है।

lkfj.kh 4-13-1 lkkeftd ifjoR;Z ,oa lEcU/kksa dh izd`fr

सामाजिक परिवर्त्य	घनिष्ठ	सामान्य	तनावपूर्ण	कह नही सकता	योग
vk;q					
20–35	33 26.9	45 36.5	30 24.4	15 12.2	123 100.0
36–50	20 38.4	15 28.9	11 21.1	6 11.6	52 100.0
51 से ऊपर	17 30.9	18 32.8	17 30.9	3 5.4	55 100.0
f'k{kk					
अशिक्षित	12 29.2	14 34.2	10 24.4	5 12.2	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	36 34.9	38 36.9	23 22.4	6 5.8	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	18 30.5	21 35.6	12 20.3	8 13.6	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	4 14.8	5 18.5	13 48.2	5 18.5	27 100.0
Tkkfr					
उच्चजाति	12 28.6	17 40.5	11 26.2	2 4.7	42 100.0
पिछड़ीजाति	30 36.6	31 37.8	20 24.4	1 1.2	82 100.0
अनुसूचितजाति	28 26.4	30 28.3	27 25.5	21 19.8	106 100.0
ifjokj dk Lo:i					
संयुक्त परिवार	23 26.1	34 38.7	25 28.4	6 6.8	88 100.0
एकाकी परिवार	47 33.1	44 30.9	33 23.3	18 12.7	142 100.0
योग	70 30.5	78 33.9	58 25.2	24 10.4	230 100.0

4-14 % ikfjokfjd dyg

पारिवारिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता सदस्यों के सम्बन्धों की आन्तरिकता के होते हुए भी विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में तनाव और कभी–कभी झगड़े की स्थिति का पाया जाना है। आधुनिक काल में आर्थिक कठिनाईयां स्त्रियों और युवकों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति परिवार में एक से अधिक जीवकोपार्जन करने वाले सदस्य की उपस्थिति आदि कारक परिवार में विभिन्न प्रकार की विवादास्पद परिस्थितियों को जन्म देती है। वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के साक्षात्कार द्वारा यह विदित हुआ है कि उत्तरदाताओं के परिवार में कलह का पाया जाना है या नही प्राप्त उत्तरों से विदित होता है कि 65.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में कलह की स्थिति का पाया जाना है तथा 34.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में कलह नही पाया जाता है। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि दो तिहाई परिवार में कलह पाया जाता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.14 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-14 % ifjokj d lnL;k d e/; dk dyg ik;k tkuk

dyg ik;k tkuk	vkofRr	ifr'kr
हाँ	150	65.2
नही	80	34.8
योग	230	100.0

4-14-1 % Ikkfjokfjd dyg d dkj.k

वर्तमान अध्ययन के उत्तरदाताओं से पूछा गया कि आपके परिवार में किन कारणों के तहत पारिवारिक कलह पायी जाती है या झगड़े की स्थिति उत्पन्न होती है। प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 10.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद के कारण, कलह 20.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में युवासदस्यों की स्वतन्त्र व नवीन मनोवृत्ति के कारण, 15.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में स्त्रियों के झगड़े के कारण, 19.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में व्यय की अधिकता के कारण कलह पायी जाती है। केवल 34.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार कलह नही होती है, स्थिति व्यक्त की है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.14.1 किया गया है।

lkfj.kh 4-14-1 mRrjnkrkvksa ds ifjokj esa dyg ds dkj.k

dyg dk dkj.k	vko`fRr	izfr'kr
सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद	23	10.0
युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति	48	20.9
स्त्रियों के झगड़े	35	15.2
व्यय की अधिकता	44	19.1
कलह नही है	80	34.8
योग	230	100.0

4-14-2 % Lkekftd ifjoR;ksa ,oa ikfjokfjd dyg ds dkj.k

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के पारिवारिक कलह पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को सारिणी 4.14.2 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 7.3 प्रतिशत परिवार में सम्पत्ति विवाद, 25.2 प्रतिशत परिवार में युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति, 16.3 प्रतिशत परिवार में स्त्रियों के झगड़े, 20.3 प्रतिशत परिवार में व्यय की अधिकता के कारण कलह पाया जाता है केवल 30.9 प्रतिशत परिवार में कलह नही होती है। मध्यम आयु समूह के 13.5 प्रतिशत परिवार में सम्पत्ति विवाद, 17.3 प्रतिशत परिवार में युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति, 15.4 प्रतिशत परिवार में स्त्रियों के झगड़े 15.4 प्रतिशत परिवार में व्यय की अधिकता के कारण कलह पाया जाता है, केवल 38.4 प्रतिशत परिवार के उत्तरदाताओं के परिवार में कलह नही होती है। वृद्ध आयु समूह के 12.7 प्रतिशत परिवार में सम्पत्ति विवाद, 14.6 प्रतिशत परिवार में युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति, 12.7 प्रतिशत परिवार में स्त्रियों के झगड़े, 20.0 प्रतिशत परिवार में व्यय की अधिकता के कारण कलह पाया जाता है केवल 40.0 प्रतिशत परिवार में कलह नही होती है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 14.6 प्रतिशत उत्तरदाता सम्पत्ति विवाद, 24.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं में युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति 21.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं में स्त्रियों के झगड़े, 14.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं में व्यय की अधिकता के कारण पारिवारिक कलह पाया

जाता है। 44.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवारों में कलह नही होती है। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग में 12.6 प्रतिशत सम्पत्ति विवाद, 24.2 प्रतिशत युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति, 15.6 प्रतिशत परिवार में स्त्रियों के झगड़े, 17.5 प्रतिशत परिवार में व्यय की अधिकता के कारण कलह पाया जाता है। 30.8 प्रतिशत उत्तदाताओं के परिवार में कलह नही होती है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षावर्ग के उत्तरदाताओं मे, 3.4 प्रतिशत सम्पत्ति विवाद, 13.6 प्रतिशत परिवार में युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति, 11.9 प्रतिशत परिवार में स्त्रियों के झगड़े, 30.5 प्रतिशत परिवार में व्यय की अधिकता के कारण पारिवारिक कलह का पाया जाना है ंकेवल 40.6 प्रतिशत परिवार में कलह नही होती है। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग में 7.4 प्रतिशत परिवार में सम्पत्ति विवाद, 18.5 प्रतिशत परिवार में युवा सदस्य की स्वतन्त्र मनोवृत्ति, 11.2 प्रतिशत परिवार में स्त्रियों के झगड़े, 17.4 प्रतिशत परिवार में व्यय की अधिकता के कारण पारिवारिक कलह का पाया जाना है। केवल 55.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में कलह नही होती है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की जातिगत पृष्ठभूमि के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 11.9 प्रतिशत उत्तरदाता सम्पत्ति विवाद, 28. 6 प्रतिशत युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति, 23.8 प्रतिशत स्त्रियों के झगड़े, 11.9 प्रतिशत परिवार में व्यय की अधिकता के कारण कलह का पाया जाना है, 23.8 प्रतिशत परिवार के लोगो में कलह नही होती है। पिछड़ीजाति के 8.6 प्रतिशत परिवार में सम्पत्ति विवाद, 28.0 प्रतिशत युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति, 24.4 प्रतिशत स्त्रियों के झगड़े, 14.6 प्रतिशत परिवार में व्यय की अधिकता के कारण कलह का पाया जाना है। केवल 24.4 प्रतिशत उत्तरदाता के परिवार में कलह नही होती है। अनुसूचितजाति के 10.4 प्रतिशत परिवार में सम्पत्ति विवाद, 12.2 प्रतिशत युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति, 4.7 प्रतिशत स्त्रियों के झगड़े, 25.5 प्रतिशत व्यय की अधिकता के कारण पारिवारिक कलह का पाया जाना है। केवल 47.2 प्रतिशत उत्तरदाता के परिवार में कलह नही होती है।

ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि संयुक्त प्रकृति के परिवार से सम्बन्धित उत्तरदाताओं के परिवार में 17.0 प्रतिशत सम्पत्ति विवाद, 28.5 प्रतिशत युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति, 17.0 प्रतिशत स्त्रियों के झगड़े, 9.1 प्रतिशत व्यय की अधिकता पारिवारिक अशन्ति का प्रमुख कारण है। केवल 28.4 प्रतिशत परिवार में कलह नही होती है। एकाकी परिवार से सम्बन्धित 5.6 प्रतिशत परिवार में सम्पत्ति विवाद, 16.2 प्रतिशत युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति, 14.1

प्रतिशत स्त्रियों के झगड़े, 25.4 प्रतिशत व्यय की अधिकता पारिवारिक अशक्ति उत्पन्न करती है। 38.7 प्रतिशत परिवार में कलह नही होती है।

वर्तमान अध्ययन में आयु, शिक्षा, जाति और परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का उपरोक्त विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि परिवार में अशान्ति और तनाव की परिस्थति आर्थिक कठिनाईयां, स्त्रियों की झगड़ालू प्रवृत्ति और युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति के कारण उत्पन्न होती है। उच्चजाति के परिवार में युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति की प्रकृति पारिवारिक विग्रह का प्रमुख कारण है। जबकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया द्वारा उत्पन्न सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन, परम्परागत मान्यताओं व मूल्यों का उन्मूलन उदीयमान नवीन अर्थव्यवस्था आय के नये आयाम भौतिक संसाधनों की प्रचुरता व मनोवृत्तियों में परिवर्तन ने पिछड़ी व अनुसूचितजाति के परिवारों पर अत्याधिक प्रभाव डाला है। पिछड़ी व अनुसूचितजातियों में भी क्रमशः युवा सदस्यों की नवीन व स्वतन्त्र मनोवृत्ति व आंशिक आय के संसाधनों का कमजोर होना अपेक्षाकृत व्यय की अधिकता के कारण स्त्रियों के झगड़े व पारिवारिक विग्रह का महत्वपूर्ण कारण प्रतीत होता है। संयुक्त परिवारों में भी स्वतन्त्र मनोवृत्ति के क्रियान्वयन के कारण स्त्रियों के झगड़े व पारिवारिक अशान्ति उत्पन्न होती प्रतीत होती है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.14.2 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

4-15 % Ukkrsnkjh lEcU/k esa ojh;rk

पारिवारिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता परिवार के सदस्य और निकट रक्त सम्बन्धियों की सामाजिक स्थिति, प्रतिष्ठा और महत्ता का एक निश्चित संस्तरण होता है। आयु पीढ़ी और रक्त तथा वैवाहिक सम्बन्धों की निकटता और इसी के आधार पर सम्बन्धियों को परिवार और नातेदारी समूह में पृथक–पृथक सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। परम्परागत ग्रामीण संयुक्त परिवार में सम्बन्धों की यह तुलनात्मक उच्चता या निम्नता अत्याधिक परिभाषित, व्यवस्थिति और स्थिर होती है। परन्तु आधुनिक काल में पारिवारिक जीवन को प्रभावित करने वाली विभिन्न आन्तरिक और वाह्य परिस्थितियों ने सम्बन्धों के महत्व को प्रभावित किया है।

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि आपके परिवार में रक्त सम्बन्धियों को कितना महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाता है। प्रस्तुत सन्दर्भ से सम्बन्धित तथ्यों को सारिणी 4.15 में वर्णित किया गया है।

उत्तरदाताओं को प्रत्येक पद के लिए तीन वर्गों जैसे – अत्याधिक महत्वपूर्ण, कम महत्वपूर्ण तथा महत्वपूर्ण नही में उत्तर देने के लिए कहा गया है। तथ्यों के विश्लेषण के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण को 2 अंक, कम महत्वपूर्ण को 1 अंक और महत्वपूर्ण नही को 0 अंक प्रदान किये गये हैं।

lkfj.kh 4-14-2 lkekftd ifjoR;l ,o ikfjokfjd dyg dk dkj.k

Lkkekftd ifjoR;l	lEifRr fookn	;qok lnL;ksa dh LorU= eukofRr	fL=;ksa dk >xMk	0;; dh vf/kdrk	dyg ugh gksrh	;ksx
vk;q						
20–35	9 7.3	31 25.2	20 16.3	25 20.3	38 30.9	123 100.0
36–50	7 13.5	9 17.3	8 15.4	8 15.4	20 38.4	52 100.0
51 से ऊपर	7 12.7	8 14.6	7 12.7	11 20.0	22 40.0	55 100.0
f'k{kk						
अशिक्षित	6 14.6	10 24.4	9 22.0	6 14.6	10 24.4	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	13 12.6	25 24.3	16 15.6	18 17.5	31 30.0	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	2 3.4	8 13.6	7 11.9	18 30.5	24 40.6	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	2 7.4	5 18.5	3 11.2	2 7.4	15 55.5	27 100.0
Tkkfr						
उच्चजाति	5 11.9	12 28.6	10 23.8	5 11.9	10 23.8	42 100.0
पिछड़ीजाति	7 8.6	23 28.0	20 24.4	12 14.6	20 24.4	82 100.0
अनुसूचितजाति	11 10.4	13 12.2	5 4.7	27 25.5	50 47.2	106 100.0
ifjokj dk Lo:i						
संयुक्त परिवार	15 17.0	25 28.5	15 17.0	8 9.1	25 28.4	88 100.0
एकाकी परिवार	8 5.6	23 16.2	20 14.1	36 25.4	55 38.7	142 100.0
योग	23 10.0	48 20.9	35 15.2	44 19.2	80 34.8	230 100.0

सम्पूर्ण प्राप्तांकों को निकालकर उसमें 230 से भाग देकर औसतांक निकाला गया है। वे उत्तरदाता जिनमें 0.0से 1.0 औसतांक आया तो महत्वपूर्ण नही, जिनमे 1.01 से 1.49 औसतांक आया उसे कम महत्वपूर्ण तथा जिन्हे 1.5 से ऊपर अंक प्राप्त हुए है उन्हें अत्याधिक महत्वपूर्ण माना गया है।

औसतांक के अनुसार माता, पिता, पितामही एवं पितामहा को अत्याधिक महत्वपूर्ण तथा बड़े भाई को कम महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाता है। जबकि चाचा को उतना महत्वपूर्ण स्थान प्रदान नही किया जाता है। साराशंतः यह कहा जा सकता है कि इस आधुनिक काल में भी ग्रामीण समुदाय में माता, पिता, पितामही व पितामहा को अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.15 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-15 ifjokj d jDr lEcU/k;k dk egRoi.kZ LFkku inku dju d ifr mRrjnkrkvk dk nf'Vdk.k

ifjokj d jDr lEcU/kh ykx	vR;kf/kd egRoi.kZ	de egRoi.kZ	egRoi.kZ ugh	;kx	lEi.kZ ikIrkd	vkl rkd
पितामहा	145	62	23	230	352	1.53
पितामही	147	63	20	230	357	1.55
पिता	149	67	14	230	363	1.58
माता	160	58	12	230	378	1.64
बड़ा भाई	72	140	18	230	284	1.23
चाचा	50	135	45	230	235	1.02

4-16 % lLdkjk dh lgHkkfxrk vkj lEcU/kk dh ikjLifjdrk

भारतीय परिवारों में संस्कारों की एकता ही विभिन्न प्रकार के धार्मिक और सामाजिक संस्कार परिवार एवं निकट रक्त सम्बन्धियों को एकता के सूत्र में आबद्ध करते हैं। जन्म, मृत्यु, विवाह, धार्मिक और सामाजिक उत्सव न केवल निकट रक्त सम्बन्धियों को एक साथ और स्थान पर नैतिक रूप से उपस्थित करते हैं बल्कि इनके द्वारा सम्बन्धियों को पारस्परिकता की एक नवीन अभिव्यक्ति होती है और रक्त सम्बन्धियों का यह समूह एक नवीन सत्ता और अस्तित्व को प्राप्त करता है। वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार में संस्कारों की सहभागिता का अध्ययन करते हुए यह पूंछा गया कि उनके निकट रक्त सम्बन्धी और परिवार के सदस्य विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संस्कारों में किस प्रकार से भाग लेते है। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से यह विदित होता है कि जन्म दिवस के अवसर पर 40.9 प्रतिशत सदैव, 54.8

प्रतिशत कभी–कभी उत्तरदाता भाग लेते है। मुण्डन के अवसर पर 45.7 प्रतिशत सदैव, 39.1 प्रतिशत कभी कभी उत्तरदाता भाग लेते है। 15.2 प्रतिशत उत्तरदाता कभी भाग नही लेते है। विवाह के अवसर पर 76.0 प्रतिशत सदैव, 13.1 प्रतिशत कभी–कभी भाग लेते है। मृत्यु के अवसर पर 61.8. प्रतिशत सदैव, 29.5 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी भाग लेते हैं। धार्मिक पूजा के अवसर पर 23.9 प्रतिशत सदैव, 56.9 प्रतिशत कभी–कभी उत्तरदाता भाग लेते हैं। प्रमुख त्यौहारों के अवसर पर 10.9 प्रतिशत सदैव, 37.8 प्रतिशत कभी–कभी व 51.3 प्रतिशत कभी नही भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त जन्म, मृत्यु संस्कार भी ऐसे अवसर है। जब निकट रक्त सम्बन्धी आवश्यक रूप से सम्मिलित होते है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.63 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-16 lLdkjk e lgHkkfxrk

lLdkj vkj mRlo	*lno*	*dHkh&dHkh*	*dHkh ugh*	*;kx*
जन्म	94 40.9	126 54.8	10 4.3	230 100.0
मुण्डन	105 45.7	90 39.1	35 15.2	230 100.0
विवाह	175 76.0	30 13.1	25 10.9	230 100.0
मृत्यु	142 61.8	68 29.5	20 8.7	230 100.0
धार्मिक पूजा	55 23.9	131 56.9	44 19.2	230 100.0
प्रमुख त्यौहार	25 10.9	87 37.8	118 51.3	230 100.0

[k.M n & ikfjokfjd thou vkj ey;kadu vfHkofRr

पारिवारिक संगठन की व्यक्ति से पृथक कोई सत्ता नही है, बल्कि यह अत्याधिक मात्रा में व्यक्ति की मूल्यात्मक अभिवृत्ति, दृष्टिकोण, विचार और रूचियों को भी प्रदर्शित करती है। दूसरी ओर पारिवारिक संगठन व्यक्ति के व्यक्तित्व, अभिरूचि और क्रियाकलापों को भी महत्वपूर्ण ढ़ंग से निर्धारित और प्रभावित करते हैं। अतः पारिवारिक संगठन और व्यक्ति की मूल्यात्मक अभिरूचि में गहरा सम्बन्ध है। प्रस्तुतखण्ड में व्यक्ति को केन्द्र बिन्दु मानकर यह ज्ञांत करने का प्रयत्न किया जा रहा है कि उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत अभिरूचि और

मनोवृत्ति कि दिशा पारिवारिक संगठन के प्रति क्या है ? संयुक्त और एकाकी परिवार की कुछ आधाार भूत विशेषताओं के प्रति उनके विचारों का स्वरूप क्या है ? यह तथ्य स्मरणीय है कि वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित 88 उत्तरदाता संयुक्त परिवार तथा 142 उत्तरदाता एकाकी परिवार के सदस्य है। इन दो भिन्न प्रकार के स्वरूपों से सम्बन्धित उत्तरदाता का ध्यान संयुक्त परिवार की पांच विशेषताओं और एकाकी परिवार की तीन विशेषताओं की ओर आकर्षित किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह अवगत करता है कि अभिवृत्यात्मक स्तर पर उत्तरदाता पारिवारिक संरचना के किस प्रतिमान को अधिक उपयोगी मानते हैं और आयु, शिक्षा, जाति और पारिवारिक पृष्ठभूमि सम्बन्धी विभेद किस मात्रा में मूल्यात्मक अभिवृत्ति से सम्बन्धित है।

4-17 % l;qDr ifjokj vkj lnL;k dh lqj{kk rFkk vkJ;

संयुक्त परिवार की एक महत्वपूर्ण विशेषता सदस्यों को सामाजिक आर्थिक और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा प्रदान करना है। वृद्ध–बालक स्त्री और शारीरिक रूप से अर्जीण सदस्यों के भरण–पोषण की व्यवस्था संयुक्त परिवार में सुविधापूर्वक होती है। संयुक्त परिवार की सम्मिलित आय, सम्पत्ति की संयुक्तता सदस्यों में सहयोग की भावना, रोग, मृत्यु, दुर्घटना और आर्थिक क्षति के समय संयुक्त परिवार के सदस्यों के भरण–पोषण की व्यवस्था करता है। संयुक्त परिवार का सम्मिलित सहचारी जीवन दुःख परिस्थितियों और आर्थिक विपदाओं से व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक सुरक्षा प्रदान करने का कार्य करता है। जिन संयुक्त परिवारों में सदस्यों के सम्बन्धों की पारस्परिकता की मात्रा अत्याधिक घनिष्ठ होती है उन परिवारों में पारस्परिक उत्तरदायित्वों की भावना अत्याधिक उच्च होती है। उन परिवारों में व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में अपने को उजड़ा हुआ नही बल्कि पारिवारिक सहयोग के कारण इन विपरीत परिस्थितियों के साथ अभियोजन करने में सफल होता है। सयुंक्त परिवार की इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि क्या वे इस विचार से सहमत है। कि संयुक्त परिवार, सदस्यों की सुरक्षा और आश्रय प्रदान करता है। प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 43.5 प्रतिशत उत्तरदाता इस विचार से सहमत हैं। 41.3 प्रतिशत उत्तरदाता इस विचार से सहमत नही हैं और 15.2 प्रतिशत उत्तरदाता इस बारे में कोई भी मत व्यक्त नही किये हैं। अतः संयुक्त परिवार की सामाजिक सुरक्षा की उपयोगिता के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण विभाजित प्रतीत होता है। यद्यपि तुलनात्मक रूप से अधिक मात्रा में उत्तरदाताओं ने संयुक्त परिवार की सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी उपयोगिता में सहमति व्यक्त की है। तथापि यह प्रतिशत अत्याधिक महत्वपूर्ण नही है क्योकि लगभग इसी मात्रा में उत्तरदाताओं ने इस कथन का समर्थन नही भी किया है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.17 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-17 l;qDr ifjokj }kjk lnL;ksa dh lqj{kk rFkk vkJ;

dFku	vkofRr	ifr'kr
सहमत	100	43.5
असहमत	95	41.3
कह नही सकते	35	15.2
योग	230	100.0

4-17-1 % lkekftd ifjoR;u ,oa l;qDr ifjokj }kjk lnL;ksa dh lqj{kk rFkk vkJe

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाता संयुक्त परिवार को सुरक्षा और आश्रय प्रदान करने की एक उत्तम व्यवस्था मानते हैं, पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को सारिणी 4.17.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सह सम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 36.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति, 48.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति व्यक्त की है। मध्यम आयु समूह के उत्तरदाता संयुक्त परिवार को सामाजिक सुरक्षा और आश्रय प्रदान करने के विचार से 51.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति, 28.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति व्यक्त की। वृद्ध आयु समूह के 50.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति, 36.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति व्यक्त की है इस प्रकार युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं में संयुक्त परिवार की सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी उपयोगिता से असहमत की मात्रा तुलनात्मक रूप से अधिक पायी गयी है जबकि इस उपयोगिता के सहभागिता सबसे अधिक मात्रा में मध्यम आयु समूह के उत्तरदाताओं ने व्यक्त की है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 51.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 36.6 प्रतिशत असहमत हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 46.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 41.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति व्यक्त की है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा के वर्ग में 30.5 उत्तरदाताओं ने सहमति व 47.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति व्यक्त की है। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 48.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व 33.4 प्रतिशत

उत्तरदाताओं ने असहमति व्यक्त की है। केवल 18.5 प्रतिशत उत्तरदाता अपना मत व्यक्त नही कर पाये हैं।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदातओं की जातिगत पृष्ठभूमि के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्च जाति के 52.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व 30.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति व्यक्त की है। पिछड़ीजाति के 50.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व 40.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति व्यक्त की है। अनुसूचितजाति के 34.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व 46.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति व्यक्त की है। उच्चजाति के उत्तरदाता जितनी अधिक मात्रा में संयुक्त परिवार की सामाजिक सुरक्षा से सम्बन्धित उपयोगिता से सहमत है उस मात्रा में पिछड़ी व अनुसूचितजाति के उत्तरदाता सहमत नही हैं। अनुसूचितजाति के उत्तरदाता जो कि एकाकी परिवार से अपेक्षाकृत अधिक संख्या में सम्बद्ध है। उन्होने संयुक्त परिवार की सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी उपयोगिता का तुलनात्मक रूप से कम मात्रा में अनुमोदन किया है।

ifjokj dk LOk:i

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसबन्ध यह स्पष्ट करता है कि संयुक्त परिवार से सम्बद्ध परिवार के 57.9 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत तथा 31.8 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है। एकाकी परिवार के 34.5 प्रतिशत सहमत तथा 47.2 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है। उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक परिवर्त्यों में आयु, शिक्षा, जाति व परिवार का स्वरूप पर संयुक्त परिवार और सदस्यों की सुरक्षा तथा आश्रय का प्रभाव प्रदर्शित होता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.17.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

4-18 % l;qDr ifjokj vkj Hkkoukred ,d:irk

संयुक्त परिवार की एक महत्वपूर्ण विशेषता सदस्यों के मध्य रूचियों, हितों और विचारों की सभ्यता है। संयुक्त परिवार के सदस्यों का व्यक्तित्व परिवार के व्यक्तित्व का एक अंग होता है। संयुक्त परिवार के सदस्य होने में सहयोग, सौहार्द तथा पारस्परिक उत्तरदायित्व की भावना अधिक होती है। सम्बन्धों की निकटता और विचारों की सभ्यता के कारण संयुक्त परिवार एक भावनात्मक इकाई होती है। परम्परागत संयुक्त परिवार की इन विशेषताओ को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि क्या वे इस कथन का अनुमोदन करते हैं कि संयुक्त परिवार सदस्यों को भावनात्मक रूप से एकरूपता प्रदान करते हैं। प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 44.3 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार और भावनात्मक एकरूपता के विचार से सहमत है, 46.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं, 9.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस बारे में कोई विचार नही व्यक्त किया है।

lkfj.kh 4-17-1 lkekftd ifjoR;l ,o l;Dr ifjokj vkj lnL;ks dh lqj{kk rFkk vkJ;

Lkkekftd ifjoR;l	Lkger	vlger	dg ugh ldrs	;ksx
vk;q				
20–35	45 36.6	60 48.8	18 14.6	123 100.0
36–50	27 51.9	15 28.8	10 19.3	52 100.0
51 से ऊपर	28 50.9	20 36.4	7 12.7	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	21 51.2	15 36.6	5 12.2	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	48 46.6	43 41.7	12 11.7	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	18 30.5	28 47.5	13 22.0	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	13 48.1	9 33.4	5 18.5	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	22 52.4	13 30.9	7 6.4	42 100.0
पिछड़ीजाति	41 50.0	33 40.2	8 9.8	82 100.0
अनुसूचितजाति	37 34.9	49 46.2	20 18.9	106 100.0
ifjokj dk Lo:i				
संयुक्त परिवार	51 57.9	28 31.8	9 10.3	88 100.0
एकाकी परिवार	49 34.5	67 47.2	26 18.3	142 100.0
योग	100 43.5	95 41.3	35 15.2	230 100.0

अतः यह कहा जा सकता है कि संयुक्त परिवार की भावनात्मक उपयोगिता का समर्थन होते हुए भी अधिकांश उत्तरदाता इस कथन से सहमत नही है। सम्भवतः ये उत्तरदाता संयुक्त परिवाार में बढ़ते हुए तनाव, युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति व स्वतन्त्र रहने की नवीन जिज्ञासा स्त्रियों की कलह, सदस्यों के बढ़ते स्वार्थों के टकराव आदि के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सजग रहे हैं और इस कारण यह नही मानते कि संयुक्त परिवार विरोधी व्यक्तित्व रूचियों और स्वार्थों वाले सदस्यों के मध्य भावानात्मक एकता प्रदान कर सकता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.18 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-18 l;Dr ifjokj vkj HkkoukRed ,d:irk

dFku	*vkof'Rr*	*ifr'kr*
सहमत	102	44.3
असहमत	107	46.5
कह नही सकते	21	9.2
योग	230	100.0

4-18-1%lkekftd ifjoR;Z ,oa l;Dr ifjokj vkj HkkoukRed ,d:irk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के संयुक्त परिवार की भावनात्मक एकरूपता पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए सम्बन्धित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 4.18.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 38.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत 52.8 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है। मध्यम आयु समूह के 48.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 42.3 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है। वृद्ध आयु समूह के 54.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 36.4 प्रतिशत उत्तराता असहमत है। अतः स्पष्ट है कि संयुक्त परिवार की भावनात्मक उपयोगिता का जिनता अधिक अनुमोदन वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाताओं ने किया है। उतना युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं ने नही किया है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सह सम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के उत्तरदाताओं में से 51.2 प्रतिशत उत्तरदात सहमत, 41.5

प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 43.7 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 54.4 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के उत्तरदाताओं में से 44.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत 47.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है, स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग में 37.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 22.3 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है। इस प्रकार अशिक्षित उत्तरदाताओं ने जितनी अधिक संख्या में संयुक्त परिवार की भावनात्मक उपयोगिता के पक्ष में मत व्यक्त किया है उतना शिक्षित उत्तरदाताओं ने नही किया।

Tkkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्च जाति के 47.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 42.9 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है पिछड़ीजाति के 39.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 57.3 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है। अनुसूचितजाति के 47.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 39.6 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं।

ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह का स्पष्ट करता है कि संयुक्त परिवार के 54.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत 40.9 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं जबकि एकाकी परिवार के 38.1 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 50.0 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.18.1 में किया गया है।

4-19 % l;Dr ifjokj vkj ckydk dk ikyu ik"k.k

परिवार बालक के सामाजीकरण और पालन पोषण का महत्वपूर्ण अभिकरण है। सभी समाजों में समूहों की संस्कृति का हस्तान्तरण परिवार के द्वारा ही नवीन पीढ़ी को होता है। परिवार में न केवल बालक की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है बल्कि इसके द्वारा बालक में नियम और अनुशासनबद्धता का विकास, भूमिका प्रशिक्षण और व्यक्तित्व का विकास होता है। परिवार का बालक के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण योगदान होने के कारण परिवार के सगठन की प्रकृति में अन्तर और पारिवारिक वातावरण की विभिन्नता बालक के सामाजीकरण और व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। विस्तृत प्रकार के परिवार में चूंकि बालक की देख–रेख और आवश्यकता की पूर्ति की सम्भावानाएं अधिक रहती हैं अतः बालक में निर्भरता की भावना विकसित होती है जबकि सीमित आकार के परिवारों में बालकों के आत्मनिर्भरता और स्वतन्त्र रूप से निर्णय लेने की क्षमता इत्यादि गुणो का विकास होता है।

lkfj.kh 4-18-1 lkekftd ifjoR;l ,o l;Dr ifjokj vkj HkkoukRed ,d:irk

Lkkekftd ifjoR;l	lger	vlger	dg ugh ldr	;kx
vk;q				
20—35	47 38.3	65 52.8	11 8.9	123 100.0
36—50	25 48.0	22 42.3	5 9.7	52 100.0
50 से ऊपर	30 54.6	20 36.4	5 9.0	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	21 51.2	17 41.5	3 7.3	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	45 43.7	56 54.4	2 1.9	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	26 44.0	28 47.5	5 8.5	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	10 37.0	6 22.3	11 40.7	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	20 47.6	18 42.9	4 9.5	42 100.0
पिछड़ीजाति	32 39.0	47 57.3	3 3.7	82 100.0
अनुसूचितजाति	50 47.2	42 39.6	14 13.2	106 100.0
ifjokj dk Lo:i				
संयुक्त परिवार	48 54.6	36 40.9	4 4.5	88 100.0
एकाकी परिवार	54 38.1	71 50.0	17 11.9	142 100.0
योग	102 44.3	107 46.5	21 9.2	230 100.0

परम्परागत भारतीय संयुक्त परिवार बालक के सामाजीकरण और व्यक्तित्व निर्माण के क्षेत्र में अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। चूंकि संयुक्त परिवार वृहद भारतीय संस्कृति का लघु प्रतिबिम्ब रहा है तथा संयुक्त परिवार के जीवन शैली, मूल्य व्यवहार के तरीकों और भूमिका सम्बन्धों के द्वारा बालकों के व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया महत्वपूर्ण ढ़ंग से प्रभावित होती रही है। ऐसे परिवारों में सदस्यों की अधिकता, वृद्ध सदस्यों की प्रभावशीलता और धार्मिक संस्कारों की प्रमुखता आदि के कारण बालक के व्यवहार को नियन्त्रित करके उसे एक निश्चित दिशा प्रदान करते रहे है। आधुनिक काल में परिवर्तन के नवीन सामाजिक कारकों ने संयुक्त परिवार की इस परम्परागत भूमिकाओं को शिथिल करने में योगदान दिया है तथा संयुक्त परिवार बालक के सामाजीकरण की एक महत्वपूर्ण अभिकरण के रूप में निरन्तर प्रभावहीन होता जा रहा है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि वे इस कथन से सहमत हैं कि संयुक्त परिवार बालकों के पालन पोषण की सर्वोच्च व्यवस्था है।

प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि 45.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत 40.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, 13.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के बारे में कुछ भी नही कहा है अतः स्पष्ट है कि संयुक्त परिवार की सामाजीकरण की भूमिका के पक्ष में लगभग समान मात्रा में उत्तरदाता पाये गये है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.19 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-19 l;qDr ifjokj vkSj ckydk dk ikyu iks"k.k

dFku	*vko`fRr*	*izfr'kr*
सहमत	105	45.6
असहमत	93	40.5
कह नही सकते	32	13.9
योग	230	100.0

4-19-1 % Lkkekftd ifjoR;Z ,oa l;qDr ifjokj vkSj ckydk dk ikyu iks"k.k

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं और संयुक्त परिवार द्वारा बालक के पालन पोषण करने की उत्तम व्यवस्था है इस पर उनके सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 4.19.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 47.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 43.1 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, केवल 9.7 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही किए हैं। मध्यम आयु वर्ग के 42.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 36.6 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं, 21.1 प्रतिशत

उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है, वृद्ध आयु समूह के 45.5 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 38.2 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं। केवल 16.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 46.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 36.6 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, केवल 17.1 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही किए हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 51.4प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 38.8 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है तथा 9.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 40.7 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 44.1 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है केवल 15.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई मत व्यक्त नही किए हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 33.4 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 44.4 प्रतिशत उत्तदाता असहमत है। केवल 22.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई मत व्यक्त नही किया है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 52.4 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत 35.7 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है। पिछडी जाति के 47.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत व 45.1 प्रतिशत असहमत हैं अनुसूचितजाति के 41.5 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत तथा 38.7 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है।

ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि संयुक्त परिवार के 53.4 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 37.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 9.1 प्रतिशत उत्तरदाता कह नही सकते उत्तर दिये है। एकाकी परिवार के 40.8 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 42.3 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 16.9 प्रतिशत उत्तरदाता ने इस कथन पर अपना मत व्यक्त नही किया है।

उपर्युक्त तथ्यों के अनुसार यह कहा जा सकता है कि कथन संयुक्त परिवार बालको के पालन–पोषण की उत्तम व्यवस्था करता है, पर सामाजिक परिवर्त्यों (आयु, शिक्षा, जाति व परिवार के स्वरूप) का प्रभाव देखने को मिलता है कि युवा आयु समूह, एकाकी परिवार के उत्तरदाता तथा आधुनिक मनोवृत्तियों से परिपूर्ण उत्तरदाता भी कुछ प्रतिशत इस कथन को स्वीकारते है। कि संयुक्त परिवार संन्तानों के पालन–पोषण की उत्तम व्यवस्था शतप्रतिशत करता है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.19.1 में किया गया है।

lkfj.kh 4-19-1 lkekftd ifjoR;l ,o l;Dr ifjokj }kjk ckydk dk ikyu ik"k.k

Lkkekftd ifjoR;l	lger	vlger	dg ugh ldr	;kx
vk;				
20—35	58 47.2	53 43.1	12 9.7	123 100.0
36—50	22 42.3	19 36.6	11 21.1	52 100.0
51 से ऊपर	25 45.3	21 38.2	9 16.3	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	19 46.3	15 36.6	7 17.1	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	53 51.4	40 38.8	10 9.8	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	24 40.7	26 44.1	9 15.2	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	9 33.4	12 44.4	6 22.2	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	22 52.4	15 35.7	5 11.9	42 100.0
पिछड़ी जाति	39 47.6	37 45.1	6 7.3	82 100.0
अनुसूचितजाति	44 41.5	41 38.7	21 19.8	106 100.0
ifjokj dk Lo:i				
संयुक्त परिवार	47 53.4	33 37.5	8 9.1	88 100.0
एकाकी परिवार	58 40.8	60 42.3	24 16.9	142 100.0
योग	105 45.6	93 40.5	32 13.9	230 100.0

4-20 l;Dr ifjokj vkj lenk; e lEeku

परम्परागत समुदायों में सामाजिक परिस्थितिकीय प्रतिष्ठा और शक्ति निर्धारण के जो आधार रहे है। उनमें से निकट नातेदारी सम्बन्ध पर आधारित समूह का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इस दृष्टिकोण से संयुक्त परिवार व्यक्ति और समूह को अपने संयुक्त जीवन शैली के आधार पर समुदाय में विशेष सम्मान और स्थान प्रदान करता है। संयुक्त परिवार में सदस्यों की अधिकता, सम्पत्ति और आय का सम्मिलित स्वरूप, सदस्यों की भावनात्मक एकरूपता, आपसी सहयोग इत्यादि कारक समुदाय में उसे एक विशेष सम्मान जनक स्थिति प्रदान करते है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि क्या वे इस कथन से सहमत हैं कि संयुक्त परिवार व्यक्ति को समुदाय में विशेष सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान करता है।

प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि संयुक्त परिवार व्यक्ति को समुदाय में विशेष सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान करता है। इस विचार से 53.9 प्रतिशत सहमत, 35.2 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत 10.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपना मत व्यक्त नही किया। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.20 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-20 % l;Dr ifjokj vkj lenk; e lEeku

dFku	vkofRr	ifr'kr
सहमत	124	53.9
असहमत	81	35.2
कह नही सकते	25	10.9
योग	230	100.0

4-20-1 % Lkkekftd ifjoR; ,o l;Dr ifjokj vkj lenk; e lEeku

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाता और संयुक्त परिवार द्वारा समुदाय में सम्मान पर उनके सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए सम्बन्धित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 4.20. 1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह में 52.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 38.2 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 9.8 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही किये है। मध्यम आयु समूह के 46.1 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 38.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत व 15.4 प्रतिशत

उत्तरदाताओं ने कोई मत व्यक्त नही किया है। वृद्ध आयु समूह के 65.5 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 25.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत केवल 9.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कथन से सम्बन्धित कोई मत व्यक्त नही किया है। अतः स्पष्ट है कि वृद्ध आयु समूह के सदस्य जीवन शैली के उच्चीकृत में अपेक्षाकृत अधिक समर्थक है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 65.9 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 21.9 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 61.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 30.1 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 42.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 44.1 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है, स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 33.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 55.6 प्रतिशत उत्तदाता असहमत हैं। अतः स्पष्ट है कि अशिक्षित व निम्न शिक्षा प्राप्त वर्ग के उत्तरदाता संयुक्त परिवार द्वारा प्रदत्त की जाने वाली प्रतिष्ठा से अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित हैं।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की जातिगत स्थिति के आधार पर प्राप्त तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि संयुक्त परिवार द्वारा सामुदायिक प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होता है इस विचार से उच्चजाति के 59.5 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 30.9 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 9.6 प्रतिशत उत्तरदाता कथन से सम्बन्धित कुछ भी नही बात सके। पिछड़ीजाति के 62.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 29.3 प्रतिशत असहमत केवल 8.5 कथन से सम्बन्धित कुछ भी नही बता सके। अनुसूचितजाति के 45.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 41.5 प्रतिशत असहमत केवल 13.2 प्रतिशत उत्तरदाता कथन से सम्बन्धित अपना मत व्यक्त नही कर सके।

ifjokj dk Lo:Ik

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अध्ययन में सम्मिलित संयुक्त परिवार के 61.4 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 28.4 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत केवल 10.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने संयुक्त परिवार द्वारा सामुदायिक प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होता है इस विचार के बारे में कोई मत व्यक्त नही किया है। एकाकी परिवार में 49.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 39.4 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 11.3 प्रतिशत उत्तरदाता इस विचार के बारे में कोई मत व्यक्त नही किये है। अतः स्पष्ट है कि जो उत्तरदाता संयुक्त परिवार से सम्बद्ध है। वे इसके द्वारा प्रदत्त प्रतिष्ठा व सम्मान के अपेक्षाकृत अधिक अनुमोदन है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.20.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-20-1 % lkekftd ifjoR;l vkj l;Dr ifjokj vkj lenk; e lEeku

Lkkekftd ifjoR;l	lger	vlger	dg ugh ldr	;kx
vk;				
20–35	64 52.0	47 38.2	12 9.8	123 100.0
36–50	24 46.1	20 38.5	8 15.4	52 100.0
51 से ऊपर	36 65.5	14 25.5	5 9.0	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	27 65.9	9 21.9	5 12.2	41 100.0
प्राइमरी/जूनियर	63 61.2	31 30.1	9 8.7	103 100.0
हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट	25 42.3	26 44.1	8 13.6	59 100.0
स्नातक/स्नातकोत्तर	9 33.3	15 55.6	3 11.1	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	25 59.5	13 30.9	4 9.6	42 100.0
पिछड़ी जाति	51 62.2	24 29.3	7 8.5	82 100.0
अनुसूचितजाति	48 45.3	44 41.5	14 13.2	106 100.0
ifjokj dk Lo:i				
संयुक्त परिवार	54 61.4	25 28.4	9 10.2	88 100.0
एकाकी परिवार	70 49.3	56 39.4	16 11.3	142 100.0
योग	124 53.9	81 35.2	25 10.9	230 100.0

4-21 % l ;Dr ifjokj vkj df"k dk;k e mi;kfxrk

विश्व के सभी परम्परागत कृषक समाजों में एक सामान्य विशेषता कृषि कार्य का नातेदारी समूह या विस्तृत परिवार से निकट रूप से सम्बन्धित होना है। कृषि कार्य की प्रकृति ऐसी थी जो न केवल उनके व्यक्तियों के भरण पोषण का प्रबन्ध कराती थी बल्कि इसके सम्पादन के लिए भी उनके व्यक्तियों के सहयोग की आवश्यकता होती थी। अतः विस्तृत परिवार कृषि कार्यो के सम्पादन की एक महत्वपूर्ण आर्थिक इकाई थे। आधुनिक काल में कृषि कार्य के तरीकों में, सामाजिक सरंचना में सामुदायिक एकरूपता की भावना में परम्परागत, मनोवृत्तियों, जीवन शैली व सभी मान्यताओं व मूल्यों पर परिवर्तन की प्रक्रिया का नगरीकरण, मशीनीकरण, औद्योगिकीकरण व आधुनिकीकरण ने ग्रामीण समुदाय के सदस्यों की जीवन शैली व परम्परागत मनोवृत्तियों में अत्याधिक परिवर्तन उत्पन्न किया है। कृषि कार्यों में पूर्णतः मशीनो का प्रयोग रासायनिक उर्वरकों, उन्नत बीजों का प्रयोग व अन्य नवीन तरीकों ने कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन औजारों व कृषि यन्त्रों ने अधिक व्यक्तियों की बाध्यता को कम कर दिया है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि क्या वे अनुभव करते है कि वर्तमान समय में संयुक्त परिवार कृषि के कार्यों के सम्पादन के लिए किस हद तक एक उपयोगी व्यवस्था है।

वर्तमान अध्ययन में प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 42.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 50.9 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है केवल 6.9 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन के बारे में कुछ निर्णय नही ले सके है। अतः स्पष्ट है कि सम्पूर्ण उत्तरदाताओं की तुलना में कुछ हद तक उत्तरदाताओं ने कृषि व्यवसाय के लिए संयुक्त परिवार को एक उपयोगी व्यवस्था माना है। परन्तु अधिकांश उत्तरदाताओं ने संयुक्त परिवार को कृषि व्यवसाय के क्षेत्र में होने वाले आधुनिक परिवर्तनों विशेषकर कृषि की उन्नति प्रविधि, कृषि का यन्त्रीकरण, भूमिस्वामित्व के अधिकारों में परिवर्तन, कृषक मजदूरो की सुलभता, व्यक्तिवादी जीवन मूल्यों और पारिवारिक जीवन की नवीन जीवन शैली हो जाने के कारण कृषि का सम्पादन कम व्यक्तियों के सहयोग द्वारा भी सम्भव हो गया है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.21 में किया गया है।

lkfj.kh 4-21 l ;Dr ifjokj vkj df"k dk;k e mi;kfxrk

dFku	vkofRr	ifr'kr
सहमत	97	42.2
असहमत	117	50.9
कह नही सकते	16	6.9
योग	230	100.0

4-21-1 % Lkkekftd ifjoR;l ,o l;Dr ifjokj dh df"kxr mi;kfxrk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाता और संयुक्त परिवार की कृषिगत उपयोगिता पर उनके सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए सम्बन्धित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 4.21.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 40.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 54.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 4.9 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन के बारे में कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। मध्यम आयु समूह के 44.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 48.1 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 7.7 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। वृद्ध आयु समूह के 43.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 45.5प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 10.9 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं की संयुक्त परिवार कृषि कार्यों के उपयोगिता से सम्बन्धित है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 43.9 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 48.8 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 7.3 प्रतिशत उत्तरदाता कथन से सम्बन्धित कोई उत्तर नही दे सके हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 42.7 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 53.4 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 3.9 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही कर सके। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 33.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 51.9 प्रतिशत असहमत है केवल 14.8 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन के बारे में कोई निर्णय नही ले सके हैं।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की जातिगत स्थिति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्च जाति के 38.1 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 47.6 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं, केवल 14.3 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन विचार के बारे में कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। पिछड़ीजाति में 42.7 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 50.0 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 7.3 प्रतिशत उत्तरदाता अपना मत व्यक्त नही किये है। अनुसूचितजाति में 43.4 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 52.8 प्रतिशत असहमत हैं केवल 3.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में किसी भी मत का उल्लेख नही किया है।

ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि संयुक्त परिवार के 68.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 23.9 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 7.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के बारे में कोई मत व्यक्त नही किया है। एकाकी परिवार में 26.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 67.6 प्रतिशत असहमत हैं, 6.4 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन के बारे में कोई भी मत व्यक्त नही किया है। अतः तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं का संयुक्त परिवार की कृषिगत उपयोगिता पर आयु, शिक्षा और जाति का ऋणात्मक प्रभाव प्रतीत होता है केवल परिवार के स्वरूप का संयुक्त परिवार की कृशिगत उपयोगिता पर धनात्मक प्रभाव प्रतीत होता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.21.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

4-22 % ,dkdh ifjokj vkj 0;fDrxr LorU=rk

भारतीय ग्रामीण समुदायों में संयुक्त परिवार की जीवन शैली संमिष्टवादी जीवन मूल्यों पर आधारित है जबकि एकाकी परिवार की जीवन शैली व्यक्तिनिष्ठ मूल्यों पर एवं एकाकी परिवार आधुनिक जटिल समाजों में बढ़ती हुई व्यक्तिवादिता और स्वतन्त्र जीवन शैली का प्रतिनिधित्व करता है। यह जीवन शैली जाति और नातेदारी सम्बन्धों की तुलना में व्यक्तिगत हित और स्वार्थ का सर्वोपरि स्थान प्रदान करती है। अतः उत्तरदाताओ से यह पूछा गया की वे इस कथन से सहमत है कि एकाकी परिवार व्यक्ति को स्वतन्त्र और आत्मनिर्भरता प्रदान करता है।

वर्तमान अध्ययन में प्राप्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि कथन एकाकी परिवार व्यक्तिवादी स्वतन्त्रता के पक्ष में सम्मिलित उत्तरदाताओं में से 48.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत तथा 41.3 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार और व्यक्तिवादी स्वतन्त्रता के बारे में सहमत नही है। केवल 10.4 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही कर सके है। अतःस्पष्ट है कि एकाकी परिवार में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता रहती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.22 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-21-1 lkekftd ifjoR;l ,o l;Dr ifjokj dh df"kxr mi;kfxrk

lkekftd ifjoR;l	Lkger	vlger	dg ugh ldr	;kx
vk;				
20–35	50 40.6	67 54.5	6 4.9	123 100.0
36–50	23 44.2	25 48.1	4 7.7	52 100.0
51 से ऊपर	24 43.6	25 45.5	6 10.9	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	18 43.9	20 48.8	3 7.3	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	44 42.7	55 53.4	4 3.9	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	26 44.1	28 47.5	5 8.4	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	9 33.3	14 51.9	4 14.8	27 100.0
Tkkfr				
उच्च जाति	16 38.1	20 47.6	6 14.3	42 100.0
पिछड़ीजाति	35 42.7	41 50.0	6 7.3	82 100.0
अनुसूचितजाति	46 43.4	56 52.8	4 3.8	106 100.0
ifjokj dk Lo:i				
संयुक्त परिवार	60 68.2	21 23.9	7 7.9	88 100.0
एकाकी परिवार	37 26.0	96 67.6	9 6.4	142 100.0
योग	97 42.2	117 50.9	16 6.9	230 100.0

lkfj.kh 4-22 % ,dkdh ifjokj vkj 0;fDrxr LorU=rk

dFku	vkofRr	ifr'kr
सहमत	111	48.3
असहमत	95	41.3
कह नही सकता	24	10.4
योग	230	100.0

4-22-1 % Lkkekftd ifjoR;l ,o ,dkdh ifjokj e 0;fDrxr LorU=rk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के एकाकी परिवार की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर उनके सामाजिक परिवर्त्यों के प्रभाव को देखने के लिए आगे तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 4.22.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु वर्ग के 53.7 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 38.2 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है तथा 8.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई मत नही व्यक्त किया है। मध्यम आयु वर्ग 44.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 32.7 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, केवल 23.1 प्रतिशत उत्तरदाता ने कोई मत व्यक्त नही किए हैं। वृद्ध आयु वर्ग के 40.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 56.4 प्रतिशत उत्तदाता असहमत है तथा 3.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कथन से सन्दर्भित कोई मत व्यक्त नही किया है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट कि अशिक्षित वर्ग के 43.9 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 39.1 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है, 17.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के बारे में किसी भी मत का उल्लेख नही किया है। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 46.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 44.7 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है।, 8.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 50.9 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 42.4 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं केवल 6.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में किसी भी मत को व्यक्त नही किया है। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 55.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 29.6 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, 14.8 प्रतिशत उत्तरदाताओ ने इस कथन के सम्बन्ध में किसी भी मत को व्यक्त नही किया है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के उत्तरदाताओं में से 50.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 35.7 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, केवल 14.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है। पिछड़ीजाति के उत्तरदाताओं में से 47.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 43.9 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, केवल 8.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है। अनुसूचितजाति के उत्तरदाताओं में से 48.1 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 41.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, 10.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है।

ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि एकाकी परिवार व्यक्तिवादी स्वतन्त्रता प्रदान करता है इस कथन के बारे में संयुक्त परिवार के 45.5 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 42.0 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, 12.5 प्रतिशत उत्तरदाता ने कथन से सदर्भित कोई उत्तर नही दिया। एकाकी परिवार में से 50.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 40.8 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, 9.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के बारे में कोई मत व्यक्त नही किया है। उपरोक्त तथ्यों के विश्लेषण के पश्चात स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं के एकाकी परिवार और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर आयु, शिक्षा जाति व परिवार के स्वरूप पर धनात्मक प्रभाव है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.22.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

4-23 % ,dkdh ifjokj vkj l?k"k dh U;urk

एकाकी परिवारों में सदस्यों की सीमित संख्या और पारिवारिक उत्तरदायित्वों की न्यूनतम तथा परिवार में विरोधी हितों और स्वार्थों की कमी के कारण पारिवारिक संघर्ष और तनाव संयुक्त परिवार की तुलना में कम पाया जाता है। अतः उत्तरदाताओं का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करते हुए उनसे पूंछा गया की क्या एकाकी परिवार सदस्यों की पारस्परिक संघर्ष और तनाव को कम करता है। प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 58.3 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन से सहमत है। कि एकाकी परिवार सदस्यों के पारस्परिक संघर्ष व तनाव को कम करता है। 25.7 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन से सहमत नही है और 16.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है। इस प्रकार से अधिकांश उत्तरदाता पारस्परिक कलह और तनाव कम करने में एकाकी परिवार के महत्वपूर्ण योगदान के समर्थक दिखलायी पड़ते हैं। उपरोक्त तथ्यों को सारिणी 4.23 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-22-1 lkekftd ifjoR;l ,o ,dkdh ifjokj e 0;fDrxr LorU=rk

lkekftd ifjoR;l	Lkger	vlger	dg ugh ldr	;kx
vk;				
20–35	66 53.7	47 38.2	10 8.1	123 100.0
36–50	23 44.2	17 32.7	12 23.1	52 100.0
51 से ऊपर	22 40.0	31 56.4	2 3.6	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	18 43.9	16 39.1	7 17.0	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	48 46.6	46 44.7	9 8.7	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	30 50.9	25 42.4	4 6.7	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	15 55.6	8 29.6	4 14.8	27 100.0
Tkkfr				
उच्च जाति	21 50.0	15 35.7	6 14.3	42 100.0
पिछड़ी जाति	39 47.6	36 43.9	7 8.5	82 100.0
अनुसूचितजाति	51 48.1	44 41.5	11 10.4	106 100.0
ifjokj dk Lo:i				
संयुक्त परिवार	40 45.5	37 42.0	11 12.5	88 100.0
एकाकी परिवार	71 50.0	58 40.8	13 9.2	142 100.0
योग	111 48.3	95 41.3	24 10.4	230 100.0

lkfj.kh 4-23 ,dkdh ifjokj vkSj l?k"kZ dh U;wurk

dFku	*vkofRr*	*ifr'kr*
सहमत	134	58.3
असहमत	59	25.7
कह नही सकते	37	16.0
योग	230	100.0

4-23-1 % Lkkekftd ifjoR;Z vkSj ,dkdh ifjokj esa l?k"kZ dh U;wurk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाता और एकाकी परिवार में संघर्ष की न्यूनता पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए सम्बन्धित तथ्यों को सारिणी 4.23.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 67.5 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 23.6 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, 8.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई मत व्यक्त नही किया है। मध्यम आयु समूह के 46.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 28.8 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत केवल 23.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में किसी भी मत को व्यक्त नही किया है। वृद्ध आयु समूह के 49.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 25.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत 25.5 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सन्दर्भ में कोई मत व्यक्त नही किए हैं। अतःस्पष्ट है कि एकाकी परिवार में संघर्ष न्यूनतम होता है इस उपयोगिता के समर्थक युवा आयु समूह के सदस्य अधिक है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 56.1 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 24.4 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत 19.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है। एकाकी परिवार में संघर्ष की न्यूनता के सम्बन्ध में प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 58.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 24.3 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, 17.4 प्रतिशत उत्तरदाता ने इस कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 57.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 30.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने एकाकी परिवार में संघर्ष की न्यूनता कथन पर असहमतता व्यक्त की है केवल 11.9 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के

सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किए हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 62.9 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत 22.3 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत केवल 14.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सन्दर्भ में कोई मत व्यक्त नही किया है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सह सम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि एकाकी परिवार में संघर्ष की न्यूनता के सम्बन्ध में उच्चजाति वर्ग के 57.1 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 23.8 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, 19.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है। पिछड़ी जाति वर्ग के 63. 4 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 25.6 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, 11.0 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन के सम्बन्ध में किसी भी मत को व्यक्त नही किया है। अनुसूचितजाति वर्ग के 54.7 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 26.4 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, केवल 18.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में किसी भी मत को व्यक्त नही किया है।

ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि एकाकी परिवार में संघर्ष की न्यूनतता के सम्बन्ध में संयुक्त परिवार के 48.9 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 31.8 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 19.3 प्रतिशत उत्तरदाताओ ने इस कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है। एकाकी परिवार में संघर्ष की न्यूनता के सम्बन्ध में एकाकी परिवार में 64.1 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 21.8 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत 14.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में किसी भी मत को व्यक्त नही किया गया है।

उपर्युक्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्त्यों, आयु, शिक्षा जाति व परिवार के स्वरूप पर एकाकी परिवार में संघर्ष की न्यूनता का विशेष प्रभाव दिखाई पड़ता है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.23.1 में किया गया है।

4-24 % ,dkdh ifjokj vkj vkfFkd mRrjnkf;Ro dh lhferrk

विस्तृत परिवार की तुलना में सीमित परिवार की एक महत्वपूर्ण विशेषता परिवार में आर्थिक उत्तरदायित्व की सीमित प्रकृति है। विस्तृत परिवार में दो या तीन जीवकोपार्जन करने वाले सदस्यों के ऊपर सम्पूर्ण परिवार के भरण–पोषण का उत्तरदायित्व होता है। इस प्रकार के परिवार में निर्भर सदस्यों की संख्या साधारणतः अधिक होती है। इसके विपरीत जीवकोपार्जन करने वाले सदस्यों पर आधारित एकाकी या सीमित परिवार में अनावश्यक, आर्थिक उत्तरदायित्व की मात्रा कम होती है और व्यक्ति परिवार की सीमित आवश्यकताओ को अपने आय के स्रोत द्वारा पूरा करने में समर्थ होता है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए उत्तरदाताओं से पूछा गया कि एकाकी परिवार आर्थिक उत्तरदायित्व को सीमित करता है।

lkfj.kh 4-23-1 % lkekftd ifjoR;Z ,oa ,dkdh ifjokj esa l?k"kZ dh U;wurk

lkekftd ifjoR;Z	Lkger	vlger	dg ugh ldrs	;ksx
vk;q				
20–35	83 67.5	29 23.6	11 8.9	123 100.0
36–50	24 46.2	16 28.8	12 23.1	52 100.0
51 से ऊपर	27 49.0	14 25.5	14 25.5	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	23 56.1	10 24.4	8 19.5	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	60 58.3	25 24.3	18 17.4	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	34 57.6	18 30.5	7 11.9	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	17 62.9	6 22.3	4 14.8	27 100.0
Tkkfr				
उच्च जाति	24 57.1	10 23.8	8 19.0	42 100.0
पिछड़ीजाति	52 63.4	21 25.6	9 11.0	82 100.0
अनुसूचितजाति	58 54.7	28 26.4	20 18.9	106 100.0
ifjokj dk Lo:i				
संयुक्त परिवार	43 48.9	28 31.8	17 19.3	88 100.0
एकाकी परिवार	91 64.1	31 21.8	20 14.1	142 100.0
योग	134 58.3	59 25.7	37 16.0	230 100.0

अध्ययन में सम्मिलित दो तिहाई उत्तरदाताओं के द्वारा एकाकी परिवार की आर्थिक उपयोगिता का समर्थन या प्रदर्शित करता है कि 73.9 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत है। 20.0 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है, 6.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में

कोई मत व्यक्त नही किया है। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि यह उत्तरदाता संयुक्त परिवार की तुलना में एकाकी परिवार को आर्थिक दृष्टिकोण से एक उत्तम व्यवस्था मानते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 4.24 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 4-24 ,dkdh ifjokj vkj vkfFkd mRrjnkf;Ro dh lhferrk

dFku	*vkofRr*	*ifr'kr*
सहमत	170	73.9
असहमत	46	20.0
कह नही सकते	14	6.1
योग	230	100.0

4-24-1 % Lkkekftd ifjoR;Z ,oa ,dkdh ifjokj vkj vkfFkd mRrjnkf;Roka dh lhferrk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाता और एकाकी परिवार की सीमित आर्थिक उत्तरदायित्व पर उनके सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए तथ्यों को विश्लेषित कर आगे सारिणी 4.24.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि एकाकी परिवार में आर्थिक उत्तरदायित्व सीमित होती है। इस कथन से युवा आयु समूह के 75.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 18.7 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है, केवल 5.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में किसी मत को व्यक्त नही किया है। मध्यम आयु समूह के 67.3 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 28.8 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 3.8 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही कर सके है। वृद्ध आयु समूह के 76.4 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत 14.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत केवल 9.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई मत व्यक्त नही किया है। अतः स्पष्ट है कि युवा आयु समूह के 75.6 प्रतिशत मध्यम आयु समूह के 67.3 प्रतिशत वृद्ध आयु समूह के 76.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन का अनुमोदन किया है कि एकाकी परिवार आर्थिक उत्तरदायित्वों को सीमित करने में उपयोगी है। इस प्रकार वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाता एकाकी परिवार आर्थिक उपयोगिता के अपेक्षाकृत अधिक अनुमोदन है। इस कथन से असहमतता प्रकट करने वालो की मात्रा मध्यम आयु समूह (28.8प्रतिशत) में तुलनात्मक रूप से अधिक पायी गयी है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 78.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 17.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं में असहमतता व्यक्त किये हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 71.9 प्रतिशत

उत्तरदाता सहमत, 24.2 प्रशित उत्तरदाता असहमत केवल 3.9 प्रतिशत कथन से सम्बन्धित कोई मत व्यक्त नही कर सके है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 79.7 प्रतिशत उत्तरदाता एंकाकी परिवार में आर्थिक उत्तरदायित्व की मात्रा सीमित होती है, इस कथन से सहमत है तथा 16.9 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है। 3.4 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किये है। स्नातक/स्नातकोत्तर वर्ग में 62.9 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 14.8 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत, 22.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किये हैं।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता हे कि एकाकी परिवार में आर्थिक उत्तरदायित्व की मात्रा सीमित होती है। इस कथन के बारे में उच्चजाति के 78.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 16.7 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत केवल 4.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन के सम्बन्ध में कोई भी मत व्यक्त नही किया है। पिछड़ीजाति के 75.6 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 22.0 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 2.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कथन से सम्बन्धित कोई मत व्यक्त नही किया है। अनुसूचितजाति के 70.8 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 19.8 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार में आर्थिक उत्तरदायित्व की मात्रा सीमित होती है। कथन से असहमत है केवल 9.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है। अतः स्पष्ट है कि उच्चजाति के 78.6 प्रतिशत, पिछड़ीजाति के 75.6 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचितजाति के 70.8 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन से सहमत है कि एकाकी परिवार आर्थिक उत्तरदायित्व की मात्रा को सीमित करता है इस कथन के विपक्ष में पिछड़ीजाति के उत्तरदाताओं (22.0 प्रतिशत) ने अपेक्षाकृत उच्चजाति व अनुसूचितजाति के अधिक असहमतता प्रकट की है।

ifjokj dk Lo:i

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि एकाकी परिवार में आर्थिक उत्तरदायित्व की मात्रा सीमित होती है। इस कथन के सम्बन्ध में संयुक्त परिवार के 75.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत, 21.6 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है केवल 3.4 प्रतिशत उत्तरदाता कथन एकाकी परिवार में आर्थिक उत्तरदायित्व की मात्रा सीमित होती है के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। कथन के सम्बन्ध में एकाकी परिवार के 73.2 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत 19.1 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत तथा 7.7 प्रतिशत उत्तरदाता ने इस कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्त्यों (आयु, शिक्षा, जाति व परिवार का स्वरूप) का कथन एकाकी परिवार में आर्थिक उत्तरदायित्व

की मात्रा कम होती है, का विशेष प्रभाव दिखायी देता है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 4.24.1 में किया गया है।

lkfj.kh 4-24-1 lkekftd ifjoR;l ,oa ,dkdh ifjokj vkj vkfFkd mRrjnkf;Roa dh lhferrk

Lkkekftd ifjR;l	lger	vlger	dg ugh ldrs	;kx
vk;q				
20–35	93 75.6	23 18.7	7 5.7	123 100.0
36–50	35 67.3	15 28.8	2 3.8	52 100.0
51 से ऊपर	42 76.4	8 14.5	5 9.1	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	32 78.0	7 17.1	2 4.9	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	74 71.9	25 24.2	4 3.9	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	47 79.7	10 16.9	2 3.4	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	17 62.9	4 14.8	6 22.3	27 100.0
Tkfr				
उच्चजाति	33 78.6	7 16.7	2 4.7	42 100.0
पिछड़ी जाति	62 75.6	18 22.0	2 2.4	82 100.0
अनुसूचितजाति	75 70.8	21 19.8	10 9.4	106 100.0
ifjokj dk Lo:i				
सयुक्त परिवार	66 75.0	19 21.6	3 3.4	88 100.0
एकाकी परिवार	104 73.2	27 19.1	11 7.7	142 100.0
योग	170 73.9	46 20.0	14 6.1	230 100.0

Lkkjk'k

वर्तमान अध्ययन में ग्रामीण पारिवारिक संरचना और उसके परिवर्तित प्रतिमानो को चार खण्डों में विभक्त करके अध्ययन किया गया है। प्रत्येक खण्ड में ग्रामीण परिवार की संरचनात्मक विशेषताओं और नवीन प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है कि वर्तमान अध्ययन के 38.2 प्रतिशत परिवार संयुक्त प्रकृति के है। 61.8 प्रतिशत परिवार एकाकी प्रकृति के हैं। एकाकी परिवार की अधिकता अनुसूचितजाति 69.8 प्रतिशत, पिछड़ीजाति 62.2 प्रतिशत उच्चजाति, 40.4 प्रतिशत की तुलना में अधिक पायी गयी है। अतः वर्तमान अध्ययन के उत्तरदाताओं की जातिगत और आयगत स्थिति इनके परिवार के स्वरूप से निकट रूप से सम्बन्धित हैं। उच्चजाति के परिवार अपनी परम्परागत संयुक्त परिवार की प्रकृति को बनाये हुए है। यद्यपि उच्चजाति के शिक्षित और युवा पीढ़ी के उत्तरदाताओं की प्रकृति सीमित मात्रा में एकाकी परिवार की ओर झुकती प्रतीत होती है तथापि उनकी आर्थिक स्थिति असन्तोषजनक होना उनकी परम्परागत संयुक्त परिवार की विशेषताओं को अभी भी बनाये हुए है। अनुसूचितजाति के परिवारों में एकाकी परिवार की अधिकता परिवर्तन की ओर उनके किसी विशेष झुकाव का परिणाम नही बल्कि उनकी आर्थिक दशा की निम्नता और व्यक्तिगत जीवन दर्शन तथा पारिवारिक कलह का परिणाम है। एकाकी प्रकृति के अनुरूप ही परिवार में पीढ़ियों की संख्या से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि अधिकांश एकाकी परिवार दो पीढ़ी के परिवार है जबकि संयुक्त परिवार में तीन या चार पीढ़ी के सदस्य पाये जाते हैं। सम्बन्धों के आधार पर स्पष्ट होता है कि संयुक्त परिवार में अधिकांश 24.3 प्रतिशत लीनियल संयुक्त प्रकृति के है।

द्वितीय खण्ड में उत्तरदाताओं के परिवार में निर्णय की प्रक्रिया और सत्ता के स्वरूप से सम्बन्धित तथ्यों का अध्ययन किया गया है। विश्लेषण से यह विदित होता है कि शिक्षा के सम्बन्ध में निर्णय का कार्य अधिकांश परिवारों में सन्तान के पिता (47.9 प्रतिशत) द्वारा किया जाता है। विवाह सम्बन्धी निर्णय भी अधिकांश परिवारों में या तो सन्तान के पिता 40.4 प्रतिशत या सन्तान की माता 30.4 प्रतिशत के द्वारा ही किया जाता है। युवा पीढ़ी के व्यवसायिक भविष्य का निर्धारण 60.8 प्रतिशत स्वयं व्यक्ति के द्वारा निर्णय लिया जाता है तथा 21.8 प्रतिशत परिवार में सन्तान के पिता द्वारा और 10.0 प्रतिशत सन्तान की माता सन्तान के व्यवसायिक भविष्य का निर्णय करती हैं। युवा पीढ़ी और शिक्षित परिवार में निर्णय की प्रक्रिया में जिस मात्रा में सन्तान के पिता व माता के महत्व में वृद्धि हुई है। वह स्पष्ट करता है कि इन परिवारों में वयोवृद्ध सदस्य की महत्ता निरन्तर कम होती जा रही है।

तृतीय खण्ड में परिवारांत्मकता और सम्बन्धों की पारस्परिकता की विवेचना की गयी है। अध्ययन से यह विदित होता है कि 30.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सदस्यों के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध है। और 33.9 प्रतिशत उत्तरदाता अपने परिवार में सदस्यों के मध्य सम्बन्ध

सामान्य मानते है। तनावपूर्ण सम्बन्ध के 25.2 प्रतिशत उत्तरदाता यह स्वीकार करते है कि परिवार की कलह का प्रमुख कारण युवा सदस्यों की स्वतन्त्रत मनोवृत्ति 20.9 प्रतिशत है व्यय की अधिकता 19.1 प्रतिशत, स्त्रियों के झगड़े 15.2 प्रतिशत और सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद 10.0 प्रतिशत पाया गया है।

निकट नातेदार सम्बन्धों में जो स्थान माता को प्रदान किया जाता है। वह अन्य किसी को नही इसके पश्चात, पिता, पितामही, पितामह, बड़ा भाई, चाचा को स्थान प्रदान किया गया है। उत्तरदाताओं के परिवार में संस्कारों में सहभागिता की दृष्टि से एकता पायी जाती है। जन्म, मुण्डन, विवाह, मृत्यू के अवसर पर उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्य सदैव सम्मिलित होते हैं। धार्मिक उत्सव तथा प्रमुख त्यौहारो के अवसर पर सहभागिता की मात्रा तुलनात्मक रूप से कम पायी गयी है।

चतुर्थ खण्ड में पारिवारिक जीवन का अध्ययन अभिवृत्यात्मक स्तर पर किया गया है। संयुक्त परिवार की उपयोगिता से सम्बन्ध में तथ्यों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि 43.5 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन से सहमत हैं कि संयुक्त परिवार सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करता है। जबकि 41.3 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन से सहमत नही हैं इसी प्रकार संयुक्त परिवार के द्वारा भावनात्मक एकरूपता प्रदान करने का अनुमोदन 44.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने किया है जबकि 46.5 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन से असहमत हैं, संयुक्त परिवार बालकों के पालन–पोषण की भूमिका का अनुमोदन 45.6 प्रतिशत उत्तरदाता ने किया। जबकि 40.5 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन से असहमत। संयुक्त परिवार और समुदाय में सम्मान का अनुमोदन 53.9 प्रतिशत सहमत जबकि 35.2 प्रतिशत असहमत हैं। कृषि कार्यों में संयुक्त परिवार की उपयोगी भूमिका का अनुमोदन 42.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने किया है जबकि 50.9 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन से असहमत हैं। अतः स्पष्ट है कि भावनात्मक एकता और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के सम्बन्ध में संयुक्त परिवार की भूमिका के प्रति उत्तरदाताओं का एक महत्वपूर्ण अंश अलोचनात्मक दृष्टिकोण रखता है। यह मनोवृत्ति युवा पीढ़ी और शिक्षित उत्तरदाताओं में अपेक्षाकृत अधिक पायी गयी है।

एकाकी परिवार से सम्बन्धित विचारों का अध्ययन करते हुए यह विदित होता है कि 48.3 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि एकाकी परिवार स्वतन्त्रता को प्रोत्साहित करता है जबकि 41.3 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन से सहमत नही हैं, 58.3 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि एकाकी परिवार में कलह और संघर्ष की न्यूनता होती है जबकि 25.7 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन से सहमत नही हैं, 73.9 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि एकाकी परिवार अर्थिक उत्तरदायित्व को सीमित करता है, 20.0 प्रतिशत उत्तरदाता ने इस कथन से असहमतता व्यक्त की है। इस प्रकार एकाकी परिवार के आर्थिक उत्तरदायित्व की सीमितता,

कलह की न्यूनतम और व्यक्तिवादिता की वृद्धि का अनुमोदन उत्तरदाताओं के एक महत्वपूर्ण भाग ने किया है।

अतःस्पष्ट है कि ग्रामीण समुदाय के उत्तरदाताओं के परिवार की संरचनात्मक और प्राकार्यात्मक विशेषताओं में परिवर्तन हो रहे हैं परन्तु यह परिवर्तन जाति और वर्ग की सीमाओं के निकट रूप से सम्बन्धित हैं। उच्चजाति, उच्च आर्थिक वर्ग, शिक्षित व युवा पीढ़ी के उत्तरदाताओं के पारिवारों में यह परिवर्तन आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के कारण अधिक हुआ है। संयुक्त परिवार की परम्परागत विशेषताएं निश्चित रूप से शिथिल पड़ती जा रही हैं। व्यक्तियों में हम की भावना का उन्मूलन और व्यक्तिवादी विचार धारा (मैं) का आत्मसातीकरण होता जा रहा है। इन तथ्यों के फलस्वरूप सीमित आकार के परिवारों (एकाकी परिवार) का उदय होता जा रहा है।